अखबार

पात्र

चपरासी
व्यक्ति
पाँच लोग

[मंच पर पाँच लोग एक दफ्तर में अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे हैं। सब अपने-अपने चेहरों के सामने पूरा अखबार खोले बैठे हैं। एक ओर मोढ़े पर चपरासी बैठा बीड़ी पी रहा है। एक व्यक्ति आता है और देखता रह जाता है।]

चपरासी : क्या है ? नमस्ते जी।

व्यक्ति : बड़ा सन्नाटा है।

चपरासी : इस बार बहुत दिनों बाद दर्शन दिए।

व्यक्ति : मुझे पहचानते हो ?

चपरासी : इसमें भी देर लगती है।

[लोग अखबार के पीछे से आँखें चुराकर आगन्तुक को देख लेते हैं।]

व्यक्ति : भाई, ग्यारह बज गए, अभी दफ्तर खुला नहीं क्या ? मैं किसी गलत जगह तो नहीं आ गया ?

चपरासी : दफ्तर भी यही है और आप बिलकुल सही जगह आए हैं।

व्यक्ति : पर दफ्तर के लोग कहाँ हैं ?

चपरासी : किससे मिलना है ? काम क्या है, यह तो बताइए—

व्यक्ति : भाई, मिस्टर शर्मा से मिलना था।

चपरासी : शर्मा-वर्मा से काम नहीं चलेगा। पूरा नाम बताइए। जी हाँ।

व्यक्ति : अच्छा, अब देखा। लोग आए हैं। एक बात बताओ भाई, ये लोग कब तक इस तरह अखबार पढ़ते हैं ? मेरा मतलब···

चपरासी : हम आपका मतलब समझ गए।

व्यक्ति : समझ गए ? क्या ?

चपरासी : कोई फाइल अटक गई है न ?

व्यक्ति : बिलकुल ! कैसे समझ गए भाई ?

चपरासी : क्योंकि आप मिस्टर शर्मा को पूछते आए हैं।

व्यक्ति : अगर मैं मिस्टर वर्मा को पूछता हुआ आता तो ?

चपरासी : देखिए जी, बेमतलब की बातें करके हमारा वक्त मत बरबाद कीजिए। फाइल का काम है ?

व्यक्ति : जी।

चपरासी : आपकी फाइल ?

व्यक्ति : जी।

चपरासी : फाइल में से कोई कागज़ निकालना है ? या डालना है ? या उलट-फेर करना है ?

व्यक्ति : ये तीनों अलग-अलग काम हैं क्या ?

चपरासी : आप खुद इतने समझदार हैं ।

व्यक्ति : पर मिस्टर शर्मा कहाँ हैं ?

चपरासी : फिर वही बात ! समझिए मिस्टर शर्मा यहीं हैं ।

व्यक्ति : कहाँ ?

चपरासी : साहब लोगों से बात कीजिए ।

व्यक्ति : भई, ये लोग अखबार पढ़ रहे हैं ।

चपरासी : किसी से बात तो कीजिए, जवाब मिलेगा ।

[व्यक्ति उन लोगों के बीच में घूमता हुआ उनके मुँह देखना चाहता है । परेशान होकर पहले के पास खड़ा हो जाता है ।]

व्यक्ति : नमस्ते ! श्रीमानजी ! मेरा एक छोटा-सा काम है । ज़रा अखबार हटाइए । मेरी एक फाइल यहाँ पड़ी है ।

पहला : (अखबार पढ़ता हुआ) 'चीनी पाँच रुपये किलो । सरकारी सूत्रों के अनुसार उन्नीस सौ सत्तर में खुली चीनी का भाव डेढ़ रुपये किलो था ।'

व्यक्ति : मेरी फाइल का नम्बर है सी० बाई० एक सौ चौदह—सत्तर-इकहत्तर ।

पहला : 'दिमाग और शरीर के पूरे विकास के लिए नया ज़बरदस्त आहार—प्रोटीन से भरपूर !' आपके बच्चे का केस क्या है ?

व्यक्ति : केस यह है कि मेरा मकान सरकारी दफ्तर के लिए किराये पर लिया गया । किराया वगैरह सब तै हो गया । दफ्तर खुले आज दो साल हो गए, पर अब तक एक पैसा भी किराया नहीं मिला ।

पहला : 'शादी करें या न करें । हमारे शहरों के बहुत-से कुँवारे जब शादी करने को सोचते हैं तो उनके सामने सबसे पहले यह समस्या खड़ी होती है कि ठिकाने का मकान मिलेगा कहाँ ?'

व्यक्ति : मेरी बात सुनिए ! हुआ यह कि—

पहला : 'महँगाई बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है ।'

व्यक्ति : हुआ यह कि पहले रेंट-कंट्रोलर के यहाँ मेरी फाइल गई ।

पहला : 'बैंक डकैती के और रुपये बरामद होने की आशा ।'

व्यक्ति : जी, मेरी बात तो सुनिए ।

पहला : 'मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणी की शुरुआत ।'

[व्यक्ति चुप हो गया है । पास का दूसरा आदमी उसी तरह अखबार पढ़ता हुआ अचानक बोल पड़ता है ।]

दूसरा : ऐसी भी क्या बात ! हमसे सलाह-मशवरा कीजिए । योजना क्या है ? हमसे सहायता लीजिए ।

व्यक्ति : ऐसा है साहब कि···

दूसरा : 'बैंक जनता के लिए है। और हम जनता के सेवक हैं।'

व्यक्ति : रेंट-कंट्रोलर के दफ्तर के पास होकर मेरी फाइल नगर निगम कार्यालय गई।

दूसरा : 'इस बार अच्छी फसल होने की सम्भावना है।'

व्यक्ति : वहाँ से पूरे तीन महीने बाद पी० डब्ल्यू० डी० के दफ्तर गई।

दूसरा : 'औद्योगिक शान्ति आवश्यक।'

व्यक्ति : और तब से मेरी वह फाइल यहाँ पड़ी हुई है। मैं पूछता हूँ, मिस्टर शर्मा कहाँ हैं ?

चपरासी : फिर वही बात ! आपको अपने काम से मतलब है कि···

व्यक्ति : कैसी बात करते हो भाई ! यहाँ तो कोई मेरी बात तक नहीं सुनने वाला है। अखबार घर पर भी पढ़ा जा सकता था।

[उसी क्षण तीसरा बोल उठता है।]

तीसरा : 'घर में अशान्ति के कारण पति घर से लापता।'

व्यक्ति : मिस्टर शर्मा ने ही मुझे यहाँ बुलाया था। वह मिल जाते तो कुछ बात बन जाती।

चपरासी : शर्माजी का पूरा नाम क्या है ?

व्यक्ति : शर्माजी। उन्हें कौन नहीं जानता !

चपरासी : ओ हो, यहाँ तो हजारों शर्मा हैं।

व्यक्ति : भाई, वह मशहूर शर्माजी—बुलन्दशहर वाले, पैंट-कोट पहनते हैं।

चपरासी : कभी-कभी पान खाते हैं !

व्यक्ति : हाँ-हाँ।

चपरासी : खूब भारी बदन के हैं ?

व्यक्ति : हाँ-हाँ।

चपरासी : थोड़ा ऊँचा सुनते हैं ?

व्यक्ति : हाँ, हो सकता है, ऊँचा सुनते हों। कभी सुना नहीं। (रुककर) भाई, क्यों मेरा वक्त बरबाद करते हो ! ये लो अपने चाय-पानी के लिए। बस, मुझे फटाफट शर्माजी से मिला दो।

[उसी समय चौथा बोल पड़ता है।]

चौथा : 'अचानक मौसम साफ हो गया। आशा है, दिन साफ रहेगा। तापमान समान रहेगा।'

व्यक्ति : भला ये लोग क्या कर रहे हैं ! इस दफ्तर में इन लोगों से ऊपर कोई है या नहीं ?

चौथा : हम यह जानना चाहते हैं कि पंचवर्षीय योजना में हमारी हड़तालों और माँगों की मदद में कितना धन रखा गया है।

व्यक्ति : ये लोग अपना चेहरा क्यों ढके हुए हैं ?
चपरासी : नहीं, अखबार पढ़ रहे हैं ।
व्यक्ति : अच्छा, मेरी फाइल तो ढूँढ़कर ले आओ ।

[पाँचवाँ बोल पड़ता है ।]

पाँचवाँ : पूछताछ का समय, छह से बाईस बजे तक ।
व्यक्ति : क्या ?
पाँचवाँ : ओवर टाइम का रोग । सरकारी कार्यालयों में यह रोग इतना व्यापक है कि इसकी माया समझ में नहीं आती ।
व्यक्ति : भाई, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है । मिस्टर शर्मा कहाँ हैं ? उनके बारे में कुछ बताते क्यों नहीं ? उनसे मुझे मिलाते क्यों नहीं ?
चपरासी : साहब से बात कर लीजिए ।

[व्यक्ति पहले के पास जाता है ।]

पहला : पैसे का मूल्य घट गया है ।
दूसरा : 'रुपये का अवमूल्यन ।'
तीसरा : 'कीमतें बढ़ रही हैं ।'
चौथा : पाँच ठीक रहेगा ।
पाँचवाँ : पाँच तो बहुत कम हैं ।
पहला : खैर ! जो मुँह से निकल गया । पाँच !
व्यक्ति : क्या ?
चपरासी : पाँच ।
व्यक्ति : पाँच क्या ?
चपरासी : पाँच हरे-हरे ! हरे कृष्णा, हरे रामा !
व्यक्ति : नहीं-नहीं ! पाँच सौ बहुत ज्यादा हैं ।
चपरासी : फिर जाइए । हवा खाइए ।
व्यक्ति : शर्माजी कहाँ हैं ?
चपरासी : शर्माजी का यहाँ से ट्रांसफर हो गया ।
व्यक्ति : झूठ ! मुझे अभी कल मिले थे । **(विराम)**
व्यक्ति : भाई, पाँच सौ बहुत ज्यादा हैं । तीन साल हो गए ।
पहला : तीस हजार !
व्यक्ति : हाँ-हाँ, अब तक मेरा कुल किराया तीस हजार बनता है ।
दूसरा : फाइल गायब है ।
तीसरा : फाइल ढूँढ़नी पड़ेगी ।
चौथा : सवाल तीस हजार का है ।
पाँचवाँ : ओवर टाइम का भी सवाल है ।

[इस बीच व्यक्ति एक के पास दौड़कर गया है।]

पहला : चपरासी !

चपरासी : जी साहब !

दूसरा : यह कौन बक-बक कर रहा है ?

तीसरा : इसे बाहर निकाल दो !

चौथा : बेईमान, हमें घूस देना चाहता है !

पाँचवाँ : पुलिस को टेलीफोन करो !

पहला : पुलिस नहीं, ऐंटी-करप्शन ! (**विराम**)

व्यक्ति : अच्छा भाई, पाँच नहीं एक !

पहला : दो और साधुओं की हत्या। चंडीगढ़, बाईस सितम्बर। लगभग पाँच माह बाद साधुओं का हत्यारा फिर हरकत में आ गया है।'

व्यक्ति : पाँच बहुत ज्यादा हैं। अच्छा, दो।

दूसरा : 'श्वास। दमा। खाँसी के रोगियो ! नोट कर लो।'

तीसरा : 'ताकत। बिजली इलाज द्वारा प्राप्त करें।'

व्यक्ति : अच्छा, तीन।

चौथा : 'गाल गुलाबी, नैन शराबी। बदला। बदनाम। खलीफा, सिविल लाइन्स लुधियाना।'

व्यक्ति : एक बात सुन लीजिए। चार से ज्यादा मैं हर्गिज नहीं दे सकता। वह भी इस इस शर्त पर कि आप लोग अपने चेहरे दिखाइए।

पाँचवाँ : 'सफेद बाल क्यों ? इन्हें कुदरती काले रंग का कीजिए।'

पहला : 'हजारों व्यक्ति गलत नहीं हो सकते।'

पाँचवाँ : 'सन्तुष्ट होने पर पैसा दीजिए।'

चौथा : 'सामान में गिरावट। मंडियों में शान्ति।'

तीसरा : दाम कम नहीं हो सकते।

दूसरा : पुलिस कंट्रोल रूम का टेलीफोन नम्बर···

पहला : ऐंटी-करप्शन छापा मारेगा।

व्यक्ति : अच्छा, पाँच ही मंजूर। पर मेहरबानी करके अपने चेहरे तो दिखा दीजिए। मतलब, जब सम्बन्ध हो गया तो आपस में मेल-जोल। देखिए जी, अब तो आपस की बात हो गई। एक-दूसरे का चेहरा देखे बिना मेल-मुहब्बत···

[अखबार हटाकर सहसा पहला उठता है। दर्शकों के सामने आकर काम शुरू करता है।]

पहला : यकीन मानिए। फिलहाल और कुछ करने को नहीं है। पर कुदरत का उसूल है। इन्सान कभी बेकार नहीं बैठता, उसे रोशनी दो, वह कुछ लाजवाब करेगा। रोशनी बुझा दो—

बस, कुट-कुट, कुट-कुट करेगा—
खूब कपड़े ओढ़कर दूसरों को नंगा करेगा।
सोचिए ना, जब और कुछ करने को नहीं है
चुपचाप हम दफ्तरों में, कार्यालयों में अगर अखबार पढ़ते हैं—
चाय पीते हैं, चलिए सोते भी हैं—
तो ऐसा कौन-सा अन्याय करते हैं !
कुदरत का उसूल है, इन्सान कभी बेकार नहीं बैठता।
फिलहाल और कुछ करने को नहीं है।

व्यक्ति : चुप क्यों हो गए ? नहीं-नहीं ! मैं नहीं देखना चाहता तुम्हारा चेहरा।

दूसरा : (सहसा दूसरा उठता है) हर सुबह जैसे उठता हूँ
बाहर आँख खोलने से जी घबराता है।
राम-राम कहकर मुँह पर हाथ मलकर
जब हथेलियाँ बाँधकर उसमें अपनी शक्ल देखता हूँ
तो अपने से दहशत होने लगती है।
सच, प्रोफेसर मेवाराम की याद आती है जिनके
पैर छूकर मैंने अपने नम्बर बढ़वाए थे और
अब्दुल मजीद के नम्बर कटवाए थे।
शिवशंकर सिन्हा का चेहरा कौंध जाता है जिनकी
भतीजी की लड़की विमला से शादी की इसी नौकरी के लालच में।
सच, घर में उसी शिवशंकर की याद आती है।
और दफ्तर में अपनी उसी धर्मपत्नी विमला की।
घर में मेरी रक्षा मेरी खामोशी करती है।
और दफ्तर में यही अखबार।

व्यक्ति : झूठ। झूठ है। यह सारा इन्हीं का प्रपंच है ! मैं नहीं देखना चाहता तुम्हारा चेहरा ! जो कुछ भी हुआ है, उसके जिम्मेदार खुद तुम्हीं हो।

तीसरा : (उठता है) जब तक स्कूल-कालेज में था
घर-बाहर से अपना विरोध सिर्फ तोड़-फोड़ और बसें जलाकर
करता था।
और जब शादी की तो शादी के खिलाफ अपना विरोध
बम्बइया सनीमा देखकर करने लगा। और जब नौकरी की···
तो इस व्यवस्था का अनासक्त, निष्काम विरोध अखबार पढ़कर
करता हूँ।
गांधी दर्शन जो पढ़ा था। निष्काम योग।
पर यह अखबार ! बाई गाड ! यकीन मानिए इसका एक लफ्ज
भी नहीं पढ़ा जाता।

घर पहुँचने के लिए अब बसें नहीं मिलतीं,
बीवी अब इन्तज़ार नहीं करती,
दफ्तर में कोई कुछ नहीं कहता,
फिलहाल मैं सारी व्यवस्था का विरोध महज़ अखबार पढ़कर
करता हूँ।

व्यक्ति : (मानो चीखता है) नहीं-नहीं, यह सब बकवास है। झूठ है। सिर्फ लफ्फाज़ी है। अपने-आपको बचाने के लिए। निर्दोष साबित करने के लिए। ज़माने से दया की भीख माँगने के लिए।

चौथा : (उठता है) बी० ए० में था, कालेज यूनियन का प्रेज़िडेंट था। इन्कलाब से नीचे बात नहीं करता। जिस-जिस को चाहा पिटवा दिया, घेराव, प्रदर्शन, बेइज्ज़ती, हड़ताल।
जी हाँ, यूनियन का सालाना बजट तेईस हज़ार था।
बी० ए० में सिर्फ तीन साल फेल हुआ। तभी आया जनरल इलेक्शन।
पूरब के एक वयोवृद्ध नेता ने पूछा : 'रउंआ कै जात का हवै ?'
मैंने कहा : 'मेरी जाति विद्रोही है, पढ़ते नहीं अखबारों में मेरे नाम ?'
नेताजी हँसे (**हँसना**) : 'रउंआ ठीके कहत बानीं।'
बात ई है कि मैं भूमिहार हूँ और ठाकुरों को हराना चाहता हूँ।
मेरी कांस्टिचुएंसी में एक फर्स्ट क्लास दंगा, फर्स्ट क्लास कतल और एक फर्स्ट क्लास हें-हें-हें-हें।'
जी हाँ, पाँच हज़ार मेरे हाथों पै रख दिए।
वह जीत गए। मगर मुझे जेल जाना पड़ा।
जेल से छूटकर जब उनसे मिला साउथ एवेन्यू में, तो वे बोले,
'देखो भाई, बड़ी गरीबी है।
बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं। देखो, चरित्र का खयाल रखो, धैर्यवान बनो।
जो जितना चरित्रवान है वह उतना ही महान है।
तुम्हारी नौकरी मैंने पक्की कर दी है।'
जी हाँ, यकीन कीजिए, तब से घर में गीता पाठ करता हूँ।
और दफ्तर में अखबार।
फिलहाल और कुछ करने को नहीं है···।

व्यक्ति : सरासर झूठ है। बकवास है। ये सब अपने-आपको शहीद साबित करना चाहते हैं, अपनी चरित्रहीनता की कहानियों में नमक-मसाला लगाकर। खबरदार, ये व्यापारी हैं अपने नंगेपन के। ये हमें बेपर्दा कर अपनी बेशर्मी को ढकना चाहते हैं।

पाँचवाँ : कहीं से भी कोई रास्ता जब मुझे नहीं मिला,
तब मुँह पर सफेदी पोतकर मैं यहाँ चला आया।
कभी इस पर अखबार चिपका लेता हूँ और उसी के अन्दर छिपकर शिकार करता हूँ।

कभी इस पर एक पोस्टर चिपका देता हूँ।

[जिस पर लिखा रहता है—'शांत रहो! देश संकट से गुज़र रहा है।']

व्यक्ति : मत सुनो इनकी बेशर्म बातें! मत देखो इनके खौफनाक चेहरे। हर चीज़ इनके लिए महज़ शिकार है। समय जंगल है। ये अग्निखोर गिद्ध हैं जो यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ उड़ते रहे हैं। लो! मुँह छिपा लो इन अखबारों के पीछे! यह क्या किया मैंने? क्यों देखे ये मनहूस चेहरे?

पाँचों : कौन हो तुम?

चपरासी : साहेब, पुलिस को टेलीफोन कर दूँ। यह आदमी खतरनाक लगता है।

व्यक्ति : (**आवेश में बढ़कर चपरासी का गला पकड़ लेता है**) हाँ-हाँ, मैं खतरनाक हूँ, बोल कित्ते पैसे चाहिए तुझे? किसने दी यह आदत? किसने किया यह सारा सत्यानास? तुमने। मैंने। हमने। तुमने।

[चपरासी को जैसे स्टूल पर जड़कर बैठा देता है।]

व्यक्ति : पहले तुम लोग अपने चेहरे छिपा लो। एक-एक हाथ रख लो अपनी आँखों पर। नहीं-नहीं, अब अखबार कतई नहीं। इसी के पीछे गीदड़ बनकर शिकार करते हो। इसी में मुँह छिपाकर सिर्फ वे सारी खबरें पढ़ते हो, जो यह साबित करना चाहती हैं, चारों ओर भ्रष्टाचार है। मनुष्य परिस्थितियों का दास है। वह लाचार है। वह सिर्फ छपी हुई खबरें पढ़ सकता है। वह उनसे लड़ नहीं सकता। उन्हें बदल नहीं सकता। वह खुद अपने समाचार नहीं दे सकता।

पहला : कौन हो तुम?

दूसरा : क्या बकते हो?

तीसरा : तुम्हारा मतलब क्या है?

चौथा : यह मत भूलो। हम पाँच हैं, तुम अकेले हो।

पाँचवाँ : पाँच नहीं, छह हैं हम।

व्यक्ति : हम सात हैं यहाँ। क्या आँखें फूट गई हैं? क्या तुम लोग मनुष्य की संख्या भी नहीं गिन सकते? फाइलों ने तुम्हारा दिमाग इतना चाट लिया है? तुम्हारी बहानेबाजियाँ···लफ्फाज़ियाँ!

पहला : इस तरह बकवास करने वाले कौन हो तुम?

व्यक्ति : कहा ना, आँखों पर हाथ रख लो। जैसे तुम लोगों ने मुँह छिपा रखा था इन झूठे अखबारों में। शायद कुछ शर्म और हया बाकी थी तुम में। पर जिस तरह बेशर्म, बेहया होकर तुम सबने मुँह खोला, मुझे घिन छूट रही है। अब मैं सिर्फ तुम्हारे चेहरे देख सकता हूँ, आँखें नहीं, बन्द करो। मैंने तुम्हें घूस दिया है। नहीं-नहीं, मैंने तुम्हें पाँच में खरीद रखा है।

दूसरा : तुम हमारा मुँह देखना चाहते थे?

तीसरा : यही तुम्हारी शर्त थी।

चौथा : हमने वैसा किया ।

पाँचवाँ : अब हम तुम्हें देखना चाहते हैं ।

व्यक्ति : अब तुम अपनी इच्छाओं के स्वामी कहाँ रहे ? इच्छाओं के सौदागर । व्यवहारों के तिकड़मी, आत्मघाती, विश्वासहीन···नहीं-नहीं । मेरे पास तुम्हें व्यक्त करने को शब्द नहीं हैं । मैं कहता हूँ—बन्द करो अपनी आँखें ।

[सब दायें हाथ से अपनी आँखें ढक लेते हैं ।]

व्यक्ति : सुनो ! मैं तुम्हारा क्लासफेलो हूँ । नहीं-नहीं । आँखें मत खोलो । मैं अपना नाम नहीं बताने जा रहा । ना ही मैंने तुम्हारे नाम पूछे । मुझे पता है, मेरे हमदम, अब तुम व्यक्तिवाचक नहीं, जातिवाचक हो । पर तुम्हारे नाम मुझे कभी नहीं भूले । कालेज के दिनों में तुम्हीं लोग मेरे आदर्श थे । तुम सबके वे चमकते हुए चेहरे, मेरे दोस्तो, अब तक मेरी आँखों में गड़े हैं । हर जगह, हर दफ्तर, हर समय, तब से मैं तुम्हीं लोगों को ढूँढ़ रहा था । मुझे यकीन था, तुम लोग कुछ भी करो, कितना-कितना मुँह छिपाओ, कितने चेहरे बदल डालो, मैं तुम्हें ढूँढ़कर ही साँस लूँगा । कहीं ज़रूर भेंट होगी ।

पहला : (आँख खोलकर) बकवास ! हम हमदम नहीं ।

दूसरा : (हाथ हटाकर) हम तुम्हें नहीं पहचानते । क्लासफेलो, हुँअ ।

तीसरा : (देखते हुए) तुमसे हमारी कोई मुलाकात नहीं । चार सौ बीस करने आए हो !

चौथा : (हाथ की मुट्ठी भींचकर) तुम हमारे दोस्त नहीं ।

पाँचवाँ : (बढ़कर) चपरासी, यह लो इनकी फाइल ! दस्तखत लेकर यह कागज़ दे दो ।

[व्यक्ति बढ़कर फाइल छीन लेता है ।]

व्यक्ति : (सहसा जैसे शून्य में शर्माजी को देख लिया हो) शर्माजी, धन्यवाद । ओ हो, अब तक आप कहाँ थे ? अच्छा हुआ, आप नहीं मिले । नहीं-नहीं, शुक्रिया, काम हो गया । नहीं-नहीं । मुझे अब कहीं नहीं जाना है ।

पहला : इस आदमी का दिमाग तो खराब नहीं हो गया ?

दूसरा : बड़ा अजीब है ।

तीसरा : इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

[पाँचों आपस में गुप्त बातें करने लगते हैं । व्यक्ति फाइल के कागज़ात देखता है ।]

चपरासी : ओ हो, कितना बुरा ज़माना आ गया है !

पहला : बिल्कुल !

दूसरा : जिनके पास धन है, ताकत है, वही लोग हमें उपदेश भी देने आते हैं ।

तीसरा : कितना अन्धेर चारों ओर !

चौथा : ले जाओ अपने रुपये ।

पाँचवाँ : हमें घूसखोर समझ रखा है ?

चपरासी : सचमुच कितना बुरा ज़माना है !

[ठंडा सन्नाटा]

व्यक्ति : सचमुच तुम लोग मुझे नहीं पहचानते ? देखते क्यों नहीं, मैं वही हूँ, जो सबको बेईमान, घूसखोर और खरीद ली जाने वाली चीज समझता है। तुम्हें मुझ पर गुस्सा क्यों नहीं आता ? तुम यह जानना क्यों नहीं चाहते कि एक मैं हूं, जो तुम्हें खरीद लेता हूँ और एक तुम हो, जो बिकते चले जाते हो। जमाना बुरा है। किसने बनाया इसे ? शर्माजी कौन हैं ? क्या हैं ? कहाँ हैं ?

पहला : ऐसा होता चला आया है।

दूसरा : इधर ऐसा ही हुआ है।

तीसरा : तुम्हें भी तो कोई खरीदने वाला होगा !

व्यक्ति : नहीं-हाँ ! हाँ-नहीं ! हाँ-हाँ ! नहीं-नहीं !

चौथा : फिलहाल जब और कुछ करने को नहीं है।

चपरासी : कुदरत का उसूल है, इन्सान कभी बेकार नहीं बैठता।

पहला : चुप रहो !

दूसरा : ऐसा क्यों हुआ ?

तीसरा : हम लोग और कर भी क्या सकते थे ?

चौथा : हमें जिंदा तो रहना ही था।

पाँचवाँ : आखिर हम कब तक···?

पहला : तुम यहाँ से जाते हो कि नहीं ?

व्यक्ति : नहीं।

दूसरा : हम पाँच हैं।

तीसरा : गला घोंटकर यहीं रख देंगे।

व्यक्ति : (हँसता है) कुछ भी नहीं कर सकते। तुम्हारी आँखों पर चेहरे लटक रहे हैं। तुमने उन महापुरुषों को भुला दिया, जिन्होंने हमारे लिए इतनी-इतनी यातनाएँ सहीं। वे कर्म, वे त्याग, वे आशीष, जिन्हें कुचलकर हम यहाँ बढ़ आए हैं, वे हमें कभी चैन से नहीं रहने देंगे—चाहे हम कितनी लफ्फाजी करें। अखबारों में मुँह छिपाएँ—कोई पागल हमें घूर रहा है ! हम वह नहीं, जो करते हैं। हम वह नहीं, जो दीखते हैं। हम वह नहीं, जो कहते हैं। ऐसा क्यों हुआ ? ऐसा किसने किया ? अब कहाँ, कैसे छिपाओगे अपने चेहरे ? ये चेहरे बढ़ते-फूलते चले जा रहे हैं। इन्हें अब तुम किसी भी तरह नहीं छिपा सकते ! नहीं-नहीं।

[वे पाँचों उसी तरह कुर्सियों पर बैठकर अखबार पढ़ने के बहाने अपने मुँह ढक लेते हैं।]

व्यक्ति : (फाइल फाड़ता हुआ) हम सब एक-दूसरे को पहचान रहे हैं। तुम सब मुझे पहचान रहे हो। मैं तुम सबको पहचान रहा हूँ। मैं तब तक तुम सबको घूरता हुआ खड़ा रहूँगा, जब तक यहाँ तुम हो ; जब तक यहाँ मैं हूँ : यहाँ सब कुछ करने को है। यहाँ जो कुछ हुआ है, हमने किया है।

[पर्दा]

नहीं, मैं वही हूँ, जो सबको
ता है। तुम्हें मुझ पर गुस्सा
एक मैं हूँ, जो तुम्हें खरीद
ता बुरा है। किसने बनाया

।

चेहरे लटक रहे हैं।
नी-इतनी यातनाएँ
ड़ आए हैं, वे हमें
। अखबारों में मुँह
हैं। हम वह नहीं,
या किसने किया ?
चले जा रहे हैं।

ने अपने मुँह ढक

तुम सब मुझे
को घूरता हुआ
कुछ करने को

परिचय

पात्र

अनिल

जोशी

अन्य लोग

[रात का समय। मंच पर प्रकाश आते ही पृष्ठभूमि से तमाम आवाज़ें आने लगती हैं। कुछ शब्द स्पष्ट हैं—'पागल है पागल !', 'आवारे !', 'सनकी !', 'दिन-रात आवारा घूमते हैं !', 'सारे मुहल्ले को गन्दा करना चाहते हैं !', 'दिमाग फिर गया है !', 'चले जाओ यहाँ से !', 'तुम लोगों का यहाँ इस तरह रहना हम बर्दाश्त नहीं कर सकते ! यह शरीफों, इज्ज़तदारों का मुहल्ला है !' इसी शोर के भीतर से अनिल का प्रवेश, जैसे उन आवाज़ों ने उसे धक्का देकर मंच पर खदेड़ दिया है।]

अनिल : सुनिए, सुनिए ! क्यों करते हैं ऐसा आप लोग ? मुझ पर आखिर इतना गुस्सा करने से क्या फायदा ! आप लोग मुझे कह रहे हैं, ऐसा क्यों ? मेरे कपड़े गन्दे हैं ! मैं दाढ़ी नहीं बना पाया ! पर आप लोग मुझे इस तरह गालियाँ क्यों बकते हैं ? हमने आपका क्या बिगाड़ा है ? यह सही है, हमें आपका डर नहीं है ! हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है ! हमें आप लोग कतई पसन्द नहीं हैं ! हम झूठ नहीं बोलते ! हाँ-हाँ, आप लोग झूठे हैं ! बुज़दिल हैं ! हाँ-हाँ, हम बीमार हैं, क्योंकि हम आप सबके बीच ज़िन्दा रहना चाहते हैं। आप लोगों को हम अपना परिचय क्यों दें ? कौन हैं आप लोग ? हाँ-हाँ, जोशी मेरा दोस्त है। वह कहाँ का है ? क्या करता है ? कहाँ गया, मैं क्यों पूछूँ उससे ? वह मेरा यार है, काफी है इतना। मैं खुद आप सबको अपना परिचय दूँ ? अपने दोस्त के बारे में बेहूदे प्रश्न पूछूँ ? वह गुजराती है, मैं बंगाली हूँ। आप ब्राह्मण हैं, मैं क्षत्री हूँ, वह शूद्र है—ये कैसी जंगली बातें हैं ! (**विराम**) देखिए, आप लोग चले जाइए। सच, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे नींद नहीं आती। (**अदृश्य जोशी से**) जोशी ! ओ जोशी ! यार, इन लोगों को चुप करा। धक्का देकर यहाँ से भगा दे। बता न, क्या है हमारा परिचय ? हम लोग कहाँ से आए ? यहाँ क्यों हैं ? क्या बात है ? जा, बता आ। जोशी यार, सिगरेट देना। क्या ? (**बोलते-बोलते थककर फर्श पर लेट जाता है**) छोड़ो भी, कहने दो डाक्टरों को ! इस तरह ज़िन्दा रहकर क्या कर लेंगे ! वाह-वाह ! बड़ी उम्दा सिगरेट है ! क्या मिलाते हो इसमें ? क्या ? क्या-आ-आ ?

[सो जाता है। थोड़ी देर बाद फिर वही शोर। वही आवाज़ें। पर इस बार शब्द और तेज़ हैं—'कल के लौंडे अपने माँ-बाप के नाम पर कलंक हैं ! न कोई तहज़ीब, न सभ्यता ! अपनी तरह सारे मुहल्ले के लड़कों को बरबाद करना चाहते हैं। चले जाओ यहाँ से ! यह आवारागर्दी यहाँ नहीं चलेगी ! यह शरीफों का मुहल्ला है, सराय नहीं !' इसी बीच जैसे इस बार जोशी उनसे लड़ता हुआ मंच पर आता है।]

जोशी : भाग जाओ, वरना एक-एक की गर्दन तोड़कर रख दूंगा ! चुप होते हो या नहीं ? हाँ-हाँ, सुन लिया ! अब घर जाओ ! खाना खाकर फिर आना ! तुम लोग बुज़दिल हो, हरामखोर हो ! हाँ-हाँ, हमारा चरित्र अच्छा नहीं है ! अपने चरित्र पर महानता का मक्खन लगाकर ख़ुद चाटो ! हमारा तुम लोग कुछ नहीं बिगाड़ सकते !

[आवाज़ आती है—'बाहर आओ अगर हिम्मत है !']

जोशी : (**दर्शकों से**) लो, आ गया बाहर ! सोचा था—बाहर से थोड़ा भीतर आकर आराम कर लूँ, पर तुम लोग ! अब घूरते क्या हो ? आओ—जो करना हो, कर लो ! कायर ! हमें पागल कहते हो ? काश, हम पूरी तरह पागल हो जाते, ताकि हम तुम्हें बता पाते—तुम लोगों ने मिलकर हमारे साथ क्या किया है ! हमें क्या पढ़ाया है ! हमें क्या दिया है ! हमारे चेहरों में सूराख करके तुम लोगों ने उसमें क्या-क्या भरना चाहा है। इतने वर्षों में तुममें से हर एक ने अलग-अलग अपनी ही चिन्ता की है ! अपने से हर दूसरा तुम्हारा दुश्मन हुआ है ! काश, हम हिसाब दे पाते, तुम सबने दफ़्तरों, कालेजों, सभाओं और घरों में क्या-क्या किया है—पर अफ़सोस, हमारा हिसाब-किताब शुरू से ही कमज़ोर रहा है ! सुनो—अब जाते कहाँ हो ? मैं अपने बहुत बड़े बाप का इकलौता लड़का था। उन्नीस सौ पचास के बाद मेरे पिताजी कैसे एकाएक उतने बड़े आदमी हो गए—सुनो, सुनो बताता हूँ—अब भागते क्यों हो ? सुनते क्यों नहीं ?

[वही शोर उभरता है। इस बार उस पर मिट्टी, कंकड़, पत्थर, कागज़ के हथगोले, केले, टमाटर और सन्तरे के छिलके फेंके जाते हैं।]

जोशी : खबरदार, जो मेरे दोस्त को ज़रा भी चोट लगी ! रुक जाओ, बुज़दिलो···!

अनिल : (**उठकर जोशी को पकड़ता है**) जाने दो ! छोड़ो ! चले गए ! दरअसल उनका ऐसा कोई विचार भी नहीं था। थोड़ा मनोरंजन हो गया। वे विरोध भी कर सकते हैं, शायद यही साबित करने के लिए। (**हँस पड़ता है**) यार, सबको कुछ साबित करते रहना पड़ा।

जोशी : सारा कुछ कितना गन्दा कर दिया ! हमारे पास कुछ झाड़ने को भी तो नहीं है !

अनिल : तो अपनी वह मीनाक्षी है न, यद्यपि एक ख़ूबसूरत लड़की है, फिर भी वह हर वक़्त अपने-आप को साबित नहीं करती रहती ? (**अभिनय**) ऐसे चलती है ! ऐसे बैठती है ! गर्दन देखो उसकी—उसके हाथ देखो, जब वह बातें करती है।

[जोशी अपने ऊपर के कपड़े उतार उसी से झाड़ू देने चलता है।]

अनिल : (**रोकता है**) सुनो ! अपने पिताजी को क्या कहते थे ?

जोशी : डैडी।

अनिल : वह कहाँ रहते हैं ?

जोशी : अहमदाबाद ।
अनिल : मैं पिताजी को बाबा कहता था । वह इस समय धनबाद रहते हैं।
जोशी : तुमने कुछ खाया है ?
अनिल : तुमने ?
जोशी : मैंने पहले तुमसे पूछा है।
अनिल : नहीं ।
जोशी : मैं भी दिन-भर वही कॉफी और सिगरेट पीता रहा हूँ ।
अनिल : तुम पीते हो, मैं खाता हूँ । मैं बंगाली, तुम गुजराती।

[दोनों हँसना शुरू करते हैं।]

जोशी : तू आवारा !
अनिल : तू चरित्रहीन !
जोशी : यार, यह चरित्र क्या चीज़ होती है ?
अनिल : नाटक में जो चरित्र होता है बे ।
जोशी : तुझे कुछ पता नहीं ! चरित्र का अंग्रेजी अनुवाद करो । हाँ, कैरेक्टर !

[दोनों पागलों जैसे हँसते हैं।]

जोशी : तुम हर चीज़ को खाते हो, मैं हर चीज़ को पीता हूँ । तुम बंगाली, मैं गुजराती। बेटा, इसे ही चरित्र कहते हैं। (हँसता है।)
अनिज : शाला, तुम बंगाली को गाली देता है ! हम तोमार माथा भेंग देगा। आमार शोनार बांग्ला !
जोशी : आपणा गुजरात ।
अनिल : मतलब हम दोनों भूखे हैं।
जोशी : कल की वह सूखी पावरोटी कहाँ है ?
अनिल : लगता है, पावरोटी कोई बिल्ली खा गई।
जोशी : वही बिल्ली आई होगी, मीनाक्षी कपूर ! यह बताओ, तुम मरोगे कब ?
अनिल : जब तुम मरोगे। (विराम)
जोशी : तो इस समय, यहाँ खाने को कुछ नहीं है !
अनिल : और हमें बेतरह भूख लगी है ।
जोशी : एक सिगरेट भी नहीं है।
अनिल : एक बूंद पानी भी नहीं ।
जोशी : ऐसी हालत में चेग्वेवारा ने क्या कहा है ?
अनिल : बन्द करो यह बेहूदा मज़ाक !
जोशी : आखिर कुछ तो सोचना ही पड़ेगा। सुनो, इस बारे में माओ के क्या विचार हैं ?
अनिल : बदतमीज़ ! सिर फोड़ दूंगा—ग्रेट माओ के नाम को अगर यहाँ इस तरह घसीटा।

जोशी : अच्छा, एक काम करो। बैठ जाओ। **(दोनों पीठ सटाकर बैठ जाते हैं)** तब तक आज हम यह तै कर लें कि हमारी जात क्या है। हमारा पता और परिचय क्या है, ताकि हम उन्हें साफ-साफ बता सकें।

अनिल : जो हम हैं, वह काफी नहीं है ?

जोशी : मगर हम उन्हें किस भाषा में परिचय देंगे, पहले यह तै कर लें।

अनिल : अंग्रेजों की क्या जाति थी ? वे कहाँ के रहने वाले थे ?

जोशी : कौन अंग्रेज ? जो चले गए या जो यहाँ पैदा हो गए ?

अनिल : यह क्या बदतमीजी है ?

जोशी : तुम सचमुच पागल तो नहीं हो गए ?

अनिल : **(सहसा उठ खड़ा होता है)** ठीक यही सवाल मेरे पिताजी ने पूछा था, जब मैं कालेज की पढ़ाई छोड़कर उन लोगों के संग··· **(जोशी कमरे में दौड़ना शुरू करता है।)**

जोशी : (सहसा) यह देखो !

अनिल : क्या ?

जोशी : खाना। डिनर। केला-सन्तरा-टमाटर। प्रोटीन। आयरन।

[फर्श पर बिखरे केले के छिलके को दोनों निहारने लगते हैं।]

अनिल : वे लोग कितने मेहरबान थे, हमारे लिए इतना अच्छा भोजन ?

जोशी : दरअसल वे लोग यह नहीं चाहते कि हम यहाँ इसी तरह मर जाएँ।

अनिल : हाँ, उन्हें भविष्य की चिन्ता है।

जोशी : अगर हम यहाँ मर गए तो हमारी लाशें यहाँ से कौन ले जाएगा ?

अनिल : अच्छा, पहले हम डिनर ले लें, फिर कॉफी पिएँगे।

जोशी : मैं डिनर टेबल लगाता हूँ।

अनिल : मैं प्लेटें साफ करके सजाता हूँ।

[दोनों अपने-अपने कामों पर लग जाते हैं।]

जोशी : डिनर के साथ संगीत होना चाहिए। **(जैसे संगीत बजने लगता है)** चम्मचें कहाँ हैं ? काँटे-छुरी ?

अनिल : ये हैं मेरे हाथ।

[दोनों पूरे उपचार के साथ डिनर लेते हैं। कॉफी पीते हैं। लम्बी-लम्बी डकारें लेते हैं। बड़ी शालीनता के साथ हँसते हैं।]

जोशी : अच्छा, गुड नाइट।

अनिल : गुड बाई।

[दोनों फर्श पर सोने लगते हैं।]

जोशी : कल मुझे एक इण्टरव्यू देने जाना है।

अनिल : क्या ? तुम नौकरी करोगे ?

[उठ बैठते हैं।]

जोशी : मिल जाए तो बुरा क्या है ! आखिर कब तक ? कुछ तो होना ही चाहिए।
अनिल : फिर कालेज से क्यों भागे थे ?
जोशी : भागे थे।
अनिल : नौकरी कर लेना—यह तुम्हारा फैसला है ?
जोशी : क्या तुम फैसला ले सकते हो ?
अनिल : वह क्या हमारा फैसला था ?
जोशी : फिर वह कौन है, क्या है, जो फैसला लेता है ?
अनिल : हमारे लिए कोई दूसरा आदमी।
जोशी : वह आदमी कहाँ रहता है ?
अनिल : वह आदमी हमारे भीतर है।
जोशी : तुम्हारा बाप।
अनिल : तुम्हारी नौकरी।

[दोनों लड़ पड़ते हैं।]

जोशी : तुम्हारा बाप।
अनिल : तुम्हारी नौकरी।
जोशी : बाप।
अनिल : नौकरी।
जोशी : बदतमीज़ !
अनिल : स्साले !
जोशी : बोल, गाली क्यों दी ?
अनिल : यार, इतने शानदार डिनर के बाद जब शब्दों का संघर्ष चीं बोल जाए, तो और किया क्या जा सकता है ? चेग्वेवारा ने क्या कहा था ?
जोशी : बदतमीज़ !
अनिल : मुझे भी अपने फादर से मिलना है।

[अनिल फर्श पर सो जाता है। जोशी भी लेटने लगता है। प्रकाश बुझता है। जैसे ही प्रकाश लौटता है—एक व्यक्ति मेज़ के पीछे कुर्सी पर बैठा है। घंटी बजाता है। जोशी आता है।]

व्यक्ति : नाम।
जोशी : पी० आर० जोशी।
व्यक्ति : फादर ?

[जोशी चुप]

व्यक्ति : आप कालेज की पढ़ाई छोड़कर उन नक्सलवादियों के साथ लापता हो गए। वहाँ से फिर कहाँ गए ! क्या-क्या किया, वह सब जानने की मुझे कतई कोई दिलचस्पी नहीं ! हाँ, तो फिर आप दो वर्षों बाद जब फिर अपने कालेज लौटे तो···।

जोशी : जंगल की कहानी बड़ी दिलचस्प है। हम बहुत सारे लोग थे। हम मिलकर पहले जंगल के सारे हाथियों का सफाया कर देना चाहते थे। हमने बड़ी तेजी से सफाई का काम शुरू किया। पर एक दिन हमने देखा क्या कि हाथी की पीठ पर जंगल का राजा शेर बैठा हुआ है और शेर के ऊपर छाता ताने बकरी खड़ी है। और बकरी के पीछे मकड़ी जाले बुन रही है। और मकड़ी के जाले में सारा हिन्दुस्तान···।

व्यक्ति : बन्द कीजिए जंगल की कहानी ! यह मत भूलिए, आप इण्टरव्यू देने आए हैं। (**विराम**) आप जब दोबारा कालेज लौटे, तो···? तो ? तो ? इम्तिहान क्यों नहीं दिया ?

जोशी : तो···तो ? तो ?

व्यक्ति : (**फाइल में कागज पढ़ता हुआ**) आपका हाई स्कूल में फर्स्ट क्लास है, दो सब्जेक्ट्स में डिस्टिंक्शन, इंटर में फर्स्ट क्लास। बी० ए० का इम्तिहान क्यों नहीं दिया ?

जोशी : कालेज लौटा, तो हर विद्यार्थी मुझे घूरकर देखता। मेरे टीचर अजीब शक की निगाहों से मुझे देखते। लड़कियाँ मुझसे आँखें बचाकर जाने क्या फुसफुस-फुसफुस करतीं। सब मुझे देखते ही मुझे देखते ही चुप्पी साध लेते। मेरे पीछे एकाएक हँसी के ठहाके फूट पड़ते। मेरे सामने खामोशी का एक कुआँ खुद जाता। (**एकाएक**) जी, कोई और सवाल पूछिए ! यकीन कीजिए, मेरा चरित्र अच्छा है। जी···हाँ, जी···।

व्यक्ति : यह बताइए, जिन्दा रहने के लिए जरूरी क्या है ?

जोशी : आज जिन्दा रहने के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि इन्सान अपने पर गुजरी हुई वे तमाम बातें भूल जाए, जिनके लिए वह जिन्दा रहना चाहता था। देखिए, मैं एक जीती-जागती मिसाल हूँ उसी जिन्दगी की। अपने-आप पर बीती हुई वे सारी बातें मैं भूल जाने की कोशिश में हूँ—क्योंकि अब मैं इस नतीजे पर पहुँच चुका हूँ कि आज़ादी का मतलब है, जिन्दा रहना !

व्यक्ति : 'नो-नो-नो पोलिटिकल टाक्स।' टेल मी, ह्वाट इज सिविलाइजेशन ?

जोशी : मनुष्य जितना अपमान सहता है, उसी से उतनी सभ्यता बनती है। और यह अनवरत अपमानित होते रहना जरूरी है, क्योंकि जिन्दा रहना उसकी मजबूरी है।

व्यक्ति : आप हर मसले को खामखा राजनीतिक तरीके से सोचने लगते हैं। तब से आपका 'मेडिकल चेक-अप' हुआ है ?

जोशी : आपका ?

व्यक्ति : सवाल आपसे पूछा जा रहा है।

जोशी : दरअसल आपके स्वास्थ्य से मेरा स्वास्थ्य जुड़ा है। (**विराम**)

व्यक्ति : आपके फादर ने मुझे आपके बारे में लिखा है। शायद आपको पता नहीं, हम दोनों 'क्लासफेलो' रहे हैं। मैं आपको यह नौकरी देना चाहता हूँ। बेकारी ही सब मुसीबतों की जड़ है। आखिर कोई कब तक बिना किसी नौकरी के शान्ति से रह सकता है ?

जोशी : जी हाँ, मुझे शान्ति अच्छी लगती है। अगर इस नाम की कोई लड़की मिल गई, तो जरूर उससे···।

व्यक्ति : इसके लिए पहले नौकरी में आ जाना जरूरी है। मगर आप नौकरी क्यों चाहते हैं ?

जोशी : शायद हमारे ब्लड में है—नौकरी। व्यवस्था का अंग बन जाना और फिर कुछ दिनों, जब तक सारा खून ठंडा नहीं हो जाता, उसी व्यवस्था का विरोध करना, ठीक जैसे हिन्दुस्तानी फिल्मों में होता है।

व्यक्ति : आप बड़े समझदार हैं।

जोशी : यही तो पीछा नहीं छोड़ती।

व्यक्ति : लीजिए, इस 'बांड' को पढ़कर दस्तखत कीजिए। अरे, पढ़ तो लीजिए।

जोशी : मुझे पता है—आप मेरे पिता के दोस्त हैं।

[व्यक्ति मुस्कराता है, जोशी हँस पड़ता है।]

व्यक्ति : बन्द कीजिए हँसी, मैं हुक्म देता हूँ—हँसना बन्द कीजिए ! चपरासी, इसे बाहर निकालो।

[प्रकाश बुझता है। थोड़ी देर बाद फिर प्रकाश लौटता है। अनिल अपने बाप के सामने खड़ा दिखता है।]

अनिल : बाबा, केमन आछेन !

बाबा : बेश भालो ! तोमार की खबर ?

[दोनों टहलने लगते हैं।]

बाबा : गोगू ! हम तुमसे एक बात बोलने आया है। दुनिया में सब काम करो, मगर अपने को बचाकर। हमने कोभी माना नहीं किया गोगू, तुम जे काज करो, जे काज ना करो। तुमी शोतन्त्र। नाहीं तो शोतन्त्र भारत की छबि कैसे बनेगी ? तुमी शोतन्त्र।

अनिल : आर आपनी, बाबा ?

बाबा : अरे, हम लोगन को छोड़ो। इन बातों को सोचने का फुरसत कहाँ है ! खोकन अमेरिका में ही शादी करके वहीं 'सेटिल' हो गया। मोनी का हस्बैंड राउरकेला में चीफ इंजीनियर हो गया। खोका को एक स्माल इंडस्ट्री करा दिया। उसके लिए हवड़ा में एक कोठी बना दिया। हम जब तक रिटायर्ड होगा, ढाई-तीन लाख पी० एफ० हो जाएगा। चीफ मिनिस्टर अपना ही शिष्य है।

अनिल : बाबा, आप मुझसे कोई विशेष बात कहने वाले थे।

बाबा : हाँ-हाँ-हाँ। यही कथा थी—तरक्की, विकास, उन्नति का रहस्य क्या है ? कभी कुछ 'कमिट' मत करो। करो, खूब करो, परन्तु 'कमिट' मत करो। हाँ, वह जो तुमारा साथी था ना—परिमल चटर्जी, जिसका वर्द्धमान में पुलिस से एनकाउण्टर हुआ था ! हाँ, वही। अब वह बहुत इम्पोर्टेंट आदमी हो गया। जैसे एक पैर राइट होता है, दूसरा लेफ्ट होता है। एक हाथ लेफ्ट होता है, दूसरा हाथ राइट होता है। और दोनों साथ होता है। साथ चलता है। सवाल यह नहीं है कि आप चलते हैं—करते हैं—सवाल यह है कि आप किधर चलते हैं—क्या करते हैं ! तो असली चीज है—को-आर्डिनेशन, स्टेटजी और कांडक्ट।

अनिल : आप मुझसे कुछ कहने वाले थे ?

बाबा : गोगू, द सीक्रेट इज, चीज़ों को कैसे इस्तेमाल किया जाए; चाहे वह हिंसा हो, अहिंसा हो; चाहे वह दुःख हो, गरीबी हो; लोगों का सफरिंग हो।

अनिल : ओ माँ ! बाबा, प्लीज़ गिव मी ए सिगरेट !

बाबा : गोगू, सिगरेट बहुत बुरी चीज है। हम बोलता है कि यहाँ से मेरे संग चलो, अब सब ठीक कर लिया है। आखिर हम बुड्ढा लोग कब तक जीएगा ? यू आर द फ्यूचर। तुम्हीं लोग तो हमारा ड्रीम है। सपना है।

[अनिल बाबा के बैग पर झपटकर उसे छीन लेता है। बैग की चीज़ें आवेश में देखता है। फिर उसमें से सिगरेट-माचिस निकालकर दागता है।]

बाबा : गोगू, तुमी कुछ बोलो ना। हमसे 'डिस्कस' करो। हमको 'कांट्रेडिक्ट' करो। सेई तो हमारी बात में 'काट्रेडिक्शन' नेई है। वोइ तुम्हारी लाइफ है। हम साफ बोलता है और इस बात में पूरा यकीन करता है—'द चाइल्ड इज द फादर आफ द मैन।'

[अनिल सिगरेट के धुएँ के बीच जैसे खो गया है। बाबा की आवाज़ें अँधेरे में उभरती रहती हैं। थोड़ी देर बाद प्रकाश लौटता है। अनिल और जोशी फर्श पर लेटे पड़े हैं। बाहर लोग शोर मचा रहे हैं। वही आवाजें, शब्द आ रहे हैं। दोनों चुप पड़े हैं। बाहर धीरे-धीरे सब शान्त हो जाता है। दोनों उठ बैठते हैं। दोनों अपलक एक-दूसरे को देखते हैं।]

अनिल : बचपन में अपने पिता को क्या कहते थे ?

जोशी : बापू। और तुम ?

अनिल : बाबा। उन दिनों की कोई बात याद है ?

जोशी : बापू अकसर लोगों से कहा करते थे—उनका बचपन आज़ादी की लड़ाई, राष्ट्र-प्रेम के वातावरण में बीता था। उन दिनों बापू कभी-कभी गाते थे—

यह ज़िन्दगी है कौम की, तू कौम पै लुटाए जा।

अनिल : मेरे बाबा भी गाते थे—

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए-कातिल में है।

जोशी : मैंने अपने बचपन में एक अजीब बात देखी। न जाने क्यों बापू आज़ादी के अपने विचारों और सपनों पर पछता रहे थे। जैसे-जैसे बापू अपनी सरकारी नौकरी में तरक्की करते गए और इधर मेरी उमर बढ़ती गई, उधर देश के राजनेता लोग, आज़ादी के सपनों और कल्पनाओं को बेरहमी से तोड़ते गए। मैं जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, मेरे चारों ओर निराशा दिनो-दिन गहरी होती चली गई।

अनिल : 'नो पोलिटिकल टाक्स ! नथिंग डूइंग' !

जोशी : पर वे सपने मेरे बाहर-भीतर क्यों छाए रहते हैं ?

अनिल : मेरे बाबा कहते थे कि जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, तब एक नंगे सनकी, पागल की तरह सड़कों पर भटकूँगा। तब ये आज़ादी के सपने ही मेरी सनक होंगे।

जोशी : जब दोबारा मैं कालेज से भागा, तब बापू ने कहा—'अब मेरी बेबी···मेरा बेबी जोशी, गुंडों-अपराधियों के दल में खो जाएगा।'

अनिल : अनिल 'एंटी-सोशल' हो जाएगा।

[फिर वही शोर बढ़ने लगता है।]

जोशी : (एक ओर) सुनो, सुनो ! मैं देख रहा हूँ इस भीड़ में बापू तुम्हें। सुनो··· देखो, वही आपके आज़ादी के सपने मेरी सनक हैं। वही कल्पनाएँ हमें पागल किए हुए हैं।

अनिल : बाबा ! तुमी, तुमी ओ। तुमी ओ, बाबा !

[हथगोले, छिलके आदि मारे जाते हैं।]

जोशी : हाँ-हाँ, मारो ! और मारो !

अनिल : हम स्वप्न हैं। हमें कोई नहीं मार सकता।

जोशी : हम तुम्हारी वही कल्पना हैं—जो तुम होना चाहते थे।

अनिल : गाली क्यों बकते हो ?

जोशी : बेहूदे सवाल क्यों करते हो ?

अनिल : हम तुम्हें देख रहे हैं।

जोशी : पहचान रहे हैं। महसूस कर रहे हैं।

अनिल : हाँ-हाँ, हमारा परिचय कुछ नहीं है।

[धीरे-धीरे बाहर का शोर खत्म होता है, पर दोनों बाहर अपलक देख रहे हैं, जैसे निःशब्द संवाद कर रहे हों।]

[पर्दा]

न जाने क्यों बापू आजादी के
से-जैसे बापू अपनी सरकारी
र बढ़ती गई, उधर देश के
को बेरहमी से तोड़ते गए।
दिनों-दिन गहरी होती चली

एक नंगे सनकी, पागल की
मेरी सनक होंगे।
—'अब मेरी बेबी···मेरा

मैं बापू तुम्हें। सुनो···
पनाएँ हमें पागल किए

देख रहे हैं,

शहर

पात्र

श्री रंजन
श्रीमती रंजन (राज
अर्चना
दिनेश (दीपू)
रामी (नौकरानी)
पंचम (रामी का पति)
सुरेश (युवक)
रामी के पाँच बच्चे

[श्री रंजन के घर का ड्राइंगरूम, जिसके एक किनारे बाईं ओर डाइनिंग टेबल भी लगी है। डाइनिंग टेबल के पास वाली दीवार में एक बड़ा-सा झरोखा है, जिससे किचन का ताज़ा भोजन आता है। ड्राइंगरूम में दाईं ओर आने-जाने का दरवाज़ा है। सामने से भीतर जाने-आने का दरवाज़ा है। शाम साढ़े पाँच बजे का वक्त है। श्री रंजन भीतर से निकलते हैं।]

रंजन : रामी, रामी ! कहाँ है तू ?

[पंचम बाहर से दौड़ा हुआ आता है।]

पंचम : जी साहब !

रंजन : आज तुम काम पर आए हो क्या ? तुम्हारी बीवी रामी कहाँ है ?

पंचम : साहेब, ओकर कुछ तबियत खराब रहा।

रंजन : हूअँ ! बहूजी कहाँ हैं ?

पंचम : बहूजी तो यहीं रहीं। आपै कै बोहू ढूंढ़ रही थीं। चाय बनाय लाऊँ साहेब ?

रंजन : नहीं। देखो पंचम ! आज जब तक तुम यहाँ काम पर हो, बीड़ी नहीं पीयोगे। खैनी-सुरती भी नहीं खाओगे। बिल्कुल सफाई से खाना बनाओगे।

[कहकर बाहर निकल जाना। पंचम डाइनिंग टेबल को ठीक करने लगता है। भीतर से श्रीमती रंजन निकलती हैं।]

राज : साहब कहाँ हैं ?

पंचम : यहीं तो अभी रहें। आपै कै बोहू ढूंढ़ी रहे हैं।

राज : पर हैं कहाँ ?

पंचम : (देखता है) ऊ का खड़े हैं, फुलवारी माँ।

राज : खड़े रहने दो वहीं।

[भीतर चली जाती हैं। बाहर से दिनेश का प्रवेश।]

दिनेश : ओहो ! पंचम साहब तशरीफ ले आए हैं। फिर आज खाना लाजवाब मिलेगा। खूब चटपटी सब्जी होगी।

पंचम : चाय पीएँगे साहब, या दूध ?

दिनेश : यह क्या सवाल है ? मैं कोई बच्चा हूं, जो दूध पीऊँगा।

पंचम : माताजी भीतर बैइठी हैं।

विनेश : पिताजी कहाँ हैं ?

पंचम : भइया, बड़ी मजेदार बात है। उधर बहूजी पूछती हैंअ, साहब कहाँ हैं ? उधर साहब पूछते हैं, बहूजी किधर हैं ? इधर, उधर। हाँ, सामने देखत हैंअ एक-दूसरे को। मुला सवाल हमसे करत हैंअ।

विनेश : ओहो। तुम नहीं समझते। दोनों एक-दूसरे से नाराज होंगे।

पंचम : हाँ, बहूजी कुछ रूठी-सी लगि रही हैं।

विनेश : अब सवाल यह है कि दोनों में पहले बोले कौन ! माताजी भी नौकरी करती हैं और पिताजी भी।

पंचम : मुला ऐसी बात का हुई ?

विनेश : माताजी अपनी पूरी तनखा खर्च कर आईं तीन साड़ियाँ खरीदकर। पिताजी इस पर नाराज हुए। और पिताजी ने कल डिनर के बाद पाँच रसमलाई खाकर इस पर्दे से अपना मुँह पोंछ लिया, इस पर माताजी उनसे लड़ बैठीं।

पंचम : इसमें कौन-सी बड़ी बात है गई भइया ! अरे कहाँ औरत, कहाँ मरद ! राजी तो मोसे थरथर काँपे अउर उलट मनावै भी मुझे। औरत का का मजाल, हाँअ !

[श्रीमती रंजन निकलती हैं।]

राज : क्या बक-बक लगा रखा है ! दीपू, दूध पी लिया कि नहीं ?

विनेश : मुझे कुछ नहीं पीना !

पंचम : भइया चाय माँग रहे हैं।

राज : नहीं। कोई चाय-शाय नहीं। पूरा गिलास दूध ले आओ।

[पंचम जाता है।]

विनेश : माँ, दूध पीने की जरा भी इच्छा नहीं। तुम्हीं तो कहती हो, बिना भूख कुछ भी नहीं खाना-पीना चाहिए।

राज : पर चाय पीने की भूख तो है।

विनेश : चाय की बात और है माँ !

राज : फिर दूध की भी बात और है।

विनेश : माँ, तुम जिद करती हो। अब मैं बच्चा नहीं रहा। मैं बी० ए० में पढ़ता हूँ, उन्नीस साल मेरी उमर है।

राज : यही तो उमर है सेहत बनाने की। जिसकी सेहत अच्छी नहीं, वह काम क्या करेगा ! झींखेगा।

[पंचम दूध लेकर आता है।]

राज : तुम्हें कोई सहूर नहीं है पंचम ! प्लेट या ट्रे पर रखकर लाना चाहिए। तुमसे कहीं ज्यादा समझदार तुम्हारी बीवी रामी है। टेबल पर गिलास रखकर, साहब को बुला लाओ।

[पंचम रखकर बाहर जाता है।]

राज : चलो, दूध पीयो। कालेज से आकर हाथ-मुँह धोया ?

दिनेश : अभी नहीं।

राज : जाओ। हाथ-मुँह धोकर झट आओ। ये किताबें यहाँ क्यों रख दीं ? उठाओ। अपने कमरे में स्टडी टेबल पर रखो।

[दिनेश किताबें उठाकर भीतर जाता है। बाहर से पंचम के साथ श्री रंजन का प्रवेश।]

रंजन : किसने बुलाया मुझे ? क्या है ?

राज : मुझे क्या मालूम !

रंजन : क्यों पंचम, किसने बुलाया ?

पंचम : साहेब, पराया मरद-मेहरारू के झगड़ा बीच हम नाहीं पड़ा चाहित।

[पंचम किचन में बढ़ जाता है।]

रंजन : नौकरों के सामने यह क्या तरीका है तुम्हारा ?

राज : देखो, मैं तुमसे पहले नहीं बोली। तुम्हें मजबूर होकर मुझसे बोलना पड़ा न।

[दिनेश आता है।]

राज : चलो, दूध पीओ।

दिनेश : पिताजी भी क्या शाम को दूध पीते हैं ? क्या आप दूध पीती हैं ? आप तो कॉफी पीती हैं। पिताजी चाय पीते हैं।

रंजन : दिनेश, माँ से ऐसी बातें नहीं करते।

राज : देख लो। आपने बच्चों का दिमाग खराब किया है ! 'बच्चों को आज़ादी दो। इन्हें समझो। इन्हें प्यार करो।' सारा चौपट ! सत्यानास !

दिनेश : पिताजी, मेरे सारे दोस्त—बिमल, सुधीर, अहमद, कोहली कोई भी दूध नहीं पीते। कभी नहीं। न सुबह, न शाम। सब चाय पीते हैं।

राज : लो अपना दिमाग चटवाओ इनसे। मेरे पास इतना वक्त नहीं। मुझे कहीं जाना है।

[भीतर जाती है।]

रंजन : दीपू, बैठो। मैं तुम्हारे सारे दोस्तों को जानता हूँ। मैं तुम्हारी बड़ी बहन अर्चना के साथ इन सबके घर गया हूँ। बिमल दो भाई हैं, तीन बहनें। बिमल के पिता बैंक में क्लर्क हैं। कुल छः सौ रुपये तनख्वाह पाते हैं। बिमल के माँ-बाप चाहें भी तो बिमल को एक कप दूध नहीं पिला सकते। अर्चना से बिमल की माँ ने बताया है—वह एक वक्त सब्ज़ी के पैसे बचाकर, उसी से दूध खरीदती हैं और सिर्फ अपने दो छोटे बच्चों को वही पिलाती हैं। जबकि उस पूरे परिवार को दूध मिलना चाहिए। यही सच्चाई सुधीर, अहमद, कोहली सबके घर की है। यह जो दूध का गिलास तुम्हारे सामने है, इसके लिए हमने एक विशेष प्रयत्न किया है, सोचा-विचारा है।

दिनेश : जी हाँ, मुझे मालूम है ।

रंजन : अच्छा, दूध पीकर बताओ—क्या मालूम है ?

दिनेश : (**दूध पीकर**) हम सिर्फ दो हैं, भाई-बहन । और आप दो हैं कमाने वाले ।

रंजन : पूरी बात तुम्हें नहीं मालूम दीपू ! फिर बताऊँगा ।

[श्रीमती रंजन आती हैं । खूब सज-धजकर निकली हैं ।]

राज : देखिए जी, मैं कहीं जा रही हूँ । अभी थोड़ी देर में लौट आऊँगी । (**घड़ी को देखते हुए**) अभी कुछ ही देर में सुरेश आता होगा । उससे बातें कर लेना । मेरी उससे बातें हो चुकी हैं । सुरेश बहुत अच्छा लड़का है ।

रंजन : ओहो, जब तुम कह रही हो तो अच्छा होगा ही, पर कौन सुरेश ? कैसी बात ?

राज : प्रोफेसर व्यास का लड़का सुरेश । अपनी अर्चना का फ्रेण्ड । उससे अर्चना की शादी तै करनी है ।

रंजन : क्या ? शादी ? क्या बात करती हो ? अरे, सुनो तो !

राज : मैं अभी आती हूँ ।

रंजन : सुनो तो ।

राज : अभी मेरे पास वक्त नहीं है ।

[चली जाती हैं ।]

रंजन : देखो न ! तुम्हारी माँ भी अजीब है । न कोई बात न चीत, न अर्चना से सलाह-मशविरा, खुद खिचड़ी पका ली ।

दिनेश : माँ को हर चीज में जल्दी पड़ी रहती है ।

रंजन : अभी अर्चना की शादी कैसे हो सकती है ? और बिना उसकी इच्छा के शादी । कमाल है ! और अभी तो वह कुल इक्कीस साल की है । क्या अर्चना ने ऐसी इच्छा प्रकट की है ?

दिनेश : बिल्कुल नहीं ? और पिताजी, सबसे बड़ी बात तो यह कि सुरेश और अर्चना के विचार भी तो नहीं मिलते ।

रंजन : हाँ, यह बात सही है कि सुरेश और अर्चना दोस्त हैं । सुरेश अब कालेज में लेक्चरर लग गया है । अच्छे घर का है । पर शादी तो अर्चना की होनी है । उसकी पसंद, उसकी राय और उसकी इच्छा को जाने बिना···।

[बाहर किवाड़ पर दस्तक]

दिनेश : कौन ? शायद सुरेश ही है । (**बढ़ता है**) आइए ।

[सुरेश आता है ।]

सुरेश : नमस्ते । क्या मुझे आने में कुछ देर हो गई ?

रंजन : नहीं-नहीं । बैठिए, बैठिए । दरअसल हमें अभी पता चला कि तुम यहाँ आने वाले हो ।

सुरेश : अरे ! आपको पहले से पता नहीं था। मम्मीजी ने तो मुझे बताया था कि इस वक्त यहाँ पार्टी होगी। काफी लोग होंगे।

रंजन : भई, इस महँगाई के जमाने में मैं पार्टियों के सख्त खिलाफ हूँ। लोगों को खाने को अन्न नहीं, कुछ लोग पार्टियाँ उड़ाएँ, यह सरासर अन्याय है।

सुरेश : अर्चना कहाँ है ?

रंजन : कहीं 'सोशल वर्क' कर रही होगी। कहीं झुग्गी-झोंपड़ियों में अपने रिसर्च के सिलसिले में सिर खपा रही होगी।

सुरेश : बहुत मेहनती है।

रंजन : इससे भी ज्यादा दूसरों के दुःख-दर्द में शामिल हो जाना उसका सहज स्वभाव है।

सुरेश : ममीजी कहाँ हैं ?

रंजन : देखो सुरेश, पत्नी को तुम ममीजी मत कहो, उन्हें बहुत बुरा लगेगा। उन्हें तुम मिसेज राज कहो, अच्छा लगेगा उन्हें, या उन्हें 'आण्टीजी' कहो।

[हँसी]

सुरेश : कहाँ हैं ?

रंजन : कहीं दौड़ी हुई गई हैं—मुझसे यह बताकर···नहीं-नहीं, आर्डर देकर कि तुम यहाँ आ रहे हो, मैं तुमसे कुछ बातें करूँ।

[पंचम आता है।]

पंचम : साहेब, कुछ चाय-नाश्ता ले आऊँ ? बहूजी हमसे बोले रहीं कि मेहमान अइ हैं, खूब खातिर-बात···।

रंजन : हाँ-हाँ, जा दो गिलास ठंडा पानी ला।

[पंचम जाता है।]

रंजन : भोजन, चाय, नाश्ता सबका एक समय है। पर हमारे यहाँ लोग बेवक्त खिलाने-पिलाने को ही मेहमाननवाज़ी मानते हैं।

सुरेश : ऐसा क्यों है ?

रंजन : फूड हैबिट्स—खाने-पीने की आदतों का, दरअसल हमारी गरीबी और गुलामी की आदतों से बहुत गहरा संबंध है। ज़रूरत से ज्यादा भोजन करना-कराना, भोजन को बेमतलब बर्बाद करना लोग अमीरी का, धनी होने का सबूत मानते हैं।

[अर्चना बाहर से आती है।]

अर्चना : हेलो डैडी ! हेलो सुरेश !

रंजन : लो भाई, तुम लोग बातें करो। मैं जाता हूँ।

अर्चना : नहीं। कहाँ ?

रंजन : किचन गार्डन में थोड़ा काम करूँगा। इससे मेरा व्यायाम भी होता है और घर

के लिए हरे ताज़े फल-फूल-सब्ज़ियाँ भी मिलती हैं।

अर्चना : (सहसा) अरे डैडी, मैं तो बताना ही भूल गई, कल अपना यह पूरा शहर बंद है। यह देखिए, 'ईवनिंग न्यूज़।'

[रंजन अखबार पढ़ने लगते हैं।]

अर्चना : सुरेश, तुम कब आए ?

[पंचम ट्रे में तीन गिलास पानी ले आता है। बीच की टेबल पर रखकर जाता है।]

अर्चना : ममी कहाँ गईं ?
दिनेश : कहीं बाहर गई हैं।
अर्चना : सुरेश, चाय पियोगे ?
सुरेश : इच्छा तो नहीं है, पर पी लूंगा।
अर्चना : नहीं-नहीं-नहीं। जब इच्छा नहीं है, तब क्यों पीयोगे ?
सुरेश : तुम नहीं पीयोगी ?
अर्चना : मैं एक गिलास दूध पीऊँगी। मैं अभी आई।

[जाती है।]

रंजन : तो कल शहर बंद रहेगा।

[अखबार रखकर जाते हैं। दिनेश अखबार पढ़ने लगता है। पंचम दूध का गिलास ले आता है। अर्चना आकर गिलास लेती है।]

सुरेश : कल शहर क्यों बंद हो रहा है ?
अर्चना : बंद शहर न होगा तो क्या गाँव होगा !
सुरेश : पिछले महीने भी बंद हुआ था यह शहर।
दिनेश : सब पोलिटिकल पार्टियों का तमाशा है।
अर्चना : क्यों है ? इसे लोग नहीं सोचते।
दिनेश : इतनी महँगाई है। लोग परेशान हैं।
अर्चना : क्यों ?

[सन्नाटा]

दिनेश : मैं टेलीविज़न देखने जा रहा हूँ। माफ कीजिए।
अर्चना : दीपू ! जाओ पिताजी के साथ किचन गार्डन में काम करो।
दिनेश : आज बहुत अच्छा प्रोगाम आ रहा है दीदी !
अर्चना : नहीं। जाकर काम करो, यही सबसे बढ़िया प्रोग्राम है।

[दिनेश बाहर जाता है।]

सुरेश : आपके यहाँ एक अजीब बात देखता हूँ—सब एक-दूसरे की बात मानते हैं।
अर्चना : पर ममी डैडी की बात कम मानती हैं। ममी का कहना है, यदि पत्नी पति की

हर बात माने, तो वह माडर्न—आधुनिक स्त्री नहीं।

[दोनों हँस पड़ते हैं। तभी बाहर से श्रीमती रंजन का प्रवेश]

राज : हेलो सुरेश ! माफ करना, मैं मिसेज़ गोकुलचंद के यहाँ तक गई थी। वहाँ पता चला, कल शहर बंद होने जा रहा है। मैं तो तुम्हें कल विक्टोरिया होटल के फैशन परेड में ले जाती।

अर्चना : ममी फैशन एक्सपर्ट हैं।

राज : पर कल शहर बंद क्यों होगा ? तमाशा बना रखा है !

अर्चना : हमारा शहर बीमार है, इसलिए एक दिन आराम करेगा। मरीज़ को आराम की सख्त ज़रूरत होती है।

सुरेश : मेरा वश चले तो मैं सारा कुछ एक दिन में ठीक कर दूं। बदमाशों को मार-मार···।

अर्चना : अच्छा, तो वह एक दिन आपको कौन दे ?

[सब हँस पड़ते हैं।]

राज : अरे, तुम्हारे डैडी कहाँ हैं ?

अर्चना : किचन गार्डन में।

राज : और दीपू ?

अर्चना : वह भी गार्डन में।

राज : सुरेश को कुछ खिलाया-पिलाया ?

अर्चना : भई, यह खाने-पीने का वक्त है ? प्यास लगी थी इन्हें, पानी पी लिया।

राज : तुम सबका दिमाग खराब है। पंचम, इधर आओ। चलो जल्दी। और तुम जाकर डैडी को अभी फौरन साथ ले आओ। लोगों ने तमाशा बना रखा है।

[अर्चना जाती है। पंचम आता है।]

राज : कुछ भी नहीं खिलाया-पिलाया ?

पंचम : हम तो बहूजी साहेब से कहे रहेन कि···।

राज : चुप रहो। फौरन नाश्ता लगाओ।

सुरेश : जी नहीं, मिसेज़ रंजन, थैंक्यू वेरी मच। इस समय कतई कुछ खाने-पीने की इच्छा नहीं है।

राज : श्री रंजन ने तुम्हें भोजन और आहार के बारे में अपनी शिक्षा दे दी क्या ?

सुरेश : नहीं। मेरी कतई कोई इच्छा नहीं।

[अर्चना के साथ रंजन का प्रवेश]

राज : क्यों जी, मैं तुससे क्या कहकर गई थी ?

रंजन : यही कि तुम जल्दी आ जाओगी।

राज : और कुछ नहीं कहा था ? पंचम, तुम जाओ यहाँ से।

[पंचम जाता है।]

अर्चना : ममी, क्यों बिगड़ती हो, सुरेश साहब कोई ऐसे लाट साहब तो हैं नहीं। क्यों, आपकी क्या खातिर की जाए ?

सुरेश : मेरी ?

रंजन : जी हाँ, इनकी इच्छा है। बल्कि आदत कहिए।

राज : देखिए रंजन साहब, जरा जबान सम्हालकर बोलिए।

रंजन : सिर्फ आपको यह इत्तिला देकर कि कल पूरा शहर बंद रहेगा।

राज : आप लोगों को जरा भी समझ नहीं।

[उठकर चौके की ओर जाती हैं।]

रंजन : क्यों अर्चना, शहर क्यों बंद हो रहा है ?

सुरेश : सब पोलिटिकल पार्टियों की बदमाशी है। सब कामचोर हो रहे हैं। सबको मार-मार के···।

[अर्चना हँसने लगती है।]

सुरेश : जिस शहर में हर चीज की कमी हो। हर बात का संकट हो। चारों ओर क्यू, भीड़, शोर-शराबा, बेईमानी, लूट—वहाँ शहर बंद क्यों, आग लगा दे तो कोई हर्ज नहीं।

रंजन : अर्चना, हँसो नहीं, सुरेश को अपनी बात तो कह लेने दो।

अर्चना : और उस जलते हुए शहर में सिर्फ बचें श्रीमान सुरेशचन्द्र लाट-गवर्नर !

सुरेश : इस मुल्क में डिक्टेटरशिप चाहिए।

अर्चना : तुम बच्चों की तरह बातें करते हो। तुम डिक्टेटरशिप के नाम पर गुलामी चाहते हो, स्वराज्य नहीं, प्रजातंत्र नहीं।

सुरेश : कैसा स्वराज्य ? जिस देश में अन्न-जल, पानी-बिजली तक की कमी हो, आने-जाने की असुविधाएँ हों, शिक्षा, नौकरी, हर जगह हर चीज की समस्याएँ हों, वह कैसा स्वराज्य ?

अर्चना : स्वराज्य का मतलब शहरों की सुविधाओं का ही नाम नहीं। स्वराज्य निर्भर है सारे मनुष्यों की आंतरिक शक्ति पर। बड़ी से बड़ी कठिनाइयों से जूझने की हमारी ताकत पर। पर आप लोग सोचते हैं, भारतवर्ष वही है, जो शहरों में है। इसीलिए सारी समस्याएँ शहरों में इकट्ठी होती चली जा रही हैं। और हम लोग केवल शासन और सरकार का मुँह देखने के आदी हो रहे हैं।

सुरेश : अगर शासन कड़ा हो, सख्ती से काम लिया जाए, तो शहर की समस्याएँ सुलझ सकती हैं। आए दिन शहर बंद नहीं हो। यहाँ न किसी चीज की कमी हो। ना कोई समस्या हो।

अर्चना : जिस तेजी से शहर की आबादी बढ़ रही है, जिस तरह शहरी लोग सिर्फ अपने स्वार्थों के बारे में चिंतित हैं, दौड़ लगा रहे हैं, ये सारे लोग इस तरह शहरों में

चाहे वह महलों में रहें या झोंपड़ी-झुग्गियों में, कभी भी शांतिपूर्वक नहीं रह सकते। लोगों के पास सिवा इसके और कोई चारा नहीं कि वे हिंसा, बंद, लूट-खसोट, बेईमानी का सहारा लें।

रंजन : अर्चना ठीक कह रही है, असली बुनियाद है हमारा जीवन। जीवन के बारे में एक स्वस्थ-सही समझ ! देश चाहे शहर में हो या गाँव में, महल में हो या झोंपड़ी में, वह शुरू होता है हमारे घर से, परिवार से। हम कैसी ज़िन्दगी जीते हैं। हमारी उसके बारे में समझ क्या है। इसी से बनता है देश, समाज। हम लोग बनते हैं।

[राज पंचम के साथ खाने का सामान लिए आती हैं।]

राज : आप लोग क्या बेमतलब बातों में लग गए। आइए, इधर नाश्ते पर। देखिए क्या-क्या चीजें बनी हैं।

रंजन : माफ करना। अभी यही देख लीजिए। महज अपनी झूठी शान-शौकत दिखाने के लिए, आपको खामखा प्रभावित करने के लिए बेवक्त चीजें बनाई गईं।

राज : आप चुप रहते हैं या नहीं ?

रंजन : लोगों को वक्त पर ठीक से भोजन नहीं मिलता। लोग आहार की कमी की वजह से बीमार हैं, पर कुछ लोग हैं, जो बेवक्त ज्यादा खाने से बीमार हैं।

राज : क्या बकवास लगा रखी है ?

अर्चना : जाओ सुरेश ! ममी नाराज हो जाएँगी।

रंजन : तुम शायद आज मेहमान के तौर पर यहाँ बुलाए गए हो।

राज : अब समझ में आया। आओ सुरेश !

[सुरेश जाता है। डाइनिंग टेबल पर राज और सुरेश बैठते हैं।]

राज : अर्चना, तुम भी आओ ना। क्या करती हो ?

अर्चना : (जाती हुई) मैंने दूध पी लिया है। अब कुछ नहीं ममी !

पंचम : आओ बैठो, न बिटिया !

अर्चना : रामी कहाँ है पंचम ?

पंचम : कुछ तबियत खराब होइगै बाय।

अर्चना : तू हमेशा यही कहता आया है—मैं पिछले पाँच सालों से देख रही हूँ।

पंचम : नाहीं बिटिया, वैसन कौनो बात नाहीं ना।

अर्चना : फिर झूठ बोलता है।

पंचम : भगवान कसम, बिटिया !

अर्चना : अच्छा ! अच्छा !

[इस दृश्य पर पर्दा गिरता है, या प्रकाश बुझता है। दूसरा दृश्य—रामी का घर। उसका कमरा। रात का वक्त। रामी के पाँचों बच्चे जमीन पर इधर-उधर लेटे पड़े हैं। कमरे में एक ओर खाट पर रामी पड़ी है। दूसरी ओर कोने में अँगीठी पर कुछ पक रहा है। अर्चना अपने संग सुरेश को साथ लिए आती है।]

सुरेश : कहाँ ले आ रही हो तुम मुझे ? छी-छी ! कितनी गंदगी है ! चारों ओर बदबू। सड़न। बोलती क्यों नहीं अर्चना, हम लोग कहाँ आ गए ?

अर्चना : अपने ही शहर, अपने ही समाज और अपने ही मुल्क के एक हिस्से में। यह है मेरी नौकरानी रामी का घर।

सुरेश : नहीं-नहीं। मैं उसके अंदर नहीं जा सकता। वहाँ मेरा दम घुट जाएगा। लगता है, मुझे उल्टी हो जाएगी।

अर्चना : तुम जहाँ एक मिनट भी नहीं रह सकते, वहाँ लोग अपनी पूरी ज़िन्दगी जी रहे हैं। यहाँ बच्चे जन्म लेते हैं, जन्म पाते हैं, इसी गंदगी, गरीबी, अंधकार में बड़े होते हैं।

सुरेश : इन गंदी बस्तियों में आग लगा देनी चाहिए। कीड़े-मकोड़ों की तरह ज़िन्दगी बसर करने वाले इन लोगों को किसने कहा था—यहाँ इस तरह रहने के लिए ?

अर्चना : यही लोग बुनियाद हैं, तुम्हारे शहर की। इनकी औरतें हमारे घरों में काम करके, हमारे चौके-चूल्हों को चलाती हैं। इनकी बेटियाँ-बेटों से बढ़ते हुए शहरों की ऊँची-ऊँची इमारतें बनती हैं। यहीं के लोग कल-कारखाने चलाते हैं। इन्हीं के कमज़ोर हाथों और कंधों पर हमारा पूरा शहर खड़ा है। तभी तुम्हारा यह पूरा शहर इतना कमज़ोर है। गंदा है। बीमार है।

[सुरेश को बाहर छोड़कर अर्चना भीतर बढ़ती है। कुछ क्षणों खड़ी देखती रह जाती है। बढ़कर रामी के मुख पर से कपड़ा हटाकर उसके माथे पर हाथ रखती है। कमरे के भीतर से जलती हुई अँगीठी को बाहर रखती है। बच्चों को ठीक से सुलाने लगती है। सहसा रामी जगकर चिल्ला पड़ती है।]

रामी : चोर ! चोर ! गोहार लागो चोर ! चोर !

[अर्चना एक किनारे छिपकर खड़ी हो गई है। रामी का बड़ा लड़का चन्दर जग जाता है।]

चन्दर : का है रे माई ?

रामी : अरे चोर आया था, चोर ! मोती को उठाय कै लै जाइ रहा। हाय राम, ज़रा सारे बच्चों को गिन तो ले।

चन्दर : (उठकर एक-एक को गिनता है) चुन्नू एक, मुन्नू दो, नीती तीन, परदेशी चार।

रामी : हाय राम, पाँचवाँ कहाँ गया ?

[हाय-हाय करती हुई छाती पीटने लगती है।]

चन्दर : पाँचवाँ मैं तो हूँ माई ! सब हैं रे माई, सब हैं !

रामी : फिर से गिन तो भला। फिर से गिन। हाय राम !

चन्दर : मैं एक। चुन्नू दो। मुन्नू तीन। परदेशी चार। नीती पाँच। सब तो हैं।

रामी : हाय राम ! भगवान ने बचा लिया। मैंने सपना माँ देखा, नीती को चोर उठाय

कै लै जाय रहा था।

[अर्चना प्रकट होती है।]

अर्चना : हाँ, वह चोर मैं थी।

रामी : अरे अर्चना बिटिया ! इहाँ तू कहाँ से आय गइऊ ?

अर्चना : हाँ-हाँ, मैं आकर तुम्हारे बच्चों को ठीक से सुलाने लगी थी।

रामी : अब बोलो, कहाँ बैठाऊँ तुम्हें बिटिया ? मेरी तबीयत बिल्कुल खराब है गई। सारे शरीर में दरद है। चक्कर आवत है कमजोरी के मारे। कुछ खाऊँ तो उल्टी अलग से।

अर्चना : तो फिर तुम माँ बनने वाली हो—इसका मतलब यह हुआ।

रामी : सब भगवान के मरजी है, बिटिया रानी ! यह में हमार का बस चलै।

अर्चना : पंचम कहाँ है ?

रामी : तो फैक्टरी माँ ड्यूटी पर गए हैं।

अर्चना : पंचम को कितनी तनखा मिलती है ?

रामी : कुल दो सौ रुपये।

अर्चना : और सौ रुपये तुम्हें मिलते हैं, मेरे घर से। कुल तीन सौ रुपये। इस झुग्गी का कितना किराया देती हो ?

रामी : तीस रुपये।

अर्चना : कोई बच्चा पढ़ने भी भेजती हो ?

रामी : कैसी पढ़ाई बिटिया ! चन्दर सबसे बड़ा है। दिन में बूटपालिश का काम कर लेता है। दहिजरा का पूत दिन-भर में जो कमाता—या तो लौंडों के साथ जुआ खेल डालै थे, नाही तो सनीमा। पिछले सुकरवार को इसके बाप ने गुस्से में आकर इसे इतना मारा है कि तब से घर में पड़ा है। दोनों हाथ में चोट आय गई है। हर महीने कुछ न कुछ रुपये गाँव भेजैक पड़ै थे। उहाँ मुकदमा चल रहा है। इहाँ माथे पै करज भी होई गया है।

अर्चना : यह है तुम्हारी हालत। इतनी दर्दनाक है तुम्हारी गृहस्थी। फिर भी तुम एक बच्चा और ला रही हो इस नर्क में ?

रामी : अपना बस का है बिटिया ?

अर्चना : चुप रहो ! सब कुछ तुम्हारे ही वश के भीतर है, तुम लोग जरा भी नहीं सोचते। देखो अपने बच्चों की हालत। अपनी हालत। जहाँ रहती हो इसकी हालत !

रामी : का बताई बिटिया ! बाहर के खड़ा ह्वै ?

अर्चना : मेरे एक साथी हैं, सुरेश बाबू। उन्हें मैं तुम्हारा यह घर, यह तुम्हारी बस्ती दिखाने ले आई थी।

रामी : हमरे बच्चन के भाग माँ यही है बिटिया !

सुरेश : तुम झूठ बोलती हो रामी, बिल्कुल झूठ। तुम अपने-आपको धोखा दे रही हो।

क्या तुम हमारा घर, हमारी गृहस्थी देखकर यह नहीं सोचतीं कि क्या तुम वैसी ज़िन्दगी की हकदार नहीं ?

[सुरेश आता है।]

सुरेश : मुझसे अब यहाँ नहीं रहा जा सकता। तुम इन्हें बेमतलब का लेक्चर दो, मैं जाता हूँ।

अर्चना : जाओ। मैं तुम्हें यहाँ यही दिखाने ले आई थी कि वह बुनियाद क्या है, जिस पर तुम्हारा यह शहर, समाज और देश खड़ा है। इस ज़िन्दगी का असर यहीं तक नहीं, इसकी लपेट में सब कुछ है।

सुरेश : ऐसा मैं नहीं सोचता।

अर्चना : यहीं से वह भीड़ शुरू होती है, जो एक जगह से दूसरी जगह बढ़ती, फलती हुई इतनी भयंकर और विकराल होती जाएगी कि इसकी गंदगी और गुरबत में कोई भी साँस नहीं ले पाएगा। अभी तो शहर बंद हो रहे हैं, फिर सब कुछ बंद होगा।

सुरेश : ये बातें ये लोग सोचेंगे या हम ?

अर्चना : ये लोग कहाँ से सोचेंगे ? इसके लिए न इनके पास वक्त है, न कोई साधन है, न कोई परिस्थिति है।

सुरेश : तो इनके सोचने का काम भी हम करें ?

अर्चना : आपका ख्याल है, आप सोच भी सकते हैं ? आप अपने स्वार्थों के अलावा और कुछ भी नहीं सोचते। आप मुझसे शादी करना चाहते हैं, पर क्यों करना चाहते हैं, यह मुझे मालूम है। जैसे बिना किसी मतलब के यह झोंपड़ी-झुग्गी की ज़िन्दगी है, वैसे बिना किन्हीं आदर्शों के हमारी शादियाँ हैं।

[रामी के बच्चे एक-एक करके जगते हैं और रोना शुरू करते हैं। इसी दृश्य पर पर्दा गिरता है। रामी अपने बच्चों को चुप करने के प्रयत्न में है। कुछ क्षणों बाद फिर वही दृश्य—श्रीमती रंजन की बैठक। सुबह का वक्त है। अर्चना पूरी बैठक और डाइनिंग टेबल को ठीक करने में लगी है।]

रंजन : (भीतर से प्रवेश करते हुए) आज अखबार नहीं आया ?

अर्चना : शहर बंद है डैडी !

रंजन : रामी या पंचम भी नहीं आए ?

अर्चना : जैसे रामी को आराम की सख्त ज़रूरत है, वैसे आज यह पूरा शहर···।

राज : (निकलती हैं) अब तक दूध भी नहीं आया क्या ?

अर्चना : आज नींबू की चाय पीजिए ममी ! आज तो आप को दफ्तर भी नहीं जाना है।

राज : यही तो और मुसीबत है, घर में बैठकर 'बोर' होऊँगी।

[अर्चना दोनों को चाय देती है।]

राज : (चाय पीती हुई) क्यों बेटी, तुमने सुरेश को क्या कह दिया ? वह कहता था, तुमने उसका अपमान किया।

अर्चना : बिना मुझसे पूछे, ममी, आपने सुरेश से शादी की बात क्यों की ?

राज : तुम दोनों की दोस्ती देखकर।

रंजन : कैसी दोस्ती ? मेरी बेटी सबसे मिलती-जुलती है। सुरेश से इसकी कोई बराबरी नहीं। उसके विचार अलग। उसके स्वभाव-संस्कार अलग।

राज : क्या बातें करते हो ?

रंजन : उसकी कोई समझ नहीं। वह सबको मारकर, आग लगाकर समस्याओं का हल सोचता है। वह 'डिक्टेटरशिप' चाहता है।

राज : पर इन बातों से शादी में क्या रुकावट पड़ जाती है।

[अर्चना हंस पड़ती है। भीतर से दिनेश आता है।]

दिनेश : तो क्या आज सचमुच शहर बंद है ?

अर्चना : तो क्या आज सचमुच आपको इस बात की चिन्ता हुई है ?

दिनेश : बिल्कुल ! आज ठीक साढ़े नौ बजे से मेरा एक मैच था क्रिकेट का।

राज : अच्छा है, लोगों की भीड़ आज घरों में रहेगी।

रंजन : पर आज लोग दिन-भर घर में बैठे-बैठे खाएंगे।

अर्चना : जिनके पास खाने को नहीं है, वे भूखे रहेंगे।

राज : कभी-कभी उपवास भी रखना चाहिए।

रंजन : उनके लिए उपवास बहुत जरूरी है, जिनके पेट जरूरत से ज्यादा भरे रहते हैं। जो बेवक्त, बिना समझे-बूझे हर वक्त खाते हैं।

राज : जो जितना कमाएगा उतना खाएगा।

अर्चना : बैल और मजदूर सबसे ज्यादा कमाता है और सबसे रद्दी भोजन खाता है।

राज : मुझसे जबान लड़ाती हो।

दिनेश : अच्छा, मैं जरा शहर की खबर ले आऊँ, वरना मैं भी ममी के गुस्से की चपेट में···।

राज : दीपू !

[दिनेश हँसता हुआ बाहर भागता है। अर्चना चौके में जाती है।]

रंजन : अच्छी जिन्दगी के लिए पहले अच्छी समझ जरूरी है—चाहे वह शादी हो, नौकरी हो, घर-गृहस्थी हो। सारी अच्छी चीजें मिलकर अच्छे जीवन की तस्वीर बनाती हैं। विचार, समझ पूरी जिन्दगी की बुनियाद है। सुरेश को अर्चना ने नहीं चाहा, मुझे यही उम्मीद थी अपनी बेटी से।

रा : मेरी और आपकी समझ में फर्क है, पर क्या हमारी घर-गृहस्थी और जिन्दगी ठीक नहीं है ?

रंजन : उतनी ही ठीक है, जहाँ तक हम दोनों साथ हैं। जहाँ तक हम दोनों ने मिलकर अपनी जिन्दगी और घर-गृहस्थी का सपना देखा और उसे अपनी कोशिशों से

साकार किया। जिस हद तक हममें अलगाव है, विचारों की दूरी है, हमारी जिन्दगी की तस्वीर उतनी टेढ़ी है।

[सुरेश आता है बाहर से।]

राज : अरे सुरेश ! तुम कहाँ से ?

रंजन : कैसे आए ? कहाँ से ?

राज : तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना ?

सुरेश : बिल्कुल। रात-भर जागता रहा हूँ।

राज : कहाँ ? क्यों ?

सुरेश : रामी और पंचम की उसी झुग्गी-झोंपड़ी वाली गंदी अँधेरी दुनिया में घूमता रहा। कल रात आपसे टेलीफोन पर बात करने के बाद, मैं फिर अपने घर में नहीं रह सका। उसी दुनिया में फिर वापस चला गया, जहाँ मुझे अर्चना ले गई थी।

[अर्चना आती है।]

अर्चना : क्या हुआ ?

सुरेश : मैंने देखा—आधी रात को पंचम ड्यूटी से लौटकर शराब पीकर आता है। बीमार रामी को पीटने लगता है। सारे बच्चे चीखते हैं। मैं पंचम को पकड़ता हूँ। तब तक देखता क्या हूँ, आवारा लड़कों की एक भीड़ मुझे घेर लेती है। वे मुझे लूटने लगते हैं। मैं सुनता हूँ—लोग कह रहे हैं—'कल शहर बंद है, कल हम खाएँगे क्या ? हमें एक अच्छा शिकार मिल गया।' मैं मनुष्य नहीं, उनके लिए शिकार था। मैंने घूम-घूमकर उस बस्ती में जहालत, गरीबी, और गंदगी के जो-जो नज़ारे देखे, मुझे लगा, मैं पागल हो जाऊँगा।

राज : पर तुम वहाँ गए क्यों ?

सुरेश : मैं देखना चाहता था, अर्चना जहाँ रोज अकेले समाज-सेवा के लिए जाती है, वहाँ की सच्चाई क्या है ?

अर्चना : हाँ, मैंने यह भी कहा था—अगर हमारे निचले अंग में रोग है, तो हमारा ऊपर का अंग, वह चाहे जितना साफ-सुथरा हो, धनी और अमीरी का हो, वह कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकता। यह देश, यह समाज एक वृक्ष की तरह है, अगर इसकी जड़ मज़बूत नहीं है, तो इसमें कभी कोई फल नहीं लगेगा।

सुरेश : और अभी मैं उधर से देखता आ रहा हूँ—उन झुग्गी-झोंपड़ियों से तमाम बेपनाह लड़कों की भीड़ उधर की सड़कों पर आते-जाते मुसाफिरों को लूट रही है। बसों, कारों में आग लगा रही है। दुकानों पर पत्थर फेंक रही है।

[दिनेश दौड़ा हुआ आता है।]

दिनेश : मम्मी, डैडी ! बंद कर लो दरवाज़े-खिड़कियाँ। बहुत बड़ी भीड़ है। न जाने कहाँ से कितने लोग आ रहे हैं। घरों में घुसकर खाने-पीने के सामान लूट ले रहे हैं।

[रंजन, राज और दिनेश सब बंद करते हैं।]

अर्चना : अब शहर बंद होने का मतलब है, घर बंद होना।

सुरेश : नहीं। पहले आबादी की भीड़ से लोगों के छोटे-छोटे गन्दे गरीब अँधेरे घर बंद हैं, तभी शहर बंद हुआ। और अब सारे घर बंद होंगे।

[बाहर से शोर सुनाई देने लगता है।]

दिनेश : (शीशे से देखता है) पापा ! लोग हमारा किचन गार्डन लूट ले रहे हैं।

अर्चना : लोग भूखे हैं, सब्जियाँ, फल-फूल खा रहे हैं।

राज : देखते क्या हो, पुलिस को टेलीफोन करो।

रंजन : (फोन करते हैं) हेलो···पुलिस ! पुलिस··· (रखना) टेलीफोन लाइन कट गई है।

[दरवाजे पर दस्तक।]

राज : मत खोलना दरवाजा। हर्गिज नहीं।

[दस्तक तेज होने लगती है।]

अर्चना : पर हम कब तक अपना घर इस भीड़ से बंद रख सकते हैं।

राज : पर यह हमारा घर है।

अर्चना : वह भीड़ भी हमारी है।

रंजन : लगता है, वे लोग दरवाजा तोड़ देंगे।

सुरेश : मैं देखता हूँ।

राज : नहीं।···दीपू, भीतर से पिस्तौल ला।

[दीपू भीतर से पिस्तौल लाता है।]

राज : पिस्तौल में गोलियाँ भर ले।

अर्चना : नहीं। (पिस्तौल छीन लेती है) सुरेश, खोलो दरवाजा। देखो कौन हैं ?

[सुरेश दरवाजा खोलता है। रामी और पंचम के साथ उनके पाँचों बच्चे दरवाजे के भीतर बढ़ते हैं।]

राज : नहीं। मेरे घर में इतनी जगह नहीं। चलो जाओ यहाँ से। नालायक ! गन्दे ! बदमाश ! पागलों की तरह बच्चे पैदा कर पहले अपना घर बंद करते हैं, फिर भीड़ से शहर बन्द होता है। और अब हमारे घर···। निकल जाओ। चले जाओ।

[श्रीमती राज चीख रही हैं। बाहर शोर बढ़ रहा है। बाकी सब एक-दूसरे को चुपचाप देख रहे हैं।]

[पर्दा]

गरीब अँधेरे घर बंद

ूट ले रहे हैं।

टेलीफोन लाइन कट

कौन है ?

बच्चे दरवाजे

ापक ! गन्दे !
करते हैं, फिर
जाओ। चले

एक-दूसरे को

अप्रासंगिक

पात्र

अध्यापक
कुछ छात्र
प्रोफेसर कुमार

[उल्टी हुई मेज, कुर्सियों के पीछे, सहारे, उनमें छिपे हुए विद्यार्थी जैसे कुछ सो रहे हैं, कुछ आपस में बातें कर रहे हैं, कुछ चुपचाप सिगरेट पी रहे हैं। अध्यापक आता है। क्लास लेने की पूरी तैयारी के बाद]

अध्यापक : कृपा कर आप लोग ठीक से बैठ जाइए। यह विश्वविद्यालय है, इतिहास की क्लास, जिसे आराम करना है, वह घर जाए। जिसे सोना हो, वह यहाँ से चला जाए। यह क्लास है' मज़ाक नहीं। सिगरेट बाहर जाकर पीजिए। जिसकी तबीयत खराब हो वह मेडिकल चेकअप कराए। जिसे मानसिक रोग है, वह···

पहला छात्र : जिसे, इनमें से कुछ भी न हो, वह कहाँ जाए ?

अध्यापक : इत्ता अच्छा मज़ाक, इन्हें हँसी भी नहीं आई। हमारे ज़माने में, क्लास में कोई बात हुई नहीं कि ठहाके। वैसे हमारे क्लासों में इस तरह की बातें असम्भव थीं।

दूसरा छात्र : क्या वक्त हो रहा है ?

अध्यापक : गौर कीजिए। घड़ी बाँधे हैं, मगर खुद वक्त देखने की जहमत कौन करे।

तीसरा छात्र : यार, इससे कहो, चला जाए यहाँ से। बेमतलब चाँव-चाँव करता है।

चौथा छात्र : सिर खा रहा है।

पाँचवाँ छात्र : इरेलिवेंट, नानसेंस ! (विराम)

अध्यापक : याद है, हम क्या पढ़ रहे थे ?

[विद्यार्थी शोर मचाते हैं—कुछ शब्द—डिकेडेंट, बुर्जुआ, रियक्शनरी, शटअप]

अध्यापक : तुम लोगों में इतना चारित्रिक पतन ! (शोर) यह विद्यालय है···ज्ञान-केन्द्र। यह वह पवित्र स्थान है, जहाँ हमारे पूर्वजों ने साधना की है। यह उन महान, त्यागी अध्यापकों, शिक्षाशास्त्रियों, विचारकों का स्वप्न है कि भावी पीढ़ी को प्रकाश मिलता रहे—('फ्राम डार्कनेस टू लाइट'···) 'ज्योतिर्मय गमय···'

[शोर—'फ्राम लाइट टू डार्कनेस'···'देयर वाज़ नेवर लाइट']

अध्यापक : शर्म करो शर्म। हम भी विद्यार्थी थे तुम्हारी उमर में। हम भी तब जवान और विद्रोही थे। पर उसके लिए पूरी तैयारी चाहिए—अच्छा स्वास्थ्य, उम्दा चरित्र···ऊँचे उद्देश्य···पवित्र भावना।

[शोर उठता है।]

अध्यापक : देखो अपना स्वास्थ्य। देखो अपने चेहरे—बुड्ढों जैसी शक्ल। आँखें धँसी हुई। दिन-रात सिगरेट, चरस, कॉफी और न जाने क्या-क्या ? यही है तुम्हारा 'प्रोटेस्टव'।

[शोर]

अध्यापक : कौन है ? कौन है, जिसके खिलाफ तुम्हारा यह विरोध है।

[शोर और कागज के हथगोले अध्यापक पर फेंकते हैं।]

अध्यापक : तुम लोगों में अगर चरित्रबल है तो सामने आओ। सीधे बातें करो मुझसे, अगर साहस है तो।

पहला छात्र : चले जाओ यहाँ से। वरना हम खुद तकलीफ करके चले जाएँगे।

अध्यापक : मुझे अफसोस है, तुम हमारे विद्यार्थी हो ?

दूसरा छात्र : हमें अफसोस है, तुम हमारे टीचर हो।

अध्यापक : टीचर से बात करने का यही ढंग है ? बुझाओ सिगरेट। यह क्लास रूम है, कॉफी हाउस नहीं।

तीसरा छात्र : क्या मतलब है इस पढ़ाई का ?

अध्यापक : पढ़ाई का मतलब है ज्ञान, तहज़ीब और सभ्यता की समझ।

चौथा छात्र : इन बातों से नौकरी नहीं मिलती।

[शोर]

अध्यापक : साइलेंस···साइलेंस। बताओ तुम लोग अभी से नौकरी क्यों करना चाहते हो ?

पहला छात्र : हम नौकरी नहीं, परिवर्तन चाहते हैं।

दूसरा छात्र : परिवर्तन नहीं, क्रांति चाहते हैं।

तीसरा छात्र : जी नहीं, हम कुछ नहीं चाहते।

[हँसी]

पाँचवाँ छात्र : क्योंकि नौकरी के अलावा यहाँ और कुछ नहीं है।

पहला छात्र : मेरी गर्लफ्रेंड चाहती है कि मैं नौकरी करूँ।

अध्यापक : आर्डर, आर्डर। यह हिस्ट्री की क्लास है···इंडियन हिस्ट्री···स्टैंड अप। खड़े होकर बातें करो।

दूसरा छात्र (खड़ा होकर) हाई स्कूल तक पढ़ते-पढ़ते जी ऊब गया ('बोर' 'बोर' का शोर) सोचा खेती करूँ, पर वहाँ भी जी नहीं लगा। सीधे बम्बई भागा, खूब धक्के खाकर लौटा। सोचा, आगे पढ़ूँ—वक्त काटने के लिए। साइंस का विद्यार्थी था सेकेंड क्लास, सो बी० एस-सी० में दाखिला न मिला, सो बी० ए० में खिसक आया, सोचता रहा—हिस्ट्री की जगह पर इकनॉमिक्स लूँ, या लिटरेचर, या उसे भी छोड़कर कामर्स। या सब कुछ छोड़कर 'डिप्लोमा इन बुकबाइंडिंग' या···या

···और···या···तो···हाँ···या···

अध्यापक : 'डोंट ड्रिफ्ट···कम टू द प्वाइंट'।

दूसरा छात्र : 'प्वाइंट' तो कभी मिला ही नहीं सर !

तीसरा छात्र : (खड़ा होकर) सर, 'ड्रिफ्ट' के क्या माने ? यही अल्फाज़ बार-बार मैंने अपने डैडी के मुँह से सुना है।

[शोर—'ड्रिफ्ट के क्या माने···ह्वाट डू यू मीन' ?]

अध्यापक : रुको···डिक्शनरी देखता हूँ। (देखता है) ड्रिफ्ट माने बहाव, प्रवाह, रुख, गति, अनियमित गति, धारा, तेज़ बहाव के कारण जहाज का अपने रास्ते से भटक जाना, चक्कर काटती हुई चीज़ का अपनी बुनियाद से हट जाना। फेंकी हुई वस्तु का बह जाना। जंगल का कानून। समय के साथ बहना। छेद करना। या छेद को बड़ा करते रहना। चुपचाप बैठे रहना। हस्तक्षेप न करना। (अलग) समझ गए ?

सभी : नहीं···बिल्कुल नहीं।

[शोर]

अध्यापक : मतलब भटकना। इधर से उधर—वही, जो तुम लोग कर रहे हो।

[दूसरा छात्र 'ड्रिफ्ट' का अभिनटन करना शुरू करता है—धीरे-धीरे शेष सभी छात्र ड्रिफ्ट के विभिन्न अर्थों के अभिनटन करने लगते हैं।]

अध्यापक : 'स्टाप। स्टाप दिस नानसेंस !'

[अध्यापक बढ़कर दूसरे छात्र को पकड़ लेता है।]

अध्यापक : सुशील ! तुम प्रोफेसर कुमार के लड़के हो ? चलो उनके पास। तुम्हारा यह चारित्रिक पतन !

[खींचकर ले जाना। शोर। छात्र मेज-कुर्सियाँ लिए बाहर चले जाते हैं। संगीत या अंधकार। प्रकाश आते ही अध्यापक का प्रवेश। हाँफते, लँगड़ाते हुए।]

अध्यापक : (दस्तक देते हुए) प्रोफेसर कुमार ! कुमार साहब !

[प्रोफेसर कुमार का प्रवेश]

प्रोफेसर : देखिए, इस समय मैं बहुत 'बिजी' हूँ। आपको पहले से वक्त लेकर आना चाहिए। इस वक्त मैं एक 'मेमोरेंडम' तैयार करने में लगा हूँ। मुझे अभी वी० सी० से मिलने जाना है। मैं पी० वाइसचांसलर बनने की कोशिश में हूँ···

अध्यापक : मैं एक बहुत सीरियस सवाल लेकर आया हूँ।

प्रोफेसर : मैं बहुत 'इम्पार्टेंट' काम में लगा हूँ। मेरे पास बिल्कुल वक्त नहीं है। मेरा नया बंगला बनकर तैयार हो गया है, मुझे उसके 'इन्टीरियर डेकोरेशन' के लिए एक कांट्रेक्टर से मिलना है। मेरे पास बिल्कुल वक्त नहीं।

अध्यापक : सुनिए, लड़कों ने मुझे मारा है। आपके साहबजादे सुशील ने मेरे खिलाफ क्लास के लड़कों को भड़काकर मेरी यह दशा की है।

प्रोफेसर : आप भी इन लड़कों के मुँह क्यों लगते हैं ?

अध्यापक : मैं हिस्ट्री की क्लास लेने गया···

प्रोफेसर : क्लास क्यों लेते हैं ? जब 'एटेंडेंस कम्पलसरी' नहीं रहा तो आप लोग खामखा क्लास क्यों लेते हैं ? समझते क्यों नहीं, वक्त बदल गया।

अध्यापक : सर, मेरी नौकरी। मैं अभी 'कन्फर्म' नहीं हूँ।

प्रोफेसर : क्लास लेने से 'कन्फर्मेशन' नहीं मिलती—कैसे समझाया जाए आपको ? आपकी जाति क्या है ?

अध्यापक : गुप्ता। वैश्य।

प्रोफेसर : किस प्रांत के हैं ?

अध्यापक : यू० पी०।

प्रोफेसर : सारा गड़बड़ है। आपको हरियाणा प्रांत का क्षत्री होना चाहिए। आप किसकी सिफारिश से यहाँ आए थे ?

अध्यापक : सर, आप ही मेरे प्रोफेसर हैं। मैं 'थ्रू आउट फर्स्ट क्लास' हूँ। आप ही ने मेरा सेलेक्शन किया। सुशील आपका इकलौता लड़का है। आप ही ने मुझे उसकी ज़िम्मेदारी दी। यह बुरी संगत में पड़कर···आपके पास ला रहा था। वक्त बदला नहीं है, रुक गया है और···

प्रोफेसर : मुझे नहीं पता था, आप यू० पी० के वैश्य हैं।

[सन्नाटा]

अध्यापक : जी।

प्रोफेसर : आपको नौकरी करनी है या नहीं ?

अध्यापक : बिल्कुल करनी है।

प्रोफेसर : फिर आपको होशियारी से एक काम करना है।

अध्यापक : यस सर !

प्रोफेसर : प्रोफेसर महाजन···पोलिटिकल साइंस के प्रोफेसर के खिलाफ लड़कों को भड़काना है। उनके चरित्र के खिलाफ कैम्पस-भर में पोस्टर्स लगने हैं। उनके कमरे में घेराव···फिर वी० सी० के पास लड़कों का एक शानदार जुलूस। नये नारे आप तैयार कीजिए।

अध्यापक : पर···लेकिन सर।

प्रोफेसर : हाँ, हाँ, प्रोफेसर महाजन के खिलाफ 'प्वाइन्ट्स' मैं दूंगा। डरने की कोई बात नहीं। वी० सी० उसको बहुत मानता है। दोनों 'राइट रियक्शनरी' हैं। इसलिए वी० सी०, महाजन को ही पी० वी० सी० बनाना चाहता है। पर बनना है पी० वी० सी० मुझे। क्या समझे ?

अध्यापक : यस सर !

प्रोफेसर : आपने किस विषय पर रिसर्च किया है ?

अध्यापक : अभी कर रहा हूँ सर···विषय है 'औरंगजेब और उसका काल'।

प्रोफेसर : फिर तो यूनिवर्सिटी के सारे हालात आपकी समझ में आसानी से आ जाने चाहिए।

अध्यापक : मगर सर···मैं एक पढ़ने-लिखने वाला···

प्रोफेसर : इस नौकरी में क्यों आए ?

अध्यापक : ओवर एज हो गया। आई० ए० एस० में हमेशा 'क्वालीफाई' करता रहा···पर।

प्रोफेसर : मेरे पास फजूल का वक्त नहीं। यह नौकरी करनी है या नहीं ? मुँह क्या देख रहे हैं। मैं वादा करता हूँ कि आपका भविष्य उज्ज्वल है।

[अध्यापक चुप खड़ा है। रूमाल से अपनी आँखें पोंछता है। एक किनारे सुशील दिखाई पड़ता है।]

अध्यापक : सर, बात यह है कि···मुझे अफसोस है।

प्रोफेसर : हाँ, हाँ, मुझे मालूम है, इस काम में कुछ धन की जरूरत पड़ेगी। लड़कों को देना पड़ेगा। उन्हें खिलाना-पिलाना पड़ेगा। कागज, छपाई, पोस्टर्स वगैरह-वगैरह ···मेरा ख्याल है, पाँच सौ रुपये में काम चल जाएगा। कम पड़ जाए तो कोई चिंता मत कीजिए। बहुत ही सावधानी और टैक्ट से यह सारा काम करना होगा। कहीं से किसी को जरा-सी भी शंका न हो।

अध्यापक : सर, मैं यह कहना चाहता हूँ—आप जैसे लोग···

प्रोफेसर : सब ठीक हो जाएगा। आज से आप मेरे खास आदमी हैं···आपको एक दिन मेरी जगह लेनी है। आप प्रोफेसर होंगे। मैं दो साल बाद वाइस चांसलर हूँगा। ये लीजिए पाँच सौ। मैं कहता हूँ, लीजिए इसे।

[अध्यापक चुप खड़ा है, जैसे चीखकर रो पड़ेगा। तभी सुशील झपटता है और प्रोफेसर के हाथ से पैसे छीन लेता है।]

प्रोफेसर : सुशील !

सुशील : यस डैडी !

प्रोफेसर : इधर लाओ पैसे।

सुशील : गिन रहा हूँ, डैडी !

प्रोफेसर : देते हो या नहीं ?

सुशील : बेफिकर रहिए डैडी, मैं इन्हें दे दूंगा।

प्रोफेसर : बकवास बंद करो।

सुशील : डैडी, आप बहुत अच्छे हैं। प्रसिद्ध स्कालर। क्या-क्या किताबें लिखी हैं इन्होंने ? सर, बताइए न !

अध्यापक : 'अशोक महान', 'राइज एंड फाल आफ मराठाज', 'ईस्ट इंडिया कंपनी',

'वारेन हेस्टिंग्स···', 'प्लासी का युद्ध'।

सुशील : 'एंड ए सिम्पल हिस्ट्री आफ इंडिया'। वही तो हमारी पाठ्य पुस्तक है।

[प्रोफेसर आवेश में सुशील को पकड़कर पैसे छीनना चाहते हैं। संघर्ष]

सुशील : खबरदार डैडी, वहीं बैठे रहिए। मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं आपकी इज्जत करूँ। आपकी विद्वत्ता का, चरित्र का···(हँस पड़ता है) आप समझते हैं, इतने पैसे हमारे लिए काफी हैं? ये पैसे हम आज ही शाम को जलाकर स्वाहा कर देंगे। फिर कल क्या होगा? हर आने वाला कल हमें डराता है। और हर आज हमें पागल बनाता है। तभी हम एक क्षण से दूसरे क्षण तक महज 'ड्रिफ्ट' करते हैं। आपने इन पच्चीस वर्षों में सिर्फ पैसे कमाए हैं। और हम आवारा होते रहे हैं। आपने हमें क्या दिया? हमारी कीमत सिर्फ यही है? इतनी? अभी पिछले दिनों के 'बाई इलेक्शन' में एक वोटर की क्या कीमत थी, पता है डैडी? पचास रुपये और एक बोतल। हमारी कीमत यह है? जवाब दो, हमारे होने वाले पी० बी० सी०, बी० सी०, ए० बी० सी० डी० ई० एफ० जी०···एच० आई० जे० के०।

अध्यापक : सुशील!

सुशील : सर, आप चुप रहिए···आपको नौकरी करनी है।

अध्यापक : तुम्हें नहीं करनी है?

सुशील : हमें कुछ नहीं करना है। कर तो हमारे डैडी लोग रहे हैं। हम इन्हीं की संतान हैं। हेलो डैडी!

[तेजी से चला जाता है। प्रकाश बुझता है। जैसे ही फिर प्रकाश आता है, वही क्लास रूम का दृश्य। छात्र अपनी मेज-कुर्सियाँ, लिए आते हैं। अध्यापक का प्रवेश।]

अध्यापक : दोस्तो! भारतीय इतिहास में वह कौन-सा बिन्दु है, जहाँ से हमारा पतन शुरू हुआ? छठी शताब्दी, बिल्कुल ठीक, जब हम पर विदेशी आक्रमण शुरू हुए और हम कायर होकर अंधविश्वासों और पराजय की अंधी घाटियों में छिपने को मजबूर हुए। नहीं-नहीं, बाहरी आक्रमणों से देश जगता है। लोगों में वीरता आती है। लोग एकता की डोर में बँधकर दुश्मन से लड़ते हैं। फिर वह बिन्दु क्या है? हाँ, बिल्कुल सही, याद आया, इस मुल्क पर इतने लम्बे अरसे तक मुसलमानी राज्य। नहीं, यह भी गलत है। मुसलमान तो इसी मुल्क का अंग हो गया—लाल किला, ताजमहल, फतेहपुर सीकरी। तो? हाँ, अंग्रेजों की गुलामी। नहीं-नहीं, अंग्रेज न आए होते तो हम सोते ही रहते। फिर? हाँ, याद आया, बिना क्रान्ति के दान में हमें आजादी जो मिल गई। नहीं, यह भी नहीं। बिल्कुल गलत। हाँ, यह सही है, आजादी के बाद इस मुल्क पर लगातार सिर्फ एक ही पार्टी का राज्य बना रहे···नहीं-नहीं, यह भी नहीं···हाँ, हाँ। नहीं।

सुशील : सर! डोन्ट ड्रिफ्ट।

[सब गाते हैं, 'इस दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई इधर गिरा, कोई उधर गिरा']

अध्यापक : कौन हो तुम लोग ?

सुशील : मेरा नाम सुशील है—मैं प्रोफेसर कुमार का लड़का हूँ। कम से कम ऐसा कहा जाता है।

दूसरा छात्र : मेरा नाम पंकज कुमार है, मेरे डैडी कांट्रेक्टर हैं। कहते हैं, 'बेटे, ऐश करो।'

तीसरा छात्र : मेरा नाम अमलेंदु है—मेरे पिता फूड एंड एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री में ज्वाइंट सेक्रेट्री हैं।

चौथा छात्र : मेरा नाम पवन मेहरोत्रा है, सर ! मेरे पापा इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट का धंधा करते हैं।

पाँचवाँ छात्र : मेरा नाम विजय कपूर है। मेरे पिता 'इस्मगलर' हैं।

सुशील : मेरे डैडी गांधीजी की दांडी यात्रा में गए थे, नमक सत्याग्रह।

दूसरा छात्र : मेरे पापा हर पोलिटीकल पार्टी को चंदा देते हैं।

तीसरा छात्र : मेरे घर में सिर्फ अंग्रेजी बोली जाती है।

चौथा छात्र : मेरे यहाँ हर चीज इम्पोर्टेड है—ऐशट्रे से लेकर कार तक।

पाँचवाँ छात्र : मुझे मेरे पिता का नाम ही नहीं मालूम। दरअसल उनके अनेक नाम हैं—कई भाषाएँ बोलना जानते हैं ?

सुशील : सर, आपके डैडी क्या करते हैं ?

अध्यापक : मैं उन्हें पिताजी कहता हूँ, डैडी नहीं।

सुशील : आप कुछ परेशान-से लगते हैं।

अध्यापक : तुम लोग आज इतने शांत क्यों हो ?

सुशील : हम हफ्ते में एक दिन शांत रहते हैं।

अध्यापक : वह कौन-सा दिन होता है ?

सुशील : वह दिन भी चक्कर काटता रहता है।

[विराम]

अध्यापक : अच्छा यह बताओ, जो शब्द तुम लोग बोलते हो उसका अर्थ जानते हो ?

सुशील : मैं बता दूं, सर ?

अध्यापक : (डर जाता है) नहीं-नहीं, तुम चुप रहो। तुमने किसी को बताया तो नहीं ? कितनी बेशर्म बात है।

सभी : क्या ? क्या बात ? क्या है ?

सुशील : एक मुर्गी थी, उसने अंडा दिया। नहीं-नहीं। एक अंडा था, उसमें से एक मुर्गी निकली। मुर्गी ने अंडा दिया। अंडे में से दूसरी मुर्गी निकली। हें हें हें हें !

दूसरा छात्र : हें हें हें ! कितनी बेशर्म बात है !

[विराम]

अध्यापक : तुम लोग कल क्या करोगे ?

सुशील : हममें से कोई एक फिर अपने डैडी से रुपए मारकर लाएगा और हम अपनी

शाम फूंकेंगे।

अध्यापक : तुम चुप रहो, सुशील !

दूसरा छात्र : हम कल आने नहीं देंगे।

तीसरा छात्र : मैं कल अपने डैडी के संग हाँगकाँग जाऊँगा ?

चौथा छात्र : सर, एक सिगरेट पीजिएगा ?

पाँचवाँ छात्र : सर, प्रोफेसर महाजन वाला पोस्टर हमने तैयार कर लिया है।

अध्यापक : क्या ? सुशील, यह क्या है ? तुमने बता दिया ? तुझे शर्म नहीं आई। तुम व्यक्ति की जगह मूल्यों की हत्या करते हो। कायर···बुज़दिल। निकल जाओ मेरे क्लास से। चले जाओ। 'गेट आउट'।

[सारे छात्र चुपचाप जाने को होते हैं।]

अध्यापक : रुको, सुनो। वे लड़के कहाँ गए जो पिछले दिनों होस्टल से लापता हो गए थे ? मुनीन्द्र, श्याम, रबी, शेखर, रोहित बनर्जी, कुसुम तिवारी, रेखा घोष, केदार सिंह···?

सुशील : सुना है, कुछ मार दिए, कुछ जेलों में हैं, कुछ लापता हैं, और कुछ आए हैं।

अध्यापक : तुम लोग कहाँ जा रहे हो ?

सुशील : अपनी नज़रों में गिरने।

अध्यापक : हम तुम्हारी नज़रों में नहीं गिरे हैं ? बताओ ? बोलो—हम तुम्हारी नज़रों में नहीं गिरे हैं ?

[सब हँसना शुरू करते हैं।]

अध्यापक : सुनो, सुनो। जहाज़ अपने रास्ते से भटक गया है। बहती हुई चीज़ अपनी बुनियाद से हटती जा रही है। हम छेद को बड़ा करते जा रहे हैं। इस तरह चुपचाप क्यों हो ? हस्तक्षेप क्यों नहीं करते ? उदास, निराश क्यों हो ?

[सब चुपचाप अध्यापक के चारों ओर घिर जाते हैं।]

अध्यापक : मुझे क्लास से बाहर क्यों नहीं कर देते ? खुद क्यों चुपचाप लापता हो जाते हो ? दूसरे जंगलों में क्यों जाते हो ? क्या यह कैम्पस जंगल नहीं ? विद्रोह जंगल में नहीं होता—'दिस इज़ ए प्वाइंट'। वह तुम्हारे भीतर होता है। यह हमारी साज़िश है कि हम सब मिलकर तुम्हें तुम्हारी नज़रों में गिरा रहे हैं। रोको। हस्तक्षेप करो। अधिकार माँगना विद्रोह नहीं। अधिकार ले लेना विद्रोह है। पतन छठी शताब्दी से नहीं, उस दिन से शुरू हुआ जिस दिन से हमने माँगना शुरू किया। माँगना। माँगना। वह कोई नहीं देता। कोई नहीं दे सकता। (**छात्र बैठकर अपनी कापियों पर नोट लेने लगते हैं**) यह क्या करते हो ? यह सब अप्रासंगिक है। प्रासंगिक केवल तुम हो···केवल तुम···तुम लोग···तुम···

[पर्दा]

खेल

पात्र

पहला युवक
दूसरा युवक
तीसरा युवक
युवक
युवती
आगंतुक

[खुला मंच। किसी पौराणिक या ऐतिहासिक नाटक का एक पुराना टूटा-फूटा 'सेट' न जाने कब से लगा हुआ है। रात का समय। मंच के विभिन्न भागों में पहला, दूसरा, तीसरा युवक चुपचाप उदास बैठे या लेटे हैं। युवती सबसे दूर बैठी है।]

दूसरा युवक : क्या यह मुमकिन नहीं है कि हम कोई खेल खेलें। नींद नहीं आ रही। रात भी काफी लम्बी है। मिल-बैठकर बात करने का न कोई बहाना है, न कोई गुंजाइश। कुछ वक्त कट जाएगा। बदन में गर्मी आ जाएगी। खेलने से थकान आएगी, फिर नींद आ सकती है।

पहला युवक : नींद न आना मेरी समस्या नहीं है।

तीसरा युवक : सवाल यह है कि मैं तुम्हारी बात क्यों मानूं?

युवती : मुझे खेल में कोई दिलचस्पी नहीं।

दूसरा युवक : अच्छी नींद न आना मेरी समस्या है। मैं तुम्हारी बात मान लूंगा। हिस्सा लेने मे दिलचस्पी पैदा हो सकती है।

पहला युवक : तुमने तीनों सवालों के जवाब दे दिए, अब खामोश रहो।

[सन्नाटा]

तीसरा युवक : यहाँ कुछ भी करो खेल बन जाता है।

दूसरा युवक : खेल के लिए किया ही जाता है।

तीसरा युवक : नहीं, खेल हो जाता है।

दूसरा युवक : खेल हमसे खेला जाता है।

पहला युवक : पर खेलने वाले हमीं होते हैं।

युवती : बकवास बन्द करो।

पहला युवक : चुप रहा भी तो नहीं जाता।

युवती : फिर अपना सिर धुनो।

पहला युवक : मैं वही कर रहा हूँ।

युवती : अच्छा चुप रहो।

[सब चुप हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद युवती हँसना शुरू करती है।]

पहला युवक : इन लड़कियों के लिए हँसना भी एक चुप्पी है।

[धीरे-धीरे सब हँस पड़ते हैं।]

पहला युवक : अब हम लोग अंदाज लगाना शुरू करें, कौन क्यों हँसा?

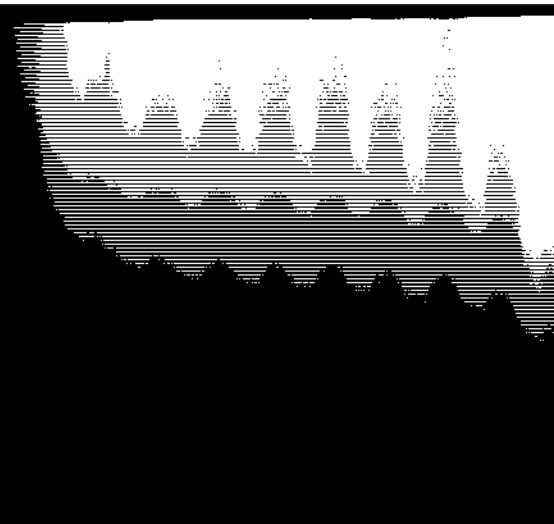

दूसरा युवक : हम कारण ढूंढ़ सकते हैं, पर उसका सही-सही पता नहीं लगा सकते।
तीसरा युवक : कारण ?
दूसरा युवक : पर बताया नहीं जा सकता।
युवती : इसी का नाम अनुशासन है।
पहला युवक : चलो अनुशासन खाएँ, अनुशासन पहनें, चलो। खेल ही तो है। देखें यह खेल कैसा लगता है।

[सब खाने और पहनने का अभिनटन करते हैं।]

युवती : (**चीखती है**) नहीं !
पहला युवक : क्या हो गया ?
युवती : मुझे लगा, मैं नंगी हो रही हूँ।
तीसरा युवक : मुझे लगा, इस खाने से मेरा पेट फट जाएगा।
युवती : इस बकवास से बेहतर है हम और कोई खेल खेलें।
दूसरा युवक : कोई नाटक क्यों न खेलें ?
युवती : दर्शक कहाँ हैं ?
तीसरा युवक : दर्शक के लिए कौन नाटक खेलता है ?
पहला युवक : अच्छा, कबड्डी खेलें।
दूसरा युवक : नहीं खो-खो।
युवती : नहीं 'आइस-पाइस'।
तीसरा युवक : दौड़ना भी खेल है।

[गोलाई में दौड़ना शुरू करता है। धीरे-धीरे सभी उसी परिधि में दौड़ने लगते हैं। पहले धीरे-धीरे, फिर तेज।]

पहला युवक : बस यार, मैं बहुत दौड़ चुका।
दूसरा युवक : हम अलग-अलग जगह से आए हैं।
तीसरा युवक : हमारी परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं।
पहला युवक : पर समस्या वही एक है।
युवती : मेरी साँस फूलने लगी।
दूसरा युवक : मेरे पैरों में साइटिका का दर्द उभर जाएगा।
तीसरा युवक : नाक से साँस लो।

[दौड़ फिर धीमी होने लगती है।]

दूसरा युवक : मैंने नाटक खेलने के लिए कहा था।
पहला युवक : फिर तुम नेशनल आफ ड्रामा की रियर्टरी से भागे क्यों ?
दूसरा युवक : कभी लगता है, मैं वहाँ से निकाल दिया गया। कभी महसूस होता है, मैं ऊबकर खुद चला आया। कभी लगता है, मैं अब भी वहीं जमा हूँ।
युवती : क्या ऐसा नहीं लगता कि हर जगह कोई न कोई नाटक खेला गया है। खिलाड़ी

कहीं अदृश्य थे, कहीं दृश्य ।

पहला युवक : मैं अब ऐसा कुछ करना चाहता हूँ ।

दूसरा युवक : करने के लिए 'कुछ' चाहिए।

[दौड़ना खत्म]

पहला युवक : क्या ?

दूसरा युवक : मैं गाँव से आया हूँ, मेरी बात नहीं समझ सकते । मेरे पिता जिले के सबसे बड़े नेता हैं। बी० ए० पास करते ही वह मुझे पुलिस की नौकरी दिलाने लगे। मैंने कहा—मैं आगे पढ़ूँगा। उन्होंने कहा—आज की पढ़ाई में कुछ नहीं रखा है। मैंने कहा—इसके जिम्मेदार आप नहीं हैं क्या ? वह तो मुझे मारने लगे धाँय··· धाँय···धाँय ।

तीसरा युवक : चलो धाँय-धाँय खेलते हैं ।

दूसरा युवक : घर से भागकर यहाँ चला आया। दो सौ रुपये महीने स्कालरशिप मिलती थी, इसलिए नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में भरती हो गया । साढ़े तीन सौ रुपये स्कूल की 'रिपर्टरी' में मिलते थे, इसलिए वहाँ घुस गया । कहीं कुछ स्पष्ट नहीं था, कहीं कुछ पूरा नहीं था, इसलिए अब तक यही लगा कि मिला सब, पर कुछ प्राप्त नहीं कर पाया । किया सब, पर कुछ कर नहीं पाया।

युवती : अच्छा, वह कुछ क्या होता है ?

दूसरा युवक : क्या होता है ?

पहला युवक : एक सिस्टम होता है। एक व्यवस्था होती है। मैं इसी शहर का हूँ । मेरे पिता 'बिजनेसमैन' हैं। पिता ने कहा—पढ़ो। मैं पढ़ने लगा । उन्होंने कहा—अब बिजनेस में आ जाओ। मैं बिजनेस में आ गया। उन्होंने कहा—निकल जाओ । मैं निकल आया। कहीं कुछ नहीं होता ।

दूसरा युवक : नहीं। यह 'कुछ' कुछ होता है।

पहला युवक : कोई आदर्श, कोई मूल्य ? कहीं कुछ नहीं है।

दूसरा युवक : कुछ है ।

पहला युवक : वह कुछ हमें कहीं नहीं मिला। कहीं नहीं देखा।

दूसरा युवक : माँगने वाले को भीख भी नहीं मिलती।

पहला युवक : तुम इतने उदीयमान अभिनेता, इतने कामयाब निर्देशक, स्कूल की नाटक-मंडली की इतनी अच्छी नौकरी, भागे क्यों ?

दूसरा युवक : नाटक में चरित्र का अध्ययन करते-करते आदत पड़ गई चरित्र खोजने की और जब वह नहीं मिला तो नींद हराम हो गई । फिर अपने चरित्र को देखा और वहाँ से भागना पड़ा। मेरे पास अपना कुछ नहीं। और कुछ नहीं का अहंकार, सबसे बड़ा अहंकार है।

तीसरा युवक : तुम नींद में बड़बड़ा रहे हो या···? मेरा कोई अहंकार नहीं है। मैं चाहता हूँ किसी ऐसी जगह पर पहुँच जाऊँ, जहाँ मैं अपने बाप से भी ज्यादा पैसे

बना सकूँ। भ्रष्टाचार कर सकूँ। 'करप्शन' की होली-दीवाली मनाऊँ।

युवती : और मैं इसके गले में जयमाला डालूँ। इसकी 'ब्लैक मनी' हथियाकर इसे तलाक दे दूँ और नारी स्वतन्त्रता पर एक पुस्तक लिखूँ।

पहला युवक : हाँ, ऐसा कुछ बोलना ज़रूरी है।

तीसरा युवक : तुम्हारी तरह।

युवती : तुमने मुझे धोखा दिया।

तीसरा युवक : हमारे माँ-बाप ने हमें धोखा दिया।

युवती : मुझे तुमने धोखा दिया।

पहला युवक : भाई कह दो—देने के लिए और कुछ नहीं था।

तीसरा युवक : हमारे टीचरों ने हमें धोखा दिया। पड़ोसियों ने, रिश्तेदारों ने, दोस्तों ने, प्रेमियों ने, प्रेमिकाओं ने।

युवती : शुरुआत तुम्हीं ने अपने-आप से की।

[कोई हँसता है, कोई जम्हाई लेता है।]

दूसरा युवक : बोरियत खत्म करो। सारा दिन यही चाँव-चाँव सुनने को मिलता है। चुप हो जाओ तो स्वगत कथन होने लगता है।

युवती : तो ?

दूसरा युवक : आओ कोई नाटक खेलें।

पहला युवक : किंग लियर या 'डमवेटर'।

दूसरा युवक : कुछ और नहीं सोच सकते ?

पहला युवक : तुम्हें और कुछ नहीं याद है।

दूसरा युवक : पर कुछ और याद करना चाहा है।

तीसरा युवक : पर तुमने और कुछ नहीं देखा।

दूसरा युवक : हाँ, मैंने देखना चाहा, पर देखा नहीं चंद्रगुप्त विक्रमादित्य, अशोक, महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द, गांधी। मैंने सुना, पर जाना नहीं उपनिषद्, वेदांत, गीता, रामायण, सावित्री, गांधी का सत्य···।

तीसरा युवक : क्या बक रहा है ?

युवती : इसे नींद नहीं आ रही।

दूसरा युवक : मैं जो अनुभव करता हूँ, उसे कह नहीं पाता। मेरे और उसके बीच तमाम चीज़ें, अनेक नाम और अनेक चेहरे अपने-आप आ जाते हैं। मसलन इसी वक्त की बात लो। मैं तुम लोगों से अपना एक ताजा, बिल्कुल अभी का एक अनुभव कहना चाहता हूँ···जो मेरे और 'बस' के 'कंडक्टर' के बीच हुआ। पर इस वक्त मेरे दिमाग में, कह लो मेरी चेतना में 'शेक्सपियर', बेकेट, 'मिस्टर जान बुल' चूँकि अभी पिछले दिनों वह नाटक मैंने देखा है, स्कूल के अध्यापक, मिस्टर मंसाराम, मेरे पिताजी घूम रहे हैं।

तीसरा युवक : कहना क्या चाहते हो ?

दूसरा युवक : यही तो जो कहना चाहता हूँ—बीच में इस भीड़ के नाते कह नहीं पाता। बीच में ही उलझ जाता हूँ। जहाँ पहुँचने के लिए चला था, वहीं का कहीं और ही फँस जाता हूँ।

युवती : खुद चले थे, या किसी ने धक्का दे दिया और लुढ़कते हुए इधर आ गए ?

दूसरा युवक : सच भी तो नहीं बोल सकता।

तीसरा युवक : सवाल आत्मसम्मान का भी तो है।

युवती : यह आत्मसम्मान क्या बला है ?

तीसरा युवक : आत्म क्या है ?

दूसरा युवक : उपनिषद् बचा दिया गया है।

युवती : वह हमें जानने की जरूरत नहीं।

दूसरा युवक : वह भी हम अंग्रेज़ी के 'थ्रू' जान सकते हैं। चारों तरफ कोई बीच में है।

युवती : जो बीच में है, उसे देखते हो ?

दूसरा युवक : सिर्फ महसूस करता हूँ, और कह नहीं पाता।

युवती : इस दर्द पर कभी रोना आया ?

दूसरा युवक : दर्द कहाँ होता है ? पर कुछ होता है, शब्द नहीं मिलता।

[जूता खोलकर कंकड़ झाड़ रहा है।]

पहला युवक : अच्छा एक कहानी सुनाता हूँ—समुद्र-मंथन की।

दूसरा युवक : यार, यह समुद्र-मंथन क्या होता है ? किसी अंग्रेज़ी किताब में पढ़ी तो थी। यार, यह अंग्रेज़ी भी खूब है, न जाने किस दुनिया में काटकर पहुँचा देती है।

पहला युवक : वही यार, बचपन में सुनी थी कहानी।

दूसरा युवक : अमृत के लिए समुद्र-मंथन किया जाए। हाऊ फैंटास्टिक ?

युवती : अच्छा तो बैठ जाओ।···क्यों नहीं बैठते ?

दूसरा युवक : अमृत-मंथन कहानी नहीं, नाटक है।

पहला युवक : बेटा, तो ले आओ शेषनाग, मंदिराचल पर्वत। मंदिराचल पर्वत को बाँधो शेषनाग से। फिर ले जाकर डालो समुद्र में पर्वत को। मुँह की ओर राक्षस, पूँछ की ओर देवता और मथो समुद्र को।

दूसरा युवक : पहाड़ भी है। समुद्र भी। राक्षस और देवता भी। केवल वही शेषनाग नहीं है।

युवती : उसकी कल्पना कर लो यार !

दूसरा युवक : शेषनाग तो सूत्र है। उसी से बाँधना होगा। उसी को पकड़कर···।

[सब अमृत-मंथन का अभिनटन शुरू करते हैं। सहसा पीछे सेट में से आगंतुक प्रकट होता है।]

आगंतुक : बिना मेरे कोई नाटक नहीं हो सकता ?

दूसरा युवक : कौन हो तुम ?

आगंतुक : मुझे नहीं पहचानते, कमाल है। वंडरफुल। लाहोलविलाकूवत। मैं चरित्र

हूँ। मेरा नाम आगंतुक है। पुराने नाटकों में मैं विदूषक था। आज आगंतुक हूँ। जहाँ चाहूँ जा सकता हूँ।

पहला युवक : कैसा आगंतुक ?

आगंतुक : जो चारों ओर है। जो कहीं भी आ-जा सकता है। जिसके लिए सारे रास्ते खुले हैं। जो खेल करता है। खेल कराता है। खेल रचता है। खेल बनाता है। खेल बिगाड़ता है।

तीसरा युवक : भूत ! भूत !

आगंतुक : मैं भूत हूँ। वर्तमान हूँ। यह मंच मेरा है, मैंने तुम्हारी तुम्हारी बातें सुनीं। खेल देखे। मैं यहीं पैदा हुआ। यह जगह मेरी है। कोई भी खेल मेरे बिना अधूरा है। मैं खेलता हूँ। तुम देखते हो, पर महसूस नहीं करते। महसूस करते हो, पर देखते नहीं। जानते हो, पर पहचानता मैं हूँ। सोते हो, जागता मैं हूँ। हर खेल का चरित्र मैं हूँ, तुम सब पात्र हो।

दूसरा युवक : अमृत-मंथन में तुम्हारा कौन-सा चरित्र है ?

आगंतुक : मैं चरित्र हूँ। भूमिका तुम्हारी है।

युवती : यह झूठ है।

आगंतुक : मैं वही चरित्र हूँ।

पहला युवक : कैसा चरित्र ?

आगंतुक : लार्ड कर्जन का भतीजा। वारेन हेस्टिंग्स का नाती। लार्ड माउन्टबेन का साला।

[न जाने कैसी-कैसी अंग्रेजी बोलने लगता है।]

दूसरा युवक : खामोश !

आगंतुक : हाऊ डू यू डू माई संस ? हाऊ आर यू ? हाय !

पहला युवक : यस सर !

दूसरा युवक : राइट सर !

दूसरा युवक : यह भूत है।

युवती : यह प्रेत है।

आगंतुक : मैं देवता नहीं, सुपर मैन हूँ। मैं राक्षस नहीं, हैवान हूँ। मैं धरती नहीं, पाताल हूँ। तुम स्वतंत्र हो, मैं आज़ाद हूँ। तुम काले, मैं सफेद हूँ। तुम दीवार, मैं रंग हूँ। मैं हवा, तुम पतंग हो। मैं वर्षा हूँ, अकाल हूँ। मैं लीला हूँ। मैं पीला हूँ। मैं उदास हूँ। तुम दास हो। मैं सोचता हूँ, तुम्हारे लिए। मैं करता हूँ, तुम्हारे लिए। मैं मंत्र हूँ, तुम स्वतंत्र हो। मैं तंत्र हूँ, तुम यंत्र हो। मैं हूँ, तुम बनते हो।

[संगीत बजता है। सब नृत्य करने लगते हैं। युद्ध का लोक-संगीत। आगंतुक से दूसरा युवक युद्ध करने लगता है। युवती तथा पहला और तीसरा युवक अपने-आपसे ही जूझ रहे हैं। सब बेहोश होकर गिरते हैं। आगंतुक चला जाता है।]

दूसरा युवक : (उठता है) ईश्वर ! देवताओ ! ऋषि-मुनियो ! पितामह महापुरुषो ! किसने कहा था निर्बाध बढ़ो अपने पथ पर, जब तक सूर्य आकाश के मध्य में न

आ जाए। जब तक हम सभी उन्नत मस्तक होकर यह नहीं देखें कि हमारी जंजीरें टूट गईं। (सहसा) क्या ? क्या ? मृत व्यक्ति फिर से नहीं जीता ? बीता हुआ दिन फिर से नहीं आता ? फिर हम तुम्हें पुकारते क्यों हैं ? कोई उत्तर नहीं। सब झूठ है क्या ? क्या कहीं कुछ भी नहीं ? सब कुछ मर चुका है ? नहीं, नहीं। कुछ नहीं। कुछ है। वह सूत्र कहाँ है ? कैसे बाँधूं ? कैसे खींचूं ? कुछ भी ऐसा याद करने लायक नहीं है क्या ? क्या है ? कहाँ है ? काल-समुद्र में हमारे पुरुषों ने अमृत-मंथन किया था। कहाँ है वह शेषनाग ? वह सूत्र ? और वह डोर ? वह शेषनाग···?

[सारे लोग किसी सूत्र के सहारे, फिर उसी सागर-मंथन का खेल करने लगते हैं। अचानक दृश्य (खेल) बदल जाता है। जैसे घर का दृश्य।]

पिता : आखिर बात क्या है ? कुछ बोलोगे भी ! तुम्हारा कुछ पता भी तो चले। यह घर है या होटल समझ रखा है। क्या है ?

तीसरा युवक : क्या होगा ?

पिता : वह मैं बताऊँगा।

तीसरा युवक : वह मैं क्यों नहीं बता सकता ?

पिता : चरित्र नहीं है ?

तीसरा युवक : यह किस चीज़ का नाम है ?

पिता : सुनो।

तीसरा युवक : अब कोई फायदा नहीं।

पिता : फायदा-नुकसान के अलावा भी कुछ होता है।

तीसरा युवक : सिर्फ उपदेश होता है।

[विराम]

पिता : आखिर बात क्या है ?

तीसरा युवक : कुछ नहीं।

पिता : कुछ है।

तीसरा युवक : पता नहीं।

पिता : तुम्हें किस चीज़ की कमी है ? तुम्हारी दिक्कत क्या है ? हमारे पास किसी चीज़ की कमी नहीं। धन-दौलत, बिज़नेस, सब कुछ है। इज्ज़त है। ताकत है। पढ़ाई में जी नहीं लगता तो अपने रोजगार में लग जाओ। नौकरी की इच्छा हो तो उसकी कमी नहीं। कहीं कुछ और बात हो तो बोलो।

तीसरा युवक : कुछ नहीं।

पिता : फिर तुम घर में क्यों नहीं होते ? क्या हालत बना रखी है अपनी ? माँ तुम्हारी परेशान है। वह नींद की गोली खाने लगी है।

तीसरा युवक : उसकी वजह आप हैं।

पिता : क्या कहा ?

तीसरा युवक : मुझे बोलने के लिए आपने मजबूर किया। मैं कुछ भी नहीं चाहता।
पिता : तुम्हारी बहन मीनाक्षी की वजह कौन है ?
तीसरा युवक : उसी से पूछिए।
पिता : मैं तुमसे पूछ रहा हूँ।
तीसरा युवक : खुद से क्यों नहीं पूछते ?
पिता : बकवास करते हो ?
तीसरा युवक : ऐसे ही लगता है।
पिता : कुछ कहने के लिए हिम्मत चाहिए।
तीसरा युवक : हिम्मत के लिए चरित्र चाहिए। चरित्र के लिए धैर्य चाहिए। धैर्य के लिए हवा चाहिए। हवा के लिए पानी चाहिए। बस बकते चले जाओ, जो चाहिए वह कभी नहीं मिल सकता।

[जाने लगता है।]

पिता : रुको।
तीसरा युवक : मत रोकिए। प्लीज, मान जाइए। कोई फायदा नहीं होगा।
पिता : आज मुझे कुछ फैसला करना है।
तीसरा युवक : फैसला तो तभी कर लिया था, जब आपने मुझे जन्म दिया। उस फैसले के अनुसार आपका काम भी पूरा हो चुका है अब तक। (रुककर) हमें सब चीजों से तोड़ देना ताकि हम सिर्फ रह सकें, कुछ कर नहीं सकें।
पिता : क्या करना था तुम्हें ?
तीसरा युवक : मत याद दिलाइए। घर में आते ही वही तो याद आने लगता है।

[मीनाक्षी आती है।]

पिता : रात के दस बज रहे हैं, घर लौटने का यह वक्त है ?
मीनाक्षी : डैडी, यह पूछिए, कहाँ थी अब तक ? वक्त मत देखिए। आप रात के डेढ़ बजे आते हैं, हमने कभी नहीं पूछा।

[जाने लगती है।]

पिता : रुको।
मीनाक्षी : मैं बेमतलब खड़ी नहीं रह सकती। मैं वक्त बर्बाद कर सकती हूँ, पर इस तरह काट नहीं सकती।
पिता : सुनो।
मीनाक्षी : मैं और ज्यादा 'बोर' नहीं हो सकती।

[सन्नाटा। ऊबकर मीनाक्षी एकाएक चीखती है। फिर पागलों की तरह हँसने लगती है।]

पिता : गेट आउट । गेट आउट फ्राम हियर । आई से गेट आउट ।

मीनाक्षी : डैडी, गुड नाइट ।

[चली जाती है ।]

पिता : इसकी वजह तुम हो । तुम्हारे दोस्त, उनकी सोहबत···।

तीसरा युवक : मैं हूँ ।

पिता : तो ।

तीसरा युवक : बात खत्म ।

पिता : तुम लोग इस घर में ठीक से रहोगे नहीं ?

तीसरा युवक : जी करता है, मैं भी एक सवाल पूछूँ । पर बात खत्म हो गई ।

पिता : अभी शुरू कहाँ हुई ?

तीसरा युवक : शुरू होने से पहले ही खत्म हो गई ।

पिता : कायदे से बात करो ।

तीसरा युवक : जब से होश सँभाला, कहीं देखने को नहीं मिला वह कायदा । कहीं नहीं देखा वह चरित्र । घर में आपको झूठ बोलते सुना । हमेशा यही कहते सुना—आज-कल चारों ओर भ्रष्टाचार है, लूट है, चोरी है, डाका है, झूठ है । स्कूल में अपने टीचर को यही कहते सुना । यही सब करते हुए देखा कालेज के अध्यापकों को । क्लास में मुझे एक दिन पाँच मिनट की देरी हो गई, मुझे क्लास में घुसने नहीं दिया । देखा वही अध्यापक रोज बीस मिनट 'लेट' आता था क्लास में । महीनों क्लास नहीं लेता था, कालेज में गंदी पॉलिटिक्स करता था । और वही टीचर वाइस चांसलर बन गया । आज वही राज्यसभा का मेम्बर है । (**विराम**) मैंने आज तक कहीं भी कोई चीज अच्छी नहीं देखी । गंदी खबरों से सारा अखबार भरा रहता था, अखबार पढ़ना छोड़ दिया । जो राजनीतिक पार्टियों में होता है, वही सब कालेज में होते देखकर कालेज छोड़ दिया । जो अपने साथियों से सुनता था, वही अपने घर में देखकर···।

[फिर वही अमृत-मंथन का खेल । खेलते-खेलते फिर दृश्य बदल जाता है ।]

पुरुष : इस फाइल पर यह एक्शन लेने को किसने कहा ?

पहला युवक : यह मेरी जिम्मेदारी थी ।

पुरुष : जिम्मेदारी क्या होती है ?

पहला युवक : जिसके लिए मैं यहाँ हूँ ।

पुरुष : किसलिए हैं ?

पहला युवक : काम करने के लिए ।

पुरुष : काम क्या होता है ?

पहला युवक : जो मैं करता हूँ ।

पुरुष : आप क्या करते हैं ?

पहला युवक : जो मैं सोचता हूँ।
पुरुष : आप क्या सोचते हैं ?
पहला युवक : बकवास बंद कीजिए।
पुरुष : शाबाश ! मैं यही देख रहा था, आपको कितने सेकेण्ड में गुस्सा आता है। आपने तो पूरे पचास सेकेण्ड ले लिए। आपको पता होना चाहिए, एक सिस्टम होता है। हम सब लोग उस सिस्टम के भाग होते हैं। तभी यह सिस्टम चलता है। आप उसके खिलाफ चले नहीं कि वह सिस्टम आपको खुद बाहर निकालकर फेंक देगा।
पहला युवक : मुझे नफरत है तुम्हारे इस सिस्टम से।
पुरुष : बहुत खूब। सिस्टम नफरत का ही एक नाम है। उसकी हमें बहुत जरूरत है।
पहला युवक : मैं इसके खिलाफ लड़ूँगा।
पुरुष : सिस्टम का हिस्सा बनकर।
पहला युवक : सबको अपने साथ लेकर।
पुरुष : ओ हो ! अपनी बात कीजिए। इस सिस्टम में हर आदमी अपनी बात करता है। कोई किसी का साथ नहीं दे सकता। नफरत का ही नाम सिस्टम है। मेरा ख्याल है, अब आप समझ गए होंगे। आपको इसीलिए इतना समझाना पड़ा, आप कालेज से एम० ए० पास करके सीधे यहाँ आए हैं। आप जानते ही होंगे, यह कुर्सी आपको अपने पिताजी की वजह से मिली है।
पहला युवक : हर्गिज नहीं। मैं परीक्षा में पास होकर, बाकायदा चुनकर यहाँ आया।
पुरुष : ओ हो ! वक्त बर्बाद मत कीजिए। हर सिस्टम का एक दूसरा सिस्टम होता है। दूसरे से तीसरा जुड़ा होता है। जैसे यह ब्रह्मांड है···।
पुरुष : डोन्ट टाक नानसेन्स !
पहला युवक : देखिए, अब आप अंग्रेजी बोलने लगे, अब मेरा काम आसान हो गया। यह जो फाइल है, यह उस व्यक्ति की है, जो आपके पिता का बिजनेस पार्टनर है।
पहला युवक : मेरे पिता के कितने 'बिजनेस' हैं ?
पुरुष : 'दिस इज नन आफ आवर बिजनेस।'
पहला युवक : पर मेरा तो है।
पुरुष : आपने बहुत वक्त बर्बाद किया। अब यह फाइल ले जाऊँ ?
पहला युवक : नहीं।
पुरुष : यह फाइल बदली जा सकती है।
पहला युवक : हर्गिज नहीं।
पुरुष : यह फाइल फाड़ी जा सकती है। जलाई जा सकती है।

[संघर्ष। पुरुष फाइल फाड़ डालता है।]

पुरुष : कुछ गर्म पिएँगे या ठंडा ?
पहला युवक : मैं इसकी रिपोर्ट करूँगा।
पुरुष : मौसम अच्छा है।

पहला युवक : अखबारों में लिखूंगा।

पुरुष : स्टैनो बुलाऊँ ?

पहला युवक : कौन हो तुम ?

पुरुष : अब तक नहीं पहचाना ? घरों में देखा होगा। कॉलेज में देखा होगा। अखबारों में आए दिन पढ़ा होगा। 'खैर, आप खुद रिज़ायन' करना चाहेंगे या हमीं कुछ लिखकर दें ?

[फिर वही समुद्र-मंथन का खेल। आगंतुक प्रकट होता है।]

आगंतुक : अब जाना, मैं कौन हूँ ? अब पहचाना, आगंतुक क्या है ? मैं कौन हूँ ? तुम कौन हो ?

दूसरा युवक : सागर-मंथन में जो हलाहल विष निकला था यह वही है।

आगंतुक : हाँ, हाँ, हाँ। कहाँ है आज तुम्हारा वह विषपायी शंकर ? कहाँ है वह कालकूट ?

युवती : यह खेल बंद करो।

आगंतुक : अभी तो शुरू किया है।

युवती : यह भयानक है।

आगंतुक : फिर आँखें बंद कर लो। चुपचाप अलग-अलग बैठ जाओ। (सब उसी तरह बैठ जाते हैं) सिर्फ यही एक खेल है तुम्हारे खेलने का। न देखना ही तुम्हारा खेल है। न कुछ सोचना ही तुम्हारा खेल है। यह खेल मनोरंजक है। शाबाश ! थ्री चियर्स ! हिपिप हुर्रे !

[आगंतुक अदृश्य हो जाता है।]

पहला युवक : यह मनहूस खेल हम कब तक खेल सकते हैं ?

युवती : जब तक हम मनहूस हैं।

दूसरा युवक : यह खेल किसने शुरू किया ?

युवती : हम और क्या कर सकते थे ?

तीसरा युवक : यह किसने कहा ?

युवती : जिसने सुना।

दूसरा युवक : नहीं, जिसने अनुभव किया।

युवती : अनुभव कराने वाला वही आगंतुक था।

पहला युवक : खामोश। अब मैं और नहीं खेल सकता।

दूसरा युवक : मैं या हम ?

पहला युवक : मैं।

[सन्नाटा]

युवती : मुझे डर लग रहा है। क्या हम एक साथ मिलकर नहीं बैठ सकते ?

दूसरा युवक : हम एक-दूसरे से भयभीत हैं। नहीं, अपने-आपसे भयभीत हैं।

पहला युवक : एकसाथ मिलकर बैठने का मतलब है, फिर वही खेल ।
तीसरा युवक : सब कुछ आखिर, यहाँ खेल क्यों हो जाता है ?
युवती : इसका पता तभी लग सकता है, जब हम एक-दूसरे के करीब आ जाएँ ।
पहला युवक : कितना करीब ?
युवती : एक का शरीर दूसरे से छू जाए ।
तीसरा युवक : पर खबरदार, कोई खेल नहीं होगा ।

[सब एक-दूसरे से सटकर खड़े हो जाते हैं। एक घेरे में बैठते हैं। हाथ पकड़े घूमते हैं।]

दूसरा युवक : समुद्र-मंथन में पहले विष निकला था, फिर सर्प, फिर हाथी···अमृत अंत में निकला था ।
पहला युवक : फिर वही खेल शुरू हो रहा है ।
तीसरा युवक : हम बरबाद हो गए इसी खेल में। घर, स्कूल, कालेज, दफ्तर, कैन्टीन··· नौकरी ।
पहला युवक : हम पूरी तरह से टूट चुके हैं। अमृत-मंथन की कहानी झूठी थी ।
तीसरा युवक : अब ज़रा भी दम नहीं रहा ।
युवती : सावधान । बातों-बातों में फिर वही शुरू हो रहा है ।

[सब अलग-अलग चुप बैठ जाते हैं। सन्नाटा छा गया है। दूर सीटी सुनाई पड़ती है। सहसा एक युवक भागा आता है और वहाँ छिपने की कोशिश करता है।]

पहला युवक : फिर वही आगंतुक है ।
दूसरा युवक : कोई और है ।
तीसरा युवक : हमारी उम्र का है। कहीं से भागकर आया है ।
युवती : चेहरे पर कोई डर नहीं ।
दूसरा युवक : पहले साँस ले लेने दो ।
पहला युवक : कौन हो तुम ?

[विराम]

युवक : मैं कहीं से भागकर आया हूँ। कोई मेरा पीछा कर रहा है । मुझसे और प्रश्न मत पूछो ।
पहला युवक : हम सब यहाँ कहीं से भागकर आए हैं ।
दूसरा युवक : अब हमें यहाँ से कहीं जाना है ।
तीसरा युवक : मुझे कहीं नहीं जाना ।
युवती : जाना हो पर रास्ते का पता नहीं ।
युवक : रास्ता चलने से बन जाता है ।
युवती : लगता है मंजिल के पास पहुँचकर मंजिल ढूँढ़ रही हूँ ।
युवक : कैसे पता ?

युवती : मुझमें इत्ता गुस्सा क्यों है ?
दूसरा युवक : क्योंकि इसके अलावा और कुछ नहीं है ।
युवती : है। सबमें है। एक-एक में है।
युवक : क्या ?
दूसरा युवक : यही तो पता नहीं ।
युवती : तभी मैंने एक-एक को मारा ।
पहला युवक : अच्छा किया।
तीसरा युवक : विरोध क्यों किया ?
युवती : भीतर जो गुस्सा है, हताशा और निराशा है, उसे प्रकट किया ।
युवक : मेरी बात सुनिए।
पहला युवक : हमें सब पता है ।
युवक : क्या ?
तीसरा युवक : क्या नहीं ?

[सन्नाटा]

युवक : आप लोग कौन हैं ? यहाँ क्यों हैं ?
दूसरा युवक : हम दिल्ली के युवक हैं। राजधानी में जो शक्ति की चिता दिन-रात जलती रहती है, उसकी गंध हम पीते हैं। उसकी लाश हम ढोते हैं। कहीं कुछ हो जाए, चलता है। कहाँ कुछ हो रहा है, क्या फर्क पड़ता है। हम श्मशान में हैं।
पहला युवक : यह नेशनल स्कूल आफ ड्रामा का प्रस्टेटेड एक्टर है।
तीसरा युवक : यह हर वक्त वही संवाद बोलता रहता है।
युवक : आप लोग मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?
पहला युवक : आप हमें ऐसे क्यों देख रहे हैं।
युवक : हम सब एक ही उम्र के हैं—इस उम्र में एक-दूसरे को देखना अच्छा लगता है।
तीसरा युवक : हमारी यह उम्र बीत गई ?

[विराम]

दूसरा युवक : तुम जहाँ से भागकर आए हो उसके बारे में कुछ बताओ ।
पहला युवक : नहीं, हमें कुछ नहीं जानना ।
युवती : मैं जानना चाहती हूँ ।
तीसरा युवक : कहीं से भागकर आना भी वही खेल है।
युवक : आपका प्रश्न क्या है ?
दूसरा युवक : हमारे पास प्रश्न नहीं, उत्तर हैं। हम चाहते हैं, हमारे लिए कोई परिवर्तन ला दे। हम कामचोर, आलसी और मक्कार हैं। हम संतान हैं, भ्रष्टाचार के। हम नपुंसक पैदावार हैं, सड़ी, झूठी शिक्षा की। हमारे पास केवल उत्तर हैं—प्रश्नों से बचने के लिए। हम एक-दूसरे से असहमत हैं, अपने झूठे अहंकार के लिए। हर चीज़

का विरोध करते हैं, अपने स्वार्थ के लिए। नफरत करते हैं, अपने झूठे अस्तित्व को साबित करने के लिए।

पहला युवक : बंद करो बकवास।

तीसरा युवक : हर वक्त वही संवाद बोलता है, प्रभावित करने के लिए।

युवती : हम ऊब चुके हैं इस खेल से।

युवक : ऐसा क्यों है, यहाँ हर काम खेल बन जाता है? हर बात यहाँ महज नाटक का संवाद लगने लगती है। संवाद जीवन में क्यों नहीं?

दूसरा युवक : न जाने कब से यहाँ लगा हुआ नाटक का यह सेट ··· (सेट हटाने लगता है) इसे तोड़कर साफ करना होगा।

पहला युवक : पुराना सेट हटाकर नया सेट लगाना, यही है तुम्हारा संघर्ष?

तीसरा युवक : हमें देखने दो।

युवती : ओह! अब आर-पार दिखने लगा।

पहला युवक : अब यहाँ से जाना होगा।

तीसरा युवक : पर इस वक्त कहाँ जाएगी?

युवक : आओ मेरे साथ। हम संग-संग वहाँ चलें जहाँ से भागकर आया हूँ।

पहला युवक : तुम हमें गुमराह नहीं कर सकते।

तीसरा युवक : हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है।

युवक : कुछ है।

तीसरा युवक : हम तुम्हारी बातों में आने को नहीं।

युवती : वह कुछ हमें कहीं से नहीं मिला। वह कुछ हमें किसी ने नहीं दिया।

दूसरा युवक : भिखमंगे को भीख नहीं मिलती।

युवती : हम भिखमंगे नहीं हैं। सब छोड़कर खुद बाहर निकल आए हैं।

दूसरा युवक : धक्का देकर बाहर निकाल दिए गए हैं।

युवक : बाहर निकालकर तुम लोग उसे देखते क्यों नहीं? प्रश्न क्यों नहीं करते?

[सेट विहीन मंच पर फिर वही आगंतुक दिखाई पड़ता है।]

दूसरा युवक : तू यहाँ छिपा था!

आगंतुक : फिर वही खेल शुरू किया?

दूसरा युवक : अब यहाँ तेरे छिपने की जगह नहीं।

आगंतुक : छिपने की चिन्ता तुम्हारी है।

दूसरा युवक : अब हम तुम्हें खत्म कर देंगे।

आगंतुक : मैं चरित्र हूँ। मुझे कोई खत्म नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे बीच में हूँ। मैं तुम्हारी साँसों में रहता हूँ। तुम्हारे ख्यालों में पलता हूँ। मैं था। मैं हूँ। मैं रहूँगा। मेरी शक्ल तुम्हारे पिता से नहीं मिलती? तुम्हारे टीचरों, अफसरों, बुजुर्गों से नहीं मिलती? मुझे छोड़कर यहाँ से कहीं नहीं जा सकते है।

युवती : हम यहाँ से जा सकते।

आगंतुक : कहाँ ?

दूसरा युवक : जहाँ से हम भागकर आए हैं ।

आगंतुक : तुम्हारी चाल मेरे हाथों में कैद है।

दूसरा युवक : यही है वह, जो हममें कुछ नहीं पैदा होने देता । यही है वह, जो यहाँ हमारा कुछ नहीं होने देता । यही है वह बीच में ।

युवक : आओ, चलो । चलकर ही वह कुछ हमें प्राप्त होगा । उसे कोई देता नहीं । वह पैदा होता है हमारे भीतर इसी युद्ध में, जैसे पुरखों में पैदा हुआ था ।

पहला युवक : मैं किसी के पीछे नहीं चल सकता ।

दूसरा युवक : हम तुम्हारे पीछे चलेंगे ।

तीसरा युवक : जाना कहाँ है ?

युवक : इसका फैसला तुम करोगे ।

पहला युवक : मैं फैसला कर सकता हूँ ?

आगंतुक : नहीं ।

तीसरा युवक : हम एकसाथ चल सकते हैं ?

आगंतुक : नहीं ।

दूसरा युवक : यह खेल नहीं है ।

आगंतुक : जब तक मैं चरित्र हूँ, सब खेल है ।

युवती : जब तक हम इस नाटक के पात्र थे, तब तक खेल था ।

[पहला युवक गोलाई में दौड़ने लगता है । सब उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगते हैं । आगंतुक बीच में खड़ा है, तालियाँ पीटता हुआ ।]

दूसरा युवक : रुको ! रुको !

युवती : यह खेल बंद करो ।

दूसरा युवक : यह भयानक है ।

[युवक बाहर खड़ा हुआ ।]

युवक : तोड़ दो अपने घेरे को । रुककर देखो, कौन दौड़ रहा है । बीच में कौन है ? इस खेल का अंत कहाँ है ? अपने से प्रश्न करो : जाना कहाँ था ? ऐसा क्यों है ? यह हो क्या रहा है ? हमसे कराया क्या जा रहा है ? हे भारत माता ! हमें शिव का मस्तिष्क दो, कृष्ण का हृदय दो, राम का कर्म दो, गांधी का सत्य दो ।

दूसरा युवक : माँगने से कहीं कुछ नहीं मिलता ।

युवक : विश्वास करते हो न ?

पहला युवक : (रुककर) क्यों ?

तीसरा युवक : (रुककर) किसलिए ?

युवती : (रुककर) ऐसा क्यों ?

[आगंतुक उनके बीच से अदृश्य हो गया है ।]

[पर्दा]

एक घंटा

पात्र

सात व्यक्ति
एक पुरुष
युवती

[किसी अच्छे दफ्तर की कैंटीन का दृश्य—पर दृश्य में केवल इतना—एक मेज के आसपास पाँच कुर्सियाँ, एक छोटी-सी मेज के पीछे एक कुर्सी और इनसे काफी अलग केवल एक कुर्सी। मंच पर प्रकाश आते ही हम देखते हैं, छोटी-सी मेज के पीछे की कुर्सी पर एक पुरुष चुपचाप बैठा, बहुत गहराई से किसी विचार, चिन्ता में डूबा हुआ है। वह तरह-तरह की मुद्राएँ बना रहा है। कुछ ही क्षणों बाद भीतर से पाँच व्यक्ति बेतरह बातें करते हुए आते हैं।]

पहला पुरुष : देख लेना यही बात है।

दूसरा पुरुष : यार, मैं कहता हूँ, मान भी जाओ। मैं जानता हूँ।

तीसरा : माफ कीजिए आप कुछ नहीं जानते मिस्टर कसालकर के बारे में। कहेंगे कुछ, करेंगे कुछ।

दूसरा : सो तो है—जबान के बहुत मीठे हैं।

चौथा : यार, छोड़ो दफ्तर की सड़ी-गली बकवासों को। पाँच बजे तक यही सब तो करते रहे हैं। अरे बैठो राजा, एक-एक कप चाय तो हो जाए। फिर छः बजकर दस वाली बस से फुर्र···।

[सब बैठते हैं।]

पहला : यार, कौसिकजी के यहाँ कमाल हो गया।

दूसरा : कौसिक···कौसिकजी कौन ?

तीसरा : ओ हो बात तो सुनो।

दूसरा : बात क्या सुनें खाक—जब तक यह पता न हो कि किसका वजूद क्या है, बात क्या बने।

चौथा : वाह, वाह ! क्या कहा, 'वजूद'। मैं 'बेट' करता हूँ पाँच चाय की। यह अल्फाज आज इसने मिस्टर कसालकर के मुँह से सुना है और बिना जाने-बूझे हमारे सिर पे पटक दिया है। बता वजूद माने ?

अन्य सब : बता वजूद माने ?

दूसरा : यार 'इनफेक्ट' नहीं जानता।

[सब हँसते हैं।]

पहला : वजूद याने मिस्टर कसालकर।

पाँचवाँ : यार वह बात क्या थी ?

चौथा : कौन-सी बात ?

तीसरा : अरे वही जो अभी शुरू भी नहीं की कि बीच ही में यार लोगों ने 'इस्ट्राइज' कर दिया।

दूसरा : फिर तो लाइन 'किलियर' है प्यारे !

पहला : हुआ यह कि मिस्टर कौसिक के घर पड़ोस का एक लड़का आया। बोला—अंकिलजी, पापा ने आपकी स्त्री माँगी है। मिस्टर कौसिक बोले—मेरी स्त्री ? वह बैठी है, ले जाओ। लड़के ने कहा—वह स्त्री नहीं, वह स्त्री जो 'करेन्ट' मारती है। मिस्टर कौशिक बोले—अरे छूकर देख लो, करेन्ट मारती है कि नहीं।

[हँसी]

दूसरा : यार अब चाय हो जानी चाहिए। पर यहाँ तो कोई है ही नहीं। अरे विलियम ! ···ओ राजेश खन्ना !

तीसरा : अरे दफ्तर की कैंटीन है कि कोई मजाक है—समय से पहले खुलेगी, समय से पहले बंद हो जाएगी।

[सहसा वह अलग कुर्सी पर बैठा पुरुष हँस पड़ता है। ये सब आश्चर्यचकित उसे देखने लगते हैं।]

पहला : अब जे बताओ—ये हँसा क्यों !

दूसरा : हमने इधर चाय की बात की, उधर वह हँसा।

तीसरा : उसे चाय नहीं मिली, फिर भी वह बैठा है—वह अपने-आप पर हँसा।

चौथा : जी नहीं, उसे कुछ याद आ गया—किसी और कैंटीन की बात। हो सकता है यह महाशय उस कैंटीन में गए हों, जहाँ एक बार मैं गया था। मैंने पहुँचते ही आर्डर किया—एक बरफी और एक गिलास पानी। बरफी मशहूर थी उस कैंटीन की। जी हाँ, क्या कहने, वाह-वाह ! दूर-दूर से लोग खिंचे चले आते थे। बरफी आ गई। मैंने बरफी तोड़ी तो देखा एक बाल। ओ लड़के, दूसरी बरफी लाओ। दूसरी आई। उसे तोड़ा, उसमें भी एक बाल। तीसरी, चौथी, पाँचवीं—सबमें वही बाल। कमाल है, यह क्या बदतमीजी ! मैं गया मालिक के पास—यह क्या गंदगी है ! मैं सरकारी दफ्तर का आदमी हूँ—अभी टेलीफोन करता हूँ कारपोरेशन को। ओ जी, तूसी क्या हो गया, क्या बाल है ?···हर बरफी में बाल···यह देखिए। ओ जी बादशाहो तूसी पता नहीं, यह हमारा ट्रेड मार्क है···।

पहला : देख, देखो कैसे बैठा है ?

दूसरा : कुछ सोच रहा है।

तीसरा : बड़ा दुखी मालूम होता है।

चौथा : नहीं, नहीं, मुस्करा रहा है।

पाँचवाँ : परेशान है।

पहला : झट से रंग बदल देता है।

दूसरा : एक्टर लगता है।

तीसरा : हाँ, कोई पार्ट तैयार कर रहा होगा।
चौथा : यार, इसे कौन देगा पार्ट ?
पाँचवाँ : घर में बीवी से झगड़ा हुआ होगा।
पहला : क्या इसके 'बास' से झगड़ा नहीं हो सकता ?

[भीतर से युवती आती है। अलग कुर्सी पर चुपचाप बैठ जाती है। पाँचों व्यक्ति युवती को देखने लगते हैं। जब युवती इनकी ओर देखती है तो ये सब झेंपकर मेज पर माथा झुका लेते हैं। युवती उस पुरुष को देखती है। ये परस्पर देखते हैं।]

दूसरा : अरे, अपनी मिस शर्मा तो हैं, देख क्या रहे हो ?
तीसरा : जब तक दफ्तर में होती हैं, तब तक कुछ और लगती हैं। जब दफ्तर से बाहर होती हैं, तो बिल्कुल बदल जाती हैं।

[ये बातें कहते हुए पाँचों व्यक्ति क्रमशः खड़े हो जाते हैं।]

चौथा : यार, बिलकुल 'करेक्ट' बात। दफ्तर में हम लोग मिस शर्मा से बिल्कुल सहज 'नेचुरल' बातें कर लेते हैं। पर बाहर सब 'अनेचुरल' हो जाता है।
युवती : (स्वगत) दफ्तर में एक रिश्ता है, 'कोलीग' का। दफ्तर के बाहर कोई रिश्ता नहीं रह जाता। जहाँ कोई रिश्ता नहीं, वहाँ सब 'अननेचुरल' हो जाता है, अपने आप। रिश्ता आपस में होता है। आपसदारी के लिए समानता चाहिए।
पाँचवाँ : मिस शर्मा अकेली बैठी हैं।
पहला : हो सकता है इन दोनों का 'एप्वाइन्टमेंट' हो।
दूसरा : हमें देखकर दोनों आँखें चुरा रहे हों।
तीसरा : नहीं गलत है। वह किसी और के इंतजार में बैठा है।
चौथा : मिस शर्मा क्यों इस तरह बैठी हैं ?

[बाहर से दो व्यक्ति और आते हैं। और अलग खड़े होकर चुपचाप बातें करने लगते हैं।]

पाँचवाँ : ये दोनों कौन हैं ?
पहला : दोनों मिस शर्मा को घूर रहे हैं।

[दोनों को ये लोग घूरते हैं। दोनों इनके पास आते हैं।]

छठा : कैंटीन के लोग कहाँ गए ?
दूसरा : 'वी डोन्ट नो।'
सातवाँ : हमें बुलाया था—साढ़े पाँच के बाद कैंटीन बंद होती है न ?
तीसरा : पता नहीं।
छठा : कैंटीन के लोग रात को यहीं रहते हैं न ?
चौथा : 'वी कांट से।'
छठा : आप लोग किसी का इन्तज़ार कर रहे हैं ?

सातवाँ : कोई 'फेयरवेल पार्टी' है क्या ?
पाँचवाँ : क्यों ? आपने ऐसा क्यों कहा ?
छठा : सब लोग बहुत उदास हैं ।
सातवाँ : और इतने खामोश ।

[पाँचों एक किनारे साथ मिल न जाने क्या बातें करने लगते हैं ।]

पहला : आप बता सकते हैं, यह आदमी क्या सोच रहा होगा ?
छठा : किसी का इंतजार कर रहा होगा ।
सातवाँ : उसी के बारे में सोच रहा होगा ।
दूसरा : हम लोग यह पता लगाने में लग रहे हैं कि यह आदमी क्या सोच रहा है ?
छठा : इसमें क्या है, जाकर पूछ लीजिए ।
सातवाँ : आप लोग इसे जानते हैं ?
तीसरा : जी कतई नहीं ।
छठा : फिर क्या है, सोचने दीजिए ।
चौथा : बात यह है कि हमारी पहली बस साढ़े पाँच पर छूट गई । दूसरी बस अब से ठीक आधे घंटे बाद आएगी । इस बीच हम वक्त काटने के लिए इसी सोच में लगे हैं कि यह क्या सोच रहा है ?
पाँचवाँ : (सहसा) मैं बताता हूँ यह क्या सोच रहा है । देखिए गौर से । नहीं, यह गलत है ।
पहला : मिस शर्मा से कहें, वह इस मनहूस से पूछ लें ।
दूसरा : कहो जाकर ।
तीसरा : सब लोग साथ बढ़ते हैं ।

[सब साथ बढ़ते हैं । एक-दूसरे से कहने के लिए हाथ से इशारे करते हैं ।]

युवती : क्या है ?
पहला : मिस शर्मा आपकी बड़ी मेहरबानी होगी, आप जाकर इस आदमी से यह पूछ लें कि यह क्या सोच रहा है ? हम लोग कुछ अंदाज नहीं लगा पा रहे हैं कि यह शख्स क्या सोच रहा है ।

[युवती उठती है ।]

युवती : आप खुद क्यों नहीं पूछ लेते ?
दूसरा : प्लीज !
युवती : आपस में इतना बोलते हैं, दूसरे से डर लगता है ?
तीसरा : बस, यही मान लीजिए ।
युवती : हम यह क्यों न मान लें कि यह आदमी बहुत परेशान है । मैं भी तभी से इसे देख रही हूँ और मानती हूँ कि इसका किसी से झगड़ा हुआ है ।
चौथा : बिल्कुल सही, यह पिटकर आया है ।

पाँचवाँ : पर किससे, क्यों ?

युवती : अपनी बीवी से ।

पहला : हर्गिज़ नहीं । बीवी दिन के वक्त नहीं पीट सकती ।

युवती : हो सकता है यह ठेलुआ मर्द हो । घर में बैठा रोटी तोड़ता हो । उलटे बीवी को तंग करता हो । बीवी ने तंग आकर झापड़ रसीद किया हो ।

छठा : जी नहीं । यह बड़ा खुशमिज़ाज आदमी है । देखिए मुस्करा रहा है ।

सातवाँ : चेहरे पर कितनी रौनक है ।

पहला : आप लोग मेहरबानी करके 'डोन्ट टाक' ।

दूसरा : चुप खड़े रहिए । यह हमारा निजी मामला है ।

तीसरा : बीवी ने नहीं, किसी लड़की ने तकलीफ पहुँचाई है ।

युवती : लड़की कभी तकलीफ नहीं पहुँचा सकती । लड़कियाँ बहुत बर्दाश्त करती हैं ।

चौथा : बर्दाश्त नहीं लड्डू करती हैं ।

युवती : क्या कहा ?

चौथा : किसने क्या कहा ?

[एक ओर से अभिनयात्मक हँसी शुरू होती है, दूसरी ओर सबके बीच से उमड़कर बह जाती है ।]

पहला : यह आदमी कहीं बहरा न हो ।

दूसरा : फिर गूंगा तो होगा ही ।

तीसरा : इस पर हमारी बातों का—हमारे व्यवहारों का कतई कोई असर नहीं ।

युवती : एक तटस्थ आदमी का यह लाजवाब क्लाम्पल है ।

चौथा : जी नहीं, यह बहरा है ।

पाँचवाँ : बिलकुल । हमने देख लिया ।

चौथा : सबूत पा लिया ।

युवती : यह कतई बहरा नहीं । देखो इसका चेहरा ।

[वे दोनों उसे देखते हैं । शेष पाँचों आपस में सलाह कर अचानक गा पड़ते हैं—]

एक हसीना इतने में घोर
चुप चप नहीं हम करते हैं शोर ।

युवती : देखो-देखो-देखो
जो कुछ होता उसको देखो
क्यों होता अपने से पूछो—
वन में नाचे मोर···।

सब : एक हसीना इतने हैं चोर
चुप-चुप नहीं हम करते हैं शोर ।

युवती : जो होता कारण होता है

बुद्धिमान रावण होता है
एक हसीना इतने चोर
ऐसा क्यों भई ऐसा क्यों ?

सब : एक हसीना इतने हैं चोर
चुप-चुप नहीं हम करते हैं शोर···

पहला : मैं पूछता हूँ, कोई असर पड़ा इस आदमी पर ?

दूसरा : यह आदमी नहीं, आदमी की पूंछ है।

तीसरा : उल्लू का पट्ठा।

चौथा : भैंस का भतीजा।

पाँचवाँ : यार, हम क्यों अपना मुँह खराब करें। इस पर जब किसी चीज का असर नहीं तो छोड़ो। चलो।

युवती : हद हो गयी, आप लोग यह पता न लगा सके कि यह क्या सोच रहा है।

छठा : इन लोगों के 'इमेजिनेशन' मतलब कल्पनाशक्ति को लकवा मार गया।

सातवाँ : बिल्कुल—सोलह आने।

पहला : क्या कहा ?

दूसरा : जबान खिंचवा ली जाएगी।

छठा : बहुत देखे हैं। शटअप !

तीसरा : चुप रहते हो या नहीं।

चौथा : चले जाओ यहाँ से। 'गेटआउट' !

[संघर्ष खिंचता है। युवती बचाव के लिए बीच में आ जाती है।]

युवती : यह क्या मतलब है ? आखिर यह क्या है ? मेरा ख्याल है यह आदमी इसलिए हँसा कि हम इतनी हल्की-हल्की चीजों में फँसे हैं। हमारा एक-दूसरे से कोई रिश्ता नहीं है। तभी हम एक-दूसरे पर करते हैं अविश्वास। हम एक-दूसरे से डरते हैं, क्योंकि हम अपरिचित हैं आपस में। तभी हम अचानक, बिना वजह एक-दूसरे पर बरस पड़ते हैं। जानवरों की तरह लड़ने लगते हैं।

पहला : यह तो हुआ आपका लेक्चर।

दूसरा : आपका भाषण सुन्दर था।

युवती : हँसिए, हँसिए। हँसी के लिए यह जुम्ला कसा गया है। आप लोग या तो दूसरों पर हँस सकते हैं या अपने आप पर रो सकते हैं। पर जिन्दगी है इसके बीच में।

[जाने लगती है।]

तीसरा : (रोकता है) मिस शर्मा, आप हम पर एक मेहरबानी कीजिए। इस आदमी से पूछ लीजिए, यह क्या सोच रहा है।

युवती : आप लोग क्यों नहीं पूछ लेते ?

चौथा : हमें थोड़ा संकोच लगता है।

युवती : यह क्यों नहीं कबूल कर लेते कि हमें डर लगता है। यह अजनबी न जाने कैसे 'रीयेक्ट' करे। बनते तो बहुत बहादुर हैं। हर वक्त दूसरों पर मजाक और फिकरेबाजी। किसी से बात नहीं कर सकते, केवल झगड़ा कर सकते हैं।

पाँचवाँ : अच्छा छोड़िए मैं पूछ लेता हूँ। (**बढ़ता है, एकाएक**) यार तुम पूछ लो।

चौथा : मुझे कोई जरूरत नहीं, मैं जा रहा हूँ।

युवती : रुकिए मैं पूछती हूँ। (**पास जाकर**) सुनिए ! हम लोग यह जानना चाहते हैं—आप यहाँ तब से बैठे-बैठे क्या सोच रहे हैं ?

[पुरुष उठता है।]

पुरुष : मैं यह सोच रहा था कि अगर मौत आ जाए और यह कह दे कि सिर्फ एक घंटा बाकी है तुम्हारी जिन्दगी में, तो मैं उस घंटे में क्या करूँगा—यही सोच रहा था।

पहला : धत्तेरे की, यह भी कोई सोचने की बात है।

दूसरा : खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

तीसरा : मैं तो उस एक घंटे में भगवत भजन करूँगा।

चौथा : मैं मौत से कहूँगा—यह क्या बदतमीजी है ?

पाँचवाँ : मैं कहूँगा यह बकवास है।

छठा : पूरा घंटा यही बकते रहोगे कि यह बकवासहै, बकवास है, बकवास है ?

पाँचवाँ : नहीं : उसके बाद बीवी से कहूँगा, फर्स्ट क्लास खाना बनाओ। हम दोनों बैठ कर मजे से खाएँगे।

पहला : मैं तो अपनी पत्नी के साथ चद्दर तान कर सो जाऊँगा।

दूसरा : मैं अपने बच्चों के साथ बैठकर बातें करूँगा।

सातवाँ : मैं उस मौत को दूँगा पाँच सौ रुपये, कहूँगा, मेरी जगह मेरे पड़ौसी की जान ले लो।

[सब हँस रहे हैं। पृष्ठभूमि में अचानक मृत्युसूचक संगीत उभरने लगता है। युवती चिल्लाती है। वह पुरुष भागता है। सब भयभीत होकर बीच में खड़े हो गए हैं। युवती चारों ओर वृत्ताकार दौड़ रही है। पुरुष उसका पीछा कर रहा है।]

युवती : (**चिल्लाती हुई**) चारों ओर मौत खड़ी है।

पुरुष : सिर्फ एक घंटे का समय है।

युवती : यहाँ कोई नहीं बचेगा।

पुरुष : यहाँ कुछ भी नहीं रहेगा।

[सब चीत्कार कर उठते हैं। पहला बढ़कर युवती को पकड़ लेता है।]

पहला : यह मेरी है।

[दूसरा आकर उसे धक्का देता है।]

दूसरा : यह मेरी है।

तीसरा : यह मेरी है।

चौथा : जो सबसे ज्यादा ताकतवर है, यह उसी की है।

[सब आपस में लड़ने लगते हैं। मारपीट। चीख। युवती सहित सब लड़ते-लड़ते गिरकर जैसे मर जाते हैं।]

पुरुष : मेरे प्रश्न का मिल गया उत्तर। उस घंटे में मैं देखूंगा—लोग क्या कर रहे हैं। देखूंगा, मृत्यु का यह दृश्य देखूंगा। लोग क्या-क्या कहते थे, पर मरे कैसे, देखूंगा।

[युवती उठती है।]

युवती : यही देखने के अलावा तूने आज तक और किया ही क्या? सोचता है तू तब भी वही दर्शक बना रहेगा? जब सब मरेंगे तो क्या तू बचा रहेगा? तू भी मरेगा। तब देखने वाला कोई नहीं होगा।

पुरुष : मैं देख नहीं पाऊँगा?

युवती : नहीं।

पुरुष : फिर मैं ऐसी कल्पना नहीं करूँगा। कभी नहीं सोचूंगा मृत्यु को। उठो। मैं झूठा हूँ। मेरी कल्पना नकली है। उठो, तुम सब जीवित हो, उठो।

[सब उठते हैं।]

सब : कौन हो तुम?

पुरुष : तुम्हारी कल्पना।

सब : (पुरुष भी शामिल है) कौन हो तुम?

युवती : बताओ मैं कौन हूँ?

[इसी प्रश्न पर मूर्तिवत खड़े रह जाते हैं।]

[पर्दा]

ी सहित सब लड़ते-लड़ते

—लोग क्या कर रहे हैं।
बे, पर मरे कैसे, देखूंगा।

या? सोचता है तू तब भी
ा रहेगा? तू भी मरेगा।

मृत्यु को। उठो। मैं झूठा
उठो।

नहीं

पात्र

सात युवक
एक पुरुष

[खाली सूने मंच पर सातों युवक मार्च करते हुए आते हैं। पुरुष उनका संचालन कर रहा है।]

पुरुष : तेज चलो, सावधान ! दाएँ-बाएँ, बाएँ-दाएँ, दाएं-बाएं, बाएँ-दाएँ। सीधी लाइन बनाओ। आराम ! सावधान ! एक-दो, एक-दो !

[सब एक पंक्ति में दर्शकों के सामने खड़े एक-दो कहते हुए पैर उठा और रख रहे हैं।]

पुरुष : सावधान ! हाजिरी जनाब !
पहला : एक। हाजिर जनाब !
दूसरा : दो। हाजिर जनाब !
तीसरा : तीन। हाजिर जनाब !
चौथा : चार। हाजिर जनाब !
पाँचवाँ : पाँच। हाजिर जनाब !
छठा : छः। हाजिर जनाब !
सातवाँ : सात।
पुरुष : हाजिर जनाब क्यों नहीं कहा ?
सातवाँ : जो हाजिर है, फिर कहना क्या ?
पुरुष : क्या कहा ?
सातवाँ : क्या कहा ?
पुरुष : शटअप !
पहला : सावधान !

[सब हँस पड़ते हैं।]

पुरुष : सावधान !

[सब सावधान खड़े हो जाते हैं।]

पुरुष : नम्बर सात !
सातवाँ : यस सर ! नहीं-नहीं, जी जनाब !

[सब हँस पड़ते हैं।]

पुरुष : खबरदार ! अगर अब किसी की हँसी सुनाई पड़ी तो सख्त सजा मिलेगी। नियम-भंग का दंड।

सातवाँ : नियम भंग का दंड ।

[हँस पड़ता है ।]

पुरुष : नम्बर सात, सावधान ! सामने आओ । निकलो ।

सातवाँ : मेरा नाम पहला है । नम्बर एक, जी जनाब !

[अब उल्टे क्रम से लोग क्रमशः बोलते हैं । पहला सातवाँ हो जाता है ।]

पुरुष : यह क्या तमाशा है, पहला सातवाँ हो गया, सातवाँ पहला हो गया । फिर से दो हाजिरी ।

[पहले बाएँ से, फिर दाएँ से ।]

पहला : क्रम बदलते ही संख्या बदल जाती है ।

दूसरा : स्थान बदलते ही एक दूसरा हो जाता है ।

तीसरा : जब हम किसी के कहने से चलने लगते हैं, तब हम मनुष्य नहीं संख्या हो जाते हैं ।

चौथा : मैं चौथे से तीसरा हो गया तो फर्क क्या पड़ा ?

[हँसी]

पाँचवाँ : खबरदार अगर किसी की हँसी सुनाई पड़ी ?

छठा : हम लोग इस कदर डर क्यों गए ?

सातवाँ : हम लोग एकसाथ चले थे ।

पहला : हम सब समान थे !

दूसरा : हम सब आठ लोग थे । अब सात ही क्यों रह गए ? वह आठवाँ कहाँ है ?

[एक-दो-तीन···कहते हुए गिनते हैं ।]

पुरुष : रुको ! मैं गिनता हूँ ।

[एक-एक को धक्का मारकर गिनता है ।]

पुरुष : सात थे ।

पहला : नहीं, आठ थे ।

पुरुष : बकवास ! सात थे । बिल्कुल सात ।

पहला : मैं गिनता हूँ ।

[वह अपने-आपको मिलाकर आठ गिनता है ।]

पुरुष : नहीं । मैं गिनता हूँ । सावधान, खड़े हो जाओ एक लाइन में । हाथ उठाकर हाजिरी दो ।

[सब संख्या से क्रमशः बोलते हैं ।]

पहला : और आठवें तुम ।

पुरुष : गलत। एक-दो-तीन-चार-पाँच-छः-सात।

सातवाँ : तुम आठ।

पुरुष : हाज़िरी लेने वाला है, होता नहीं। हम यहाँ केवल सात हैं। कहो कि हम सात हैं। कहते हो या नहीं ?

चौथा : हम सात हैं।

पुरुष : सब लोग कहो—एक साथ—हम यहाँ केवल सात हैं।

[बाएँ से पहला, तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ चुप हैं। शेष एक साथ कहते हैं—हम यहाँ केवल सात हैं।]

पुरुष : तुम लोग बोले क्यों नहीं ? बोलो, बोले क्यों नहीं ?

पहला : तुम कौन हो इस तरह हम पर चीखने वाले ?

तीसरा : हम अलग-अलग अपने घर से चले थे, जैसे कि तुम चले थे। एक रास्ते पर सब साथ हो गए। तुम इस तरह हमें रोककर···

पाँचवाँ : तुम कौन हो गिनने वाले ?

सातवाँ : किसने कहा तुम हमें इस तरह गिनो ?

पुरुष : अब तुम लोग यह प्रश्न नहीं कर सकते ?

पहला : क्यों ?

पुरुष : मैं तुम सबसे आगे था। तुम लोग मेरे पीछे-पीछे चले। चले कि नहीं ? क्यों चले ?

तीसरा : रास्ता इतना सँकरा था कि एक के पीछे ही दूसरा चल सकता था।

पाँचवाँ : और यह महज संयोग था कि तुम आगे थे।

सातवाँ : हमें यह पता नहीं था कि तुम वह से यह निकलोगे।

पुरुष : सावधान ! एक सीधी कतार में। खबरदार, अगर लाइन से इधर-उधर हुए। खामोश ! कोई खुसुर-फुसुर नहीं ! मुँह बंद ! कान खोलकर सुनो ! यह महज़ संयोग नहीं था कि मैं तुम सबसे आगे था। तुम्हें किसी की ज़रूरत थी, जिसके पीछे-पीछे तुम सब चल सको। और वह मैं ही था। केवल मैं। मेरे अलावा और कोई नहीं। समझ गए या समझाऊँ ?

पहला : अब हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं।

पुरुष : अब यह फैसला तुम्हारे हाथ में नहीं।

चौथा : आपका कहना बिल्कुल सही है।

दूसरा : मैं आपकी बात से बिल्कुल सहमत हूँ।

छठा : हम आपके कहने के मुताबिक चलेंगे।

पुरुष : और कोई रास्ता नहीं है। और कोई उपाय नहीं।

चौथा : जी हाँ, और कोई रास्ता नहीं। कोई उपाय नहीं।

दूसरा : आप हमें जहाँ ले जा रहे थे, उसी रास्ते से हम अपनी मंजिल पहुँचेंगे। वही है हमारा रास्ता।

छठा : वही ठीक है। और किसी से नहीं हमारा वास्ता।

[सन्नाटा]

चौथा : (अचानक) जनाब, वक्त हो गया। मुझे अपनी ड्यूटी पर पहुँचना है। मुझे जाने दीजिए। मैं बिल्कुल सीधी राह चला जाऊँगा, मुझे किसी से कोई मतलब नहीं। मैं और मेरा काम, इसके अलावा और कुछ भी नहीं। आप चाहेंगे तो मैं फिर लौटकर आ जाऊँगा। बहुत मजेदार है।

[जाने लगता है। पुरुष के तने हुए हाथ से टकराता है।]

पुरुष : खड़े रहो अपनी जगह !

चौथा : मैं अपनी ड्यूटी पर नहीं पहुँचूंगा तो मेरी गैर-हाजिरी लग जाएगी जनाब ! एक दिन की तनखा कट जाएगी। मेरी ड्यूटी मेरा धर्म है। मेरा धर्म···। देखिए बहुत हो गया। काम का वक्त है। सबको जाना है। मजाक मत कीजिए।

पुरुष : तुम्हारा धर्म क्या है, वह मैं बताऊँगा।

पहला : किसी के कहने से धर्म नहीं बनता।

तीसरा : ऐसे धर्म बनने लगे तो बस हो गया।

दूसरा : चुप रहो।···श्रीमानजी, मेरी जो मेहरिया है न···मेरी 'वाइफ' जिसे अंग्रेजी में कहते हैं, वह अपने मायके जा रही है। बाजार से उसके लिए कुछ सामान लेने जा रहा हूँ। इधर से बाईं तरफ मुड़ूंगा, फिर सीधे जाकर सीधे चला जाऊँगा। राम कसम, मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं। सिर्फ अपने काम से काम। मजाक नहीं। मैं बहुत जिम्मेदार आदमी हूँ—किसी से पूछ लीजिए। क्यों भाई, मुझे तो आप जानते हैं···

[जाने लगता है। पुरुष उसे खींचकर रोक लेता है।]

दूसरा : मेरी बीवी मुझसे नाराज हो जाएगी। हम दोनों में बहुत प्रेम-मुहब्बत है। यकीन न हो तो देख लीजिए हम दोनों की फोटो।

पुरुष : प्रेम-मुहब्बत क्या है, इसे मैं बताऊँगा। चुपचाप यहीं खड़े रहो !

दूसरा : कमाल है। मेरी फोटो तो दे दीजिए।

[चुपके से ले लेता है।]

चौथा : हमें क्या पता था···।

दूसरा : किसी को क्या पता था।

छठा : अरे रे रे, भाई साहब तो मजाक कर रहे हैं। (हँसता है) तुम लोग इत्ते 'सीरियस' क्यों हो गए। अरे, भाई साहब को तो मैं बचपन से जानता हूँ। बड़े ही पुरमजाक हैं। अचानक कोई-न-कोई चमत्कार कर देना इनके बायें हाथ का खेल है। (हँसता है) एक बार ऐसा हुआ कि···ऐसा हुआ कि···।

पुरुष : चुप रहता है कि नहीं ?

छठा : जो कहते हैं, वह इनका मतलब नहीं होता। अगर यह बहुत गंभीर हैं, तो समझो यह बिल्कुल गंभीर नहीं हैं। अगर गुस्से में हैं तो (हँसता है) समझो हमें हँसाना चाहते हैं। भाई साहब के जीवन का यही उद्देश्य रहा है कि लोग खुश रहें। हँसें। खेलें। लोगों का स्वास्थ्य उम्दा रहे। इन्होंने कई किताबें लिखी हैं—'खुश रहो', 'स्वस्थ रहो'। एक बार ऐसा हुआ कि हम दोनों जा रहे थे—यह अभी थोड़े ही दिनों की बात है। हम दोनों 'क्लासफेलो' हैं न। सो ऐसा हुआ कि हम दोनों जा रहे थे—भाई साहब को अपनी तारीफ सुनना बिल्कुल पसंद नहीं है। तो हम दोनों जा रहे थे—भाई साहब जरा तेज चलते हैं। तो हम दोनों जा रहे थे—तेज चला इनका स्वभाव है। तो हम संग-संग चले जा रहे थे—यह इत्ते 'पापुलर' खुशमिजाज, नेक, दरियादिल हर वक्त दूसरों की सहायता करने वाले हैं कि लोग खामखा इनके पीछे लग जाते हैं। तो हुआ यह कि मैं भाई साहब के साथ जा रहा था—कहाँ ? यह बाद में पता चलेगा। तो हम दोनों चले जा रहे थे। मौसम अच्छा था। यही फरवरी-मार्च के दिन रहे होंगे।

[इस बीच पुरुष ने बार-बार इसे डाँटा है। चुप कराना चाहा है। पर इस पर कोई असर नहीं।]

छठा : तो यह समझिए कि हम दोनों चले जा रहे थे।

पहला : (चीखता है) तो फिर क्या हुआ ?

तीसरा : आगे कुछ कहेगा कि अपना वही सिर पीटेगा ?

पाँचवाँ : बकवास करता है।

सातवाँ : हमने भी पहले यही समझा था कि आपके यह भाई साहब कोई मजाक कर रहे हैं। दिलबहलाव···।

छठा : अरे रे रे रे ! भाई साहब, देखिए न ये लोग कैसी बातें कर रहे हैं। च चा चा, आप लोग भाई साहब को कतई नहीं समझें। भाई साहब, देखिए न, कैसा जमाना आ गया। लोग खामखा गलतफहमी का शिकार होते हैं।

पुरुष : चुप रहोगे या नहीं ?

छठा : आप लोगों के पास वक्त नहीं है। आप लोग जहाँ जा रहे थे, वहाँ पहुँचने की बड़ी जल्दी है। आपका समय बड़ा कीमती है। भाई साहब के समय की कोई कीमत नहीं ? आप समझते हैं, भाई साहब को कोई जल्दी नहीं ? आप लोगों को गलत-फहमी है। ऐसा मत समझिए···

पुरुष : चोप्प !

[झापड़ मारकर गिरा देता है।]

छठा : आप लोग यह मत समलिए कि भाई साहब ने मुझे झापड़ मारा और मैं गिर गया। यह हमारा प्रेम है। हम बचपन के साथी हैं। यह हमारा मनोरंजन है। समझने की कोशिश कीजिए।

[पुरुष इसके मुँह पर पट्टी बाँध देता है। फिर भी आगे यह हाथ-पैर के इशारों से बातें करता रहेगा।]

पुरुष : बोलो, कहाँ जाना है ?

पहला : बताना जरूरी है क्या ?

पुरुष : जरूरी है !

पहला : नहीं बताता।

पुरुष : बताना होगा।

पहला : कहीं नहीं जाना।

पुरुष : यहाँ इस तरह कोई खड़ा नहीं रह सकता।

पहला : तुम यहाँ हमें रोककर क्यों खड़े हो ?

पुरुष : तुम्हारे कल्याण के लिए।

पहला : मेरे कल्याण की चिन्ता तुम्हें ?

पुरुष : मैं इतने वर्षों चुपचाप तुम सबको देखता रहा हूँ। तुम्हारा जीवन उद्देश्यहीन रहा है। तुम्हारी जिन्दगी का कोई मकसद, तुम्हारा अपना कोई विश्वास नहीं। कोई जीवन-लक्ष्य नहीं। कोई अपनी ड्यूटी पर भागा जा रहा है। कोई बीवी को खुश रखने बाजार जा रहा है। कोई···

दूसरा : मैं डाक्टर के पास जा रहा हूँ। मेरा बच्चा सख्त बीमार है। मैं अपने बच्चे को अच्छा, स्वस्थ रख सकूँ, यह मेरा विश्वास क्या कम है ? आप हमें डराकर क्या हैवान बनाना चाहते हैं ?

चौथा : मैं अपनी दुकान पर जा रहा हूँ। मेरी अपनी छोटी-सी दुकान है, कपड़े की। मैं अपनी दुकान नहीं खोलूंगा। कुछ बेचूंगा नहीं तो रोटी कहाँ से खाऊँगा ? बीवी-बच्चों को क्या खिलाऊँगा ?

पुरुष : तुम्हें कहाँ जाना है ?

तीसरा : मैं सत्य की तलाश में निकला हूँ।

दूसरा : सत्य गया पेट में।

[पुरुष चारों ओर घूरकर देखता है।]

पुरुष : तुम कहाँ जा रहे थे ?

पाँचवाँ : क्या कहा ?

पुरुष : यह बहरा है क्या ? कहाँ जा रहे थे ?

पाँचवाँ : जा नहीं रहा था।

पुरुष : कहाँ से ?

पाँचवाँ : वहाँ से।

पुरुष : वहाँ क्या होता है ?

पाँचवाँ : वहाँ कुछ नहीं होता, यहाँ (दिल पर हाथ रखकर) होता है।

पुरुष : क्या ?

पाँचवाँ : विश्वास।

पुरुष : क्या ?

[पहला, तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ एक साथ बोलते हैं, 'विश्वास !']

पुरुष : क्या कहा ? विश्वास ?

[वही सब एकसाथ कहते हैं—'सत्य']

पुरुष : अच्छा, तुम लोग जा सकते हो।

[वे बाईं ओर से जाने लगते हैं।]

पुरुष : रुक जाओ ! (पिस्तौल निकाल लेता है) 'हैंड्स अप !' हाथ ऊपर ! मैं यही देख रहा था, तुम्हारा रास्ता किधर है और किस दिशा में जाते हो। ओह, बाईं दिशा से जा रहे थे ? शाबाश ! यह हिम्मत। और जाओ। बढ़ाओ कदम। एक-एक को भूनकर रख दूँगा।

[छठा उठता है। दाईं ओर जाने लगता है। उसके साथ दूसरा और चौथा भागने लगता है।]

पुरुष : खबरदार ! जो भागने की कोशिश की ! ओह। दाईं ओर से निकल जाना चाहते थे। जाओ। देखता हूँ कैसे जाते हो !

दूसरा : हम सोचते थे, दाईं ओर से जाना सुरक्षित है।

चौथा : हमारा विश्वास था कि···।

पुरुष : अब केवल एक ही रास्ता है, सीधे—सामने।

पहला : सीधे सामने तू खड़ा है।

पुरुष : मैं ही दूंगा रास्ता। क्योंकि रास्ता रोके मैं ही खड़ा हूँ। क्योंकि आगे मैं ही था। रास्ते की सारी मुसीबतें मैंने ही झेली।

तीसरा : क्यों ?

पुरुष : क्योंकि मैं ही झेल सकता था।

पहला : क्यों ? किसलिए ? किसने कहा ?

पाँचवाँ : बकवास।

पुरुष : हाथ ऊपर, हैंड्स अप ! नज़र सीधी ! सामने ! हिलना-डुलना नहीं ! मैंने पाया तुम सब खुदगर्ज़ हो। स्वार्थी, मतलबी ! सिर्फ अपना-अपना धंधा। अपनी-अपनी चिन्ता। न कोई विश्वास, न धर्म, न सत्ता। इसलिए मैंने सोचा···मैंने तै किया···।

[छठा अपनी पट्टी खोलता हुआ पुरुष के चरणों में गिरता है।]

छठा : मुझे दो विश्वास मुझे दो धर्म। हमें दो सत्य। (उठता है) हाँ, यही तो मैं कह रहा था। मैं भाई साहब के साथ जा रहा था वही सत्य और विश्वास प्राप्त करने। सत्य ही ईश्वर है—हम दोनों यही प्राप्त करने जा रहे थे न भाई साहब ! सत्य

ईश्वर है···। ठीक कह रहा हूँ न भाई साहब !

पुरुष : चुप रह ! (सन्नाटा) सुनो ! विश्वास और सत्य अपने-आपमें कुछ नहीं होता। सत्य होता नहीं, बनाया जाता है। विश्वास से सत्य गढ़ा जाता है। विश्वास बनता है भय से। किसी शक्ति से जो हमें सुरक्षा देती है।

पहला : और शक्ति वही है, जो विकल्प को समाप्त कर दे।

पुरुष : यही है मेरा सत्य। चलो स्वीकार करो और सीधे सुरक्षित अपने-अपने रास्ते जाओ। चलो···चलो !

[पुरुष सबको घेरकर उनके चारों ओर घूमने लगता है।]

पुरुष : (घूमता हुआ) चलो-चलो !

सब : (एक स्वर में) नहीं।

पुरुष : चलो एक लाइन में खड़े हो जाओ ! जल्दी और जल्दी। हाथ पीछे बँधे हों। हाथ पीछे। नज़र सामने, हाथ पीछे, नज़र सामने।

[सब उसी तरह खड़े हो जाते हैं।]

पुरुष : तुम सब भयभीत हो, कोई अपने मालिक से, कोई अपनी ड्यूटी से, कोई अपनी बीवी से, कोई मृत्यु से, कोई ईश्वर से, कोई अपनी ज़िन्दगी से, कोई भविष्य से, कोई भूत से, तभी तुम्हें कोई एक विश्वास चाहिए। और वह विश्वास मैं दूंगा।

तीसरा : ताकि हम अपनी सच्चाई न देख सकें। मैं पा गया अपना सत्य।

पुरुष : रुको ! तुम्हारा सत्य मैं दूंगा।

तीसरा : सत्य भविष्य में नहीं। सत्य प्रत्यक्ष है।

पुरुष : इधर आओ ! चलो !

[छठा आता है।]

पुरुष : देखो। प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखो—क्या होता है विश्वास। मैं जिस पर जितना जैसा हाथ फैलाऊँगा, वह उसी अनुसार ऊँचा-नीचा हो जाएगा। छोटा बड़ा··· ऊँचा-नीचा, जैसा मैं चाहूँगा, जैसा मेरा हाथ उठेगा। देखो मेरा हाथ। ध्यान से देखो। देखो। देखो। जहाँ मैं चाहूँ, हाथ ले जा सकता हूँ। जहाँ चाहूँ रोक दूँ। यह किसी के हिलाने-डुलाने से नहीं हिल सकता। जहाँ मैं चाहूँगा वहाँ यह हाथ पहुँच जाएगा। जहाँ चाहूँ वहाँ रोक दूँगा। यह अभ्यास से नहीं विश्वास और संकल्प से होता है। चलो, मैं देता हूँ तुम्हें वही विश्वास। मुझे पता है—तुम लोगों के पास सब कुछ है, पर विश्वास नहीं है।

[छठा पुरुष बढ़े हुए हाथ के अनुसार छोटा-बड़ा होने लगता है।]

छठा : अरे यह तो सच है।

सातवाँ : नहीं।

छठा : मुझे विश्वास मिल गया।

सातवाँ : नहीं । यह विश्वास नहीं भय है। चलो मैं देखता हूँ यह हाथ ।

[पुरुष का वह हाथ उसे छोटा नहीं कर पाता ।]

सातवाँ : देखा, यह झूठा है । भय से विश्वास बनाना चाहता है ।

सब : क्यों ?

पुरुष : तुम लोग कुछ भी कहो, पर मेरे पास इतनी ताकत है कि मैं इस झूठ को सत्य बना दूँगा ।

[सारे लोग उसे घेरते हुए एक स्वर में कहते हैं—'नहीं ।'

पुरुष : हाँ ।

सब : नहीं ।

पुरुष : हाँ ।

सब : नहीं ।

पुरुष : तुम लोग एक हो गए ?

सातवाँ : तुम्हारे इस भयंकर खेल का रहस्य हमने जान लिया ।

पुरुष : नहीं ।

सब : हाँ ।

[सबके बीच में वह पुरुष चुप खड़ा रह जाता है ।]

[पर्दा]

क्रिकेट

पात्र

पुरुष
एम्पायर
खिलाड़ी
अन्य लोग

पुरुष : तो हाजरीन, अब पेश है क्रिकेट खेल। यह भारतीय क्रिकेट मैच देश की राजधानी दिल्ली के मैदान में खेला जा रहा है। यूं तो कायदे से एक क्रिकेट मैच सिर्फ पाँच दिन का ही होता है, पर यह क्रिकेट मैच पिछले कितने वर्षों से लगातार खेला जा रहा है। गौर से देखिए दर्शकगण—इन दो बल्लेबाजों को। इनके सभी खिलाड़ी 'आउट' हो चुके हैं, पर ये हैं कि इनका कहना है, यह भारतीय क्रिकेट मैच इन्हीं का है। कानून इनके हैं। मर्जी इनकी है। इन्होंने दोनों 'एम्पायरों' में से एक को इस खेल से बाहर निकाल दिया है और एक 'एम्पायर' है जिसके मुंह पर पट्टी बंधी है, हाथ पीछे बांध दिया गया है। अब देखिए यह खेल। विपक्षी दल के कप्तान गेंद फेंकने आ रहे हैं। खिलाड़ी दल के कप्तान बल्ला ताने खड़े हैं। जनता न जाने कितने दिनों से यह अजीबोगरीब क्रिकेट मैच देखने को मजबूर है।

[गेंद का फेंका जाना। विकेटकीपर 'कैच' लेता है। फील्डिंग करने वाले चिल्ला पड़ते हैं, 'आउट'। एम्पायर चुप खड़ा है। दूसरी बाल फेंकी जाती है। एम्पायर रोक देता है। फिर गेंद फेंकी जाती है। जाकर विकेट पर लगती है। सारे फील्डर्स एम्पायर को घेर लेते हैं। इस बीच बल्लेबाज मजे से खड़ा सिगरेट पीता है।]

पुरुष : खेल बड़ा मनोरंजक हो गया है। एम्पायर न जाने कब से फील्डिंग करने वाले खिलाड़ियों को कुछ समझा रहा है।

पुरुष : यह सही है कि विपक्षी टीम केवल फील्डिंग करते-करते थक गई है। मुझे पूरी हमदर्दी है इन लोगों के साथ। पर सवाल यह है कि ये लोग क्या गेंद फेंकने में गलती करते हैं? चलिए कोशिश कीजिए। हिम्मत न हारिए। चलिए अपना 'ओवर' पूरा कीजिए।

कप्तान : हर गेंद पर तो यह पिट जाते हैं, पर आप हैं कि 'आउट' होते ही नहीं।

विकेटकीपर : सब 'आउट' हो चुके हैं।

एक : यह सरासर बेईमानी है।

दूसरा : यह खेल नहीं, डाकाजनी है।

कप्तान : इनकी सारी टीम न जाने कब से 'आउट' हो चुकी है, पर जबर्दस्ती खेले जा रहे हैं।

तीसरा : यह भी कोई खेल है।

बल्लेबाज : सुनिए···आप सब लोग कान खोलकर सुन लीजिए। 'बैटिंग' करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। 'फील्डिंग' करना आप लोगों की जिम्मेदारी है।

कप्तान : खेल में यह जन्मसिद्ध अधिकार क्या होता है ?

बल्लेबाज : एम्पायर साहब, समझाइए इन्हें।

दूसरा बल्लेबाज : चलिए अपना 'ओवर' तो पूरा कीजिए।

[फिर खेल शुरू। गेंद का फेंका जाना। बल्ला हवा में मारना। शोर। फिर गेंद फेंकना।]

पहला दर्शक : वाह-वाह, क्या मारा है चउआ।

एम्पायर : 'फोर रन्स'।

दूसरा दर्शक : चउआ नहीं अपना सिर मारा है। 'कैच आउट' हो गया है। यह सरासर बेईमानी है, ज्यादती है।

पुरुष : कितना दिलचस्प नजारा है। सारी जनता दो हिस्सों में बँट गई है। ऐसा लगता है कि जनता को खेल में उतनी दिलचस्पी नहीं है, जितनी कि उन खिलाड़ियों में है, जो यह खेल खेल रहे हैं। इस बीच ओवर पूरा हो चुका है अब दूसरी ओर से गेंद फेंकने आ रहे हैं 'फास्ट बॉलर' सहायक कप्तान।

[गेंद का फेंका जाना। खेलना। 'रन' बनाने के लिए दौड़ना। 'रन आउट' का शोर। पर फिर भी दोनों बल्लेबाज स्वयं गिनते हुए 'रन' बनाते जा रहे हैं : 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 'रन्स'।]

बल्लेबाज : बारह रन्स।

कप्तान : 'रन आउट'।

बल्लेबाज : हमने दौड़कर बारह रन्स बनाए हैं, जनता गवाह है। क्यों हमने बनाए हैं न ?

दर्शक : भाई साहब, हमने तो अभी तक केवल छक्का सुना था, यह डबल छक्का क्या होता है ?

विकेटकीपर : यह 'रन आउट' हो गए हैं। यह बेईमानी नहीं चलेगी।

[जनता एक स्वर में कहती है—हाँ, हाँ, 'रन आउट' हो गए। खेल खत्म। अब चलिए आप लोग फील्डिंग कीजिए और इन्हें बैटिंग करने दीजिए।]

कप्तान : देखिए जनता कह रही है आप 'रन आउट' हो गए।

बल्लेबाज : जनता को क्या मालूम—क्या होता है 'रन आउट'। हम जनता के फैसले से क्रिकेट का यह खेल नहीं खेलते। जनता केवल दर्शक होती है। सुन लिया—सिर्फ दर्शक हो तुम लोग। चुपचाप उधर जाकर बैठो। दौड़े हुए मैदान में चले आए। भागते हो या नहीं। हुँह, चले आए फैसला देने।

कप्तान : ना आप लोग जनता की बात मानेंगे, ना एम्पायर का फैसला मानेंगे, ना इस खेल को कायदे-कानून से खेलेंगे···।

बल्लेबाज : पता है किससे जबान लड़ा रहे हो ?

कप्तान : सबको पता चल गया।

बल्लेबाज : यह खेल हमने शुरू किया। इसके नियम, कायदे-कानून हमने बनाए।

कप्तान : तो मानते क्यों नहीं ?

बल्लेबाज : हम नियम बनाते हैं, मानते नहीं।

[जनता चिल्लाती है—'नहीं'—तुम्हारी टीम आउट हो चुकी। चलो, अब फील्डिंग करो। दोनों बल्लेबाज एम्पायर के साथ चुपचाप बातें करते हैं।]

पुरुष : भाइयो और बहनो ! बल्लेबाज टीम का कहना है कि हमने कभी फील्डिंग की ही नहीं, केवल बैटिंग की ही आदत है—सो इन्हें यहीं 'बैटिंग' करने दिया जाए।

कप्तान : क्रिकेट खेल की तवारीख में ऐसा पहली बार सुना जा रहा है।

दूसरा बल्लेबाज : क्या इसके जिम्मेदार तुम लोग नहीं ?

कप्तान : अब पता चल गया इस खेल का रहस्य। हम सब जिम्मेदार हैं।

[सारे फील्डर्स आपस में बातें करते हैं।]

पुरुष : क्रिकेट का यह मैच, एक खतरनाक जगह पर पहुँचकर रुक गया है थोड़ी देर के लिए। अजीब समस्या है—खेलनेवाली टीम कह रही है—हम सिर्फ 'बैटिंग' कर सकते हैं, क्योंकि हम इतने सालों से लगातार वही कर रहे थे। भूल गए बिल्कुल —फील्डिंग क्या होती है—कैसे की जाती है, हमें नहीं मालूम।

पहला बल्लेबाज : जिसका जो काम है वही करे।

कप्तान : तुम्हारी टीम कब की आउट हो चुकी है। चलो अब करो फील्डिंग, हम करते हैं 'बैटिंग'। तुम्हारी पारी खत्म हुई।

कप्तान बल्लेबाज : तुम्हारे कहने से मेरी 'इनिंग' खत्म मानी जाएगी ?

कप्तान : 'एम्पायर' की बात मानो। उसके मुँह पर से पट्टी खोल दो। वह जो फैसला देगा, हमें मंजूर होगा।

[दोनों बल्लेबाज सलाह कर 'एम्पायर' के मुँह से पट्टी खोल देते हैं। पीछे बँधा हाथ खोल दिया जाता है।]

कप्तान बल्लेबाज : खबरदार ! समझ-बूझकर फैसला दो।

एम्पायर : आपकी पारी बहुत पहले खत्म हो चुकी है। आप 'आउट' हो चुके हैं।

कप्तान बल्लेबाज : यह झूठ है। हम तुम्हारा फैसला नहीं मानते।

[जनता चिल्लाती है—'यह अन्याय है। यह खेल नहीं, डाकाजनी है। यह सरासर जबर्दस्ती है।']

कप्तान बल्लेबाज : तुम लोगों की यह हिम्मत। एक-एक की खबर लूँगा। क्या समझ रखा है ?

[पिच को ही उठाकर दोनों बल्लेबाज चले जाते हैं। जनता और खिलाड़ी विरोध करते हैं।]

पुरुष : यह क्या हो गया ! सबके मुँह पर ताले लग गए। सारे खिलाड़ियों को खेल के

मैदान से खींचकर न जाने कहाँ ले जाया जा रहा है। चारों ओर सन्नाटा छा गया है। कहीं कोई खिलाड़ी नहीं दिखाई पड़ता। सारी जनता, वह विशाल दर्शक समाज कहाँ चला गया ? वह 'एम्पायर' भी नहीं दिखाई पड़ता। ऐसे वक्त पर हम अपने एक बुजुर्ग को बुलाते हैं—अपनी 'एक्सपर्ट ओपीनियन' देने के लिए। आइए महाराज, अपनी 'एक्सपर्ट ओपीनियन' दीजिए।

[एक बुजुर्ग आकर माइक पर बोलते हैं।]

बुजुर्ग : आ-हा-हा ! चारों ओर कितनी शांति है। यह संकट की घड़ी नहीं, शांतिपर्व है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि खेल फिर से शुरू हो। सब लोग अनुशासन में रहें। जै जगत। जै जनता।

[बुजुर्ग जाता है।]

पुरुष : आइए, हम लोग ईश्वर को धन्यवाद दें—खेल सचमुच फिर शुरू होने को है। दोनों एम्पायर मैदान में आ गए। पर यह क्या ? 'पिच' इस बार काटकर छोटी कर दी गई है। विपक्षी टीम का कप्तान इतना घायल कैसे हो गया ? अरे सारी टीम घायल है—जैसे सीधे अस्पताल से ले आई जा रही है। अरे, यह क्या ? फिर से 'टास' होगा ? एम्पायर से कहा जा रहा है 'टास' के लिए। तो लीजिए फिर से 'टास'। अरे, यह क्या बल्लेबाज कप्तान 'टास' को बीच में ही रोक लेता है—टास को जमीन पर गिरने ही नहीं दिया। चलो शुक्र है एम्पायर ने हाथ जोड़े। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। अब फिर से 'टास होगा। लो विपक्षी टीम ने इस बार 'टास' जीत लिया।

कप्तान बल्लेबाज : ठीक है। पर मैं फील्डिंग करने से पहले यह देखना चाहता हूँ कि विपक्षी टीम कहाँ है ?

कप्तान : ये खड़े हैं हम।

कप्तान बल्लेबाज : यह कैसी टीम है ? मैं एक-एक को जानता हूँ। ये क्रिकेट के खिलाड़ी नहीं हैं। सब अलग-अलग खेलों की टीम से आए हैं। कोई फुटबाल का खिलाड़ी है, कोई हाकी का, कोई बास्केटबाल का, कोई कबड्डी का, कोई···।

सारे खिलाड़ी : अब हम सब एक दल। एक टीम। एक कप्तान। एक नियम।

कप्तान बल्लेबाज : यह भी कोई टीम है !

कप्तान : चलो फील्डिंग करो।

कप्तान बल्लेबाज : 'बैटिंग' कभी की है, जो खेलने चले हो ?

कप्तान : चलो देखो हमारी 'बैटिंग'।

कप्तान बल्लेबाज : हुँ ! ये क्या खेलेंगे ? चलो।

कप्तान दूसरा : इन्हें अभी हरा देते हैं।

कप्तान बल्लेबाज : इनमें दम ही क्या है !

[जनता—'चलो, खेलो'। खेल शुरू। पहली बाल पर छक्का। जनता जय-जयकार कर उठती है।]

दूसरा कप्तान : अब उधर से नहीं, इधर से मैं 'बालिंग' करता हूँ।

एम्पायर : पहले उनका 'ओवर' तो पूरा होने दीजिए।

दूसरा कप्तान : मैं कहता हूँ, 'ओवर' पूरा हो चुका। अब मैं गेंद फेंकता हूँ।

[वह गेंद फेंकता है, फिर छक्का लगता है। जनता तालियाँ बजाती है। हर तरफ की गेंद पर छक्के लगते हैं। जनता जय-जयकार करती है।]

[पर्दा]

का। जनता जय-जयकार

या हूं।

कर फेंकता हूं।

यां बजाती है। हर तरफ
है।]

भगवती जागरण

पात्र

सभापति
संयोजक
मुख्य अतिथि
दो आदमी

[जैसे ही प्रकाश आता है, माइक उठाए पहला आदमी आता है। माइक ठीक करता है। दूसरा आदमी तीन कुर्सियाँ रखता है।]

दूसरा आदमी : कौन है बे ?

पहला आदमी : तू कौन है वे ?

दूसरा आदमी : भगवती जागरण का संयोजक।

पहला आदमी : 'माइक मैन' ?

[दोनों हाथ मिलाकर गले मिलते हैं। दोनों एक-दूसरे के पाकेट में हाथ डाल देते हैं।]

दूसरा आदमी : बड़ी खस्ता हालत है तुम्हारी।

पहला आदमी : आने दो किसी का इलेक्शन। बड़े से बड़े लीडर के मुँह पर माइक लगायी है मैंने।

दूसरा आदमी : बड़ी से बड़ी मीटिंगें मैंने 'कन्वीन' की हैं—कन्डोलेंस मीटिंग से लेकर ए०आई० वी० सी० एन० सी तक। मैं ही संयोजक, मैं ही सभापति, मैं ही जनरल सेक्रेटरी, मैं ही उपसभापति···

पहला आदमी : 'ग्लैड टू मीट यू' और क्या हालचाल हैं ?

दूसरा आदमी : तुम सुनाओ।

पहला आदमी : और···?

[दूसरा आदमी बायीं ओर चला जाता है। पहला आदमी माइक टेस्ट करता है।]

पहला आदमी : हेलो टेस्टिंग···एक-दो-तीन···हेलो-हेलो ! वन टू थ्री···जरा टेस्ट करने दो भाई···। (गाता है।)

[पीछे से वही सभापति बनकर आता है ?]

सभापति : अभी मंत्री जी नहीं पधारे···।

पहला आदमी : अजी, मैं ही क्या बुरा हूँ···काम चलाने से मतलब, या दाँत गिनने से। (कुर्सी पर झट बैठकर) हरि ओ३म् जब बोलो तब रामै राम।

[बायीं ओर से मुख्य अतिथि का प्रवेश। सभापति दौड़कर उन्हें एक ओर खींचता है।]

सभापति : अभी नहीं, अभी नहीं। आपको बाकायदा यहाँ आना चाहिए···ऐसे नहीं··· ऐसे नहीं ! (अन्दर खींच ले जाता है।)

सभापति : (माइक पर) सज्जनो···देवियो और सज्जनो···आप लोग शान्ति से बैठ जाइए···आसन ग्रहण कीजिए···'प्लीज सिट डाउन'। हाँ, हाँ, उमस है, गर्मी है, ठंड है, तपिश है, भाई यही तो हमारे जलवायु की विशेषता है, देवियो और सज्जनो ? देखिए हमारे मुख्य अतिथि जो अपने निवास से चल पड़े हैं।···

[मुख्य अतिथि फिर दौड़ा आता है, संयोजक उसे खींच ले जाता है।]

सभापति : देखिए, संयोजक जी, उनसे कहिए, अगर इस तरह धड़धड़ाते हुए यहाँ आ गए तो हो गया सारा सत्यानास।···मुख्य अतिथि को देर से आना ही चाहिए, वरना विश्वास कौन करेगा 'चीफ गेस्ट' पर ! हाँ तो सज्जनो और देवियो, अब हमारे मुख्य अतिथि जी अपने बंगले से चल पड़े हैं। अभी-अभी उनके पी० ए० का टेलीफोन आया है कि वह चल पड़े हैं। बस, पहुँचते ही होंगे, गाड़ी से आने में भला देर ही कितनी लगती है।

[एक किनारे मुख्य अतिथि और संयोजक में संघर्ष होने लगता है। संयोजक हाथ-पैर जोड़कर किसी तरह उन्हें भीतर खींचता है और आकर सभापति से कहता है कि उन्हें आने दिया जाए।]

सभापति : अच्छा, गुड···हाँ तो सज्जनो ! यह बड़े सौभाग्य की बात है, कि हमारे मुख्य अतिथि जी अब पधार गए हैं। हम उनका सादर स्वागत करते हैं।

[सभापति जाकर उन्हें ले आता है। मुख्य अतिथि दौड़कर कुर्सी पर बैठना चाहता है पर वे दोनों उसे खींच लेते हैं और एक विशेष चाल और मुद्रा में चलाकर लाते हैं।]

संयोजक : अब सबसे पहले···।

सभापति : सावधान ! सभापति मैं हूँ।

संयोजक : मैं संयोजक हूँ। संयोजक का स्थान सभापति से बड़ा होता है। हाँ नहीं तो।

सभापति : मैं बड़ा हूँ।

[दोनों झगड़ने लगते हैं।]

दोनों : आर्डर···आर्डर ! हमें आपस में झगड़ा-टंटा नहीं करना चाहिए। हम लाटरी निकाल कर तय कर लेते हैं।

[लाटरी निकाली जाती है।]

सभापति : अरे, यह तो कोरा है।

संयोजक : यह भी कोरा है।

[दोनों गाते हैं—]

कोरा कागज था यह मन मेरा
लिख दिया नाम इस पे तेरा।

[संयोजक मुख्य अतिथि के गले में माला डालता है। फिर वही माला निकाल कर सभापति उसके गले में डालता है। संयोजक माला निकाल कर पाकेट में रख लेता है।]

सभापति : हाँ, तो अब हमारा कार्यक्रम शुरू होता है। सबसे पहले संयोजक जी, मुख्य अतिथि का परिचय देकर उनका स्वागत करेंगे।

संयोजक : यह परम सौभाग्य की बात है···इट इज़ आवर प्राउड प्रिवलेज···यह खुश-किस्मती की बात है कि हमारे मुख्य अतिथि जी हमारे बीच पधारे हैं, आए हैं··· तशरीफ ले आए है (**पूछ-पूछ कर परिचय देने लगता है—बीच में कभी-कभी मुख्य अतिथि उसे टोकता रहेगा**) आपका शुभ नाम ?···क्या ?···सुरेन्द्रपाल·· महेन्द्र पाल···? अच्छा जी, आपके नाम से आज कौन नहीं परिचित है ? मतलब परिचित कौन नहीं है ? आपका परिचय देना सूरज को दीपक दिखाना है और···और··· आगे बताइए न···आजकल क्या करते हैं ? क्या कहा ? अर्थ···अच्छा···जी···जी ···जी···जी ! हाँ तो सज्जनो, आजकल आपकी पार्टी देश के लिए, मुल्क के लिए, राष्ट्र के लिए···क्या बताया अपनी पार्टी का नाम ?···क्या···क्या ? ओह, हाँ तो आजकल आपकी पार्टी राष्ट्र के जीवन में कुएँ खोद रही है। कुएँ खोदना एक पवित्र काम है। इसका बड़ा राष्ट्रीय महत्त्व है···। हाँ तो मैं यह कह रहा था··· सुरेन्द्रपाल···महेन्द्रपाल···क्या राजेन्द्र प्रसाद ?···हाँ ठीक है। राजेन्द्र नाम कितना 'लकी' नाम है···राजेन्द्र प्रसाद हमारे राष्ट्रपति थे···हाँ तो आपके नाम मे कौन अपरिचित नहीं है···मेरा मतलब सुपरिचित नहीं है। तो···तो···तो··· तो···।

[सभापति उसके मुँह पर हाथ रख कर कुर्सी पर बिठा देता है।]

सभापति : (**माइक पर**) हाँ तो सज्जनो, यह बड़े दुख की बात है···अर्थ, किसने कहा दुख की बात है ?···कमाल है, यहाँ दुख किस बात का ? (**संयोजक के मुँह पर से जैसे ही जरा-सा हाथ हटता है, वह तो···तो···कहने लगता है**) क्या तो···तो··· की रट लगाए हैं ?

संयोजक : मुझे अपनी बात पूरी करनी है···तो···तो···तो !

[सभापति उसका मुँह दबाए रखता है।]

सभापति : हाँ तो यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हमारे बीच में मुख्य अतिथि आ गए हैं और वह इस जलसे का···वही बात कान्फ्रेंस का उद्घाटन करेंगे। अब मैं उनसे दरख्वास्त करूँगा कि वह···

[मुख्य अतिथि उठने लगता है। संयोजक उसे पकड़ कर बिठा लेता है]

सभापति : कीर्तन कलाविधि गोल्ड मेडलिस्ट कथावाचक, राष्ट्रीय भाषणकर्ता, माँ

मेहरांवाली के सपूत श्री श्री सुरेन्द्रपाल महेन्द्रपाल उर्फ चुन्नी प्रसाद ढोलक मास्टर जी हमारे मुख्य अतिथि का नाम कौन नहीं जानता ?

लोक लोक में तू ही है लोक परे तेरा वास।
स्वांस सचाई पवन में वास न होवै आस॥

नयी-नयी फिल्मी तर्जों पर जो गाने, जो भाषण आप लोग हर जगह सुनते हैं, वह सब इन्हीं की करामात है। अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे मुख्य अतिथि के पास बिल्कुल वक्त नहीं है। उन्हें अब एक जरूरी मीटिंग में शरीक होने के लिए जाना है।

मुख्य अतिथि : नहीं, मुझे कहीं नहीं जाना है। मुझे बोलना है। छोड़ दो मुझे। छोड़ दो···।

सभापति : सही है। हम अब और ज्यादा इनका वक्त बर्बाद नहीं करना चाहते। हम खुशी से इन्हें छोड़ दे रहे हैं।

संयोजक : तो···तो···!

सभापति : वगैरह···वगैरह !

[मुख्य अतिथि माइक पर आकर कुछ बोलना चाहता है। दोनों उसे पकड़े हुए दायीं ओर खींच ले जाते हैं। पृष्ठभूमि से एक फिल्मी गाना बज उठता है। मुख्य अतिथि भागा हुआ आता है।]

मुख्य अतिथि : माइक मेरा है। मैं कहता हूँ—मैं इस माइक पर पिछले कित्ते सालों से बोलता आ रहा हूँ। मैं न भी बोलूं—तो भी यह माइक बोलता रहता है। मेरी तकरीरों के रिकार्ड्स बने हुए हैं—टेप किए हुए मेरे भाषण हैं। माँ भगवती, शेरांवाली, चारों ओर तेरी माया है। तेरी महिमा, तेरा प्रताप दिशा-दिशा छाया है। तूने हमें बचाया, तूने हमें सिखाया, तूने।···तो भगवती जागरण का मैं उद्घाटन करता हूँ। जो शून्य, जो 'वैक्यूम' राजनीति ने इसमें पैदा किया, भगवती जागरण से वह भर जाएगा। सुनने वाले नहीं हैं···तो क्या हुआ। लोग मेरी आवाज सुनते ही लौट आएँगे। और नहीं आएँगे तो भी क्या फर्क पड़ता है। मैं देख रहा हूँ—मेरे सामने लाखों लोग खड़े हैं···लाखों लोग बैठे हैं···लाखों लोग शोर मचा रहे हैं। मैं उन्हें सन्देश दे रहा हूँ। मानवता का संदेश···राष्ट्रीय संकट का संदेश। भाइयो और बहनो, आज हमारा देश एक संकट की स्थिति से गुजर रहा है। आपको त्याग, कुर्बानी करनी है। भगवती जाग रही हैं। जै हो माँ शेरांवाली।

[गाना—बतर्ज फिल्म 'मिले हम चोरी से बँधे एक डोरी में']

शिवां दे गणपतिन् गौरां दे गणपतिन्।···

नहीं, नहीं, मुझे बोलने दीजिए···मुझे बोलते रहने दीजिए। मैं यहाँ खड़ा बोल रहा हूँ तो इसके माने हैं, आप लोग मुझे सुन रहे हैं। मतलब आप हैं। और आप

हैं तो मैं भी हूँ। मैं हूँ तो आप हैं। वैसे कुछ फर्क नहीं पड़ता—मैं बात कर रहा हूँ।

[माइक वाला आकर माइक उठा ले जाता है।]

मुख्य अतिथि : क्या फर्क पड़ता है। आप लोग यहाँ नहीं हैं, फिर भी मैंने अपनी जिम्मेदारी निभाई। आप लोग हैं या नही हैं···माइक है या नहीं है, मैं हूँ या नहीं हूँ—क्या फर्क पड़ता है। पर मैं हूँ—यही बुनियादी बात है···और···और··· और···और···और···।

[प्रकाश बुझता है।]

...—मैं बात कर रहा

..., फिर भी मैंने अपनी
...नहीं है, मैं हूँ या नहीं
...है···और···और···

एक शून्य की हत्या

पात्र

दो व्यक्ति
दर्शक

[सूने मंच पर सूत्रधार एक दर्शक बनकर आता है। एक हाथ में छाता, एक हाथ में डंडा लिए हुए है। एकाएक पीछे से आवाज कौंधती है—'खबरदार···रुक जा···पकड़ लो···भागता कहाँ है ?'

पहले व्यक्ति का पीछा करता हुआ दूसरा व्यक्ति आता है।]

दूसरा व्यक्ति : खबरदार ! अगर भागने की कोशिश की ! मरने के लिए तैयार हो जाओ। हाथ ऊपर उठाओ···नहीं तो आँखें मूंद लो···दीवार की ओर मुंह घुमा लो। मर जाने का यही बेहतर तरीका है। ···चलो ! घूम जाओ। दीवार की तरफ !

पहला व्यक्ति : मगर···?

दूसरा व्यक्ति : अगर मगर कुछ नहीं। बस्स, तुम्हें अब मरना है।

दूसरा व्यक्ति : हाथ जोड़ता हूँ, मेरी जान बख्श दो। जो माँगो, दे सकता हूँ—धन-दौलत···।

पहला व्यक्ति : नहीं ! सिर्फ तेरी जान···सावधान !

पहला व्यक्ति : अच्छा, मुझे अपनी 'विल' तो लिख लेने दो।

दूसरा व्यक्ति : नहीं···कुछ नहीं।

पहला व्यक्ति : दुनिया के नाम पैगाम !

दूसरा व्यक्ति : पैगाम, तेरी मौत देगी।

[पहला व्यक्ति दीवार की तरफ मुंह करके खड़ा हो जाता है। दूसरा व्यक्ति पिस्तौल तानता है। मंच के उस दर्शक को छींक आती है। दूसरे व्यक्ति के हाथ से पिस्तौल छूटकर दूर जा गिरती है।]

दूसरा व्यक्ति : कौन ?

दर्शक : कुछ नहीं···कुछ नहीं···कोई नहीं···कोई नहीं !

दूसरा व्यक्ति : कौन है तू ? यहाँ कैसे ?

दर्शक : मुझे कुछ नहीं सुनायी देता। मैं बहरा हूँ। नहीं-नहीं, मुझे नहीं, उसी को ?

दूसरा व्यक्ति : किसे ?

दर्शक : नहीं, नहीं, मुझे कुछ नहीं दिखायी देता···मैं अंधा हूँ।

दूसरा व्यक्ति : भाग यहाँ से ! भागता है कि नहीं।

[दर्शक एक ओर हट जाता है। दूसरा व्यक्ति पहले व्यक्ति पर गोली चलाकर तेजी से चला जाता है। पहला व्यक्ति घायल होकर गिरने और मर जाने का अभिनय करता है। सहसा उठकर अपने कपड़े ठीक करता है।]

पहला व्यक्ति : देवियो और सज्जनो···! लेडीज एंड जेन्टिलमैन। जैसा कि आप लोगों ने अभी देखा···मुझ पर गोली चलायी गई और अब मैं मर चुका हूँ। देखिए गोली यहाँ लगी थी···और दिल में इत्ता बड़ा सूराख करती हुई दीवार के आर-पार चली गई। मुझे बेहद खुशी है कि मैं मर चुका हूँ और इस वक्त मेरे तन-बदन में कहीं कोई दर्द नहीं। घाव बेशक हुआ है, मगर भर जाएगा—इत्मीनान ही नहीं, विश्वास है मुझे। आप लोगों ने मुझे मरते हुए देखा और अब आपके सामने हूँ, यह भी देख रहे हैं। जी नहीं, मैं अपने कपड़े उतारकर वह सूराख नहीं दिखा सकता। 'आई एम सॉरी, यू नो।' अच्छा हुआ, गोली पीछे से मेरे दिल को चीरती हुई निकल गयी। मैं दिल का मरीज था, मैं इसी छः तारीख को 'हार्ट का आपरेशन' कराने इंगलैण्ड जा रहा था। यह देखिए, मेरा 'वीसा', मेरा 'पासपोर्ट'। इंगलैण्ड के सबसे बड़े हार्ट स्पेशलिस्ट मर्जन, सर जेम्स ठीक इसी वक्त मेरे दिल का आपरेशन कर रहे होते। मगर अब मेरा दिल बिल्कुल ठीक हो गया। हाँ, थोड़ी आवाज बदल गयी। इतना तो फर्क पड़ना ही चाहिए। अच्छा लगता है। इसी का नाम तवारीख है। मुझे याद है, आपने भी अखबारों में पढ़ा होगा। जब यह देश आजाद हुआ, तब पहली गोली मेरे सीने पर दागी गयी—जमींदारी खत्म करके—तब पहली बार मेरी आवाज बदली। मैं भारतवर्ष को आर्यावर्त कहने लगा। फिर दूसरी बार मुझ पर गोली चलायी गई—प्रिवीपर्स खत्म करके। मेरी आवाज में भारीपन आ गया। मैं इस मुल्क को हिन्दोस्तान कहने पर मजबूर हुआ। मैं फिर जिंदा हुआ—उस वक्त मेरा गला बेतरह खराब हो गया। मुझ पर उस पिस्तौल की गोली से नज़ला उतर आया (**छींकना, नाक साफ करना, खाँसना**) और अब मुझ पर ब्लैक मनी, अपार ताकत, धन-दौलत-संग्रह का चार्ज लगाकर गोली चलाई गई।···

दर्शक : (**सहसा आकर**) पर तू मरता क्यों नहीं ?

पहला व्यक्ति : 'हू आर यू ? बाई द वे।' तू कौन है ?

दर्शक : मैं···मैं···मैं मजदूर हूँ। वह इमारत देख रहे हो न, वह ऊँची दस मंजिला इमारत···उसी में मजदूर हूँ।

पहला व्यक्ति : अयँ, तू तो कहता था—तू बहरा है···अंधा है।

दर्शक : हाँ-हाँ, पर कभी-कभी सुनाई पड़ने लगता है···दिखाई देने लगता है।

पहला व्यक्ति : (**उत्तेजित**) यही है···यही है जिसकी वजह से मुझ पर गोली चलाई जाती रही है। यही है···भागता कहाँ है, पकड़ लो, पकड़ लो। (**उसका छाता छीन लेता है**) आज मैं तेरी जान ले लूँगा। तुझे खत्म करके छोड़ूँगा।

दर्शक : हे साहेब, मुझे ताव मत दिखाओ। मैं तो अपने रास्ते जा रहा था, भूल से इधर चला आया। सच्ची बात तो यह है कि किसी ने मुझे चकमा दे दिया—'इधर नाटक हो रहा है, उधर से जा।' मैंने सोचा, जरा मैं भी देख लूँ—साहेब लोग कैसा नाटक खेलते हैं।

पहला व्यक्ति : खबरदार, तू इसे साहेब लोग का नाटक कहता है। मुझे गोली से दागा

गया, तू यहाँ खड़ा देखता रहा···बदतमीज···झूठा।···

दर्शक : खबरदार, जबान सम्हाल कर बोलो साहेब, वरना···

पहला व्यक्ति : (छाते से डराता हुआ) वरना क्या···क्या कर लेगा तू ? तुझसे डरता हूँ या तेरी सरकार से डरता हूँ। कौन मार सकता है मुझे ? सिर्फ मेरी आवाज बदलती जाएगी, बस···।

[दोनों में पैंतरेबाजी होने लगती है। डंडे और छाते से जैसे तलवार-युद्ध होने लगता है। दर्शक पहले व्यक्ति को मारकर गिरा देता है और डंडे से उसका कलेजा भोंक कर जाने लगता है। पहला व्यक्ति छाते की मुठिया से उसका पैर फँसाकर गिरा देता है। दर्शक के गले में छाते की मुठिया फँसाए उसे ले चलता है।]

पहला व्यक्ति : हे प्यारे भाई, समझदारी से काम ले। वह दस मंजिली इमारत जो बन रही है न, वह मेरी ही है। लोग भूल जाते हैं, बताओ भला, कौन मार सकता है मुझे ? ठीक कह रहा हूँ न। बोल, तुझे कितने रुपये मजदूरी मिलती है···बोल।

दर्शक : तीन रुपये रोज।

पहला व्यक्ति : रोज का खर्चा ?

दर्शक : चार रुपये।

पहला व्यक्ति : चल, मैं तेरी मजदूरी चार रुपये रोज कर देता हूँ।

दर्शक : भगवान आपको सुखी रखे।

पहला व्यक्ति : कल महँगाई बढ़ गई तो सारी जिम्मेदारी उसी भगवान की है। क्यों ठीक है न ?

दर्शक : जी, बिल्कुल। हें हें हें।

[पहला व्यक्ति दर्शक को छाते से बाँधे हुए मंच पर घूम रहा है।]

पहला व्यक्ति : तेरी उमर क्या है ?

दर्शक : यही पच्चीस-छब्बीस साल।

पहला व्यक्ति : अब तक कितना कर्ज चढ़ चुका है ?

दर्शक : यही छः-सात सौ। उसे उतारने के लिए 'ओवरटाइम' करता हूँ।

पहला व्यक्ति : यहाँ तेरा और कौन है ?

दर्शक : बड़ा भाई था, पिछले साल मर गया। इमारत की छठी मंजिल पर से काम करते हुए गिरकर···।

पहला व्यक्ति : कांट्रेक्टर ने पाँच हजार रुपये दिए होंगे तुम्हें !

दर्शक : कहाँ ? कोई सिफारिश नहीं थी।

पहला व्यक्ति : ओ हो, मुझे इस बात का सख्त अफसोस है।

दर्शक : यही कांट्रेक्टर ने भी कहा था।

पहला व्यक्ति : क्या ? यह सरासर बेईमानी है कांट्रेक्टर की !

दर्शक : यही पुलिस अफसर ने कहा था।

पहला व्यक्ति : यह अन्याय है।

दर्शक : यही मजदूर यूनियन के एक मंत्री जी ने कहा था।

पहला व्यक्ति : ओ हो, अब मैं जो कहता हूँ, वह सुन !

दर्शक : यही हमारे गुरु महाराज ने कहा है।

पहला व्यक्ति : ओ हो, सुन तो सही।

दर्शक : ओ हो, सुनो तो सही।

पहला व्यक्ति : तुम लोग सारे मजदूर मिलकर कांट्रेक्टर के खिलाफ···।

दर्शक : सारे मजदूर अलग-अलग प्रान्तों के हैं।

पहला व्यक्ति : तो क्या हुआ, दुनिया के सारे मजदूर एक हैं, कहीं किसी किताब में पढ़ा था।

दर्शक : सारे मजदूर डरते हैं, कांट्रेक्टर उनको काम से छुट्टी कर देगा।

पहला व्यक्ति : डरने से कैसे काम चलेगा ? स्ट्राइक करो, हड़ताल।

दर्शक : की थी। पुलिस हमें घेर कर लाठी चार्ज करती है।

पहला व्यक्ति : मुकाबला करो।

दर्शक : कैसे ? हम सौ मजदूर होते हैं तो दो सौ पुलिस के सिपाही होते हैं।

पहला व्यक्ति : तेरा गला दुख रहा होगा, ले तुझे आजाद करता हूँ। चल तू अपना बयान दे। मैं अपने अखबार में छापूंगा।

दर्शक : बोलूँ ? पर बोलना नहीं आता !

दूसरा व्यक्ति : सामने देख।

दर्शक : कुछ नहीं दीखता।

[दर्शक निःशब्द बोलने लगता है। पहला व्यक्ति इसी बीच निकल जाता है। दूसरा व्यक्ति दौड़ा आता है।]

दूसरा व्यक्ति : कहाँ गया ? सुना है, वह मरा नहीं।

दर्शक : वह कभी मरा भी था ? अब पता चला, तू महज एक शून्य की हत्या करता रहा।

दूसरा व्यक्ति : मारा कैसे नहीं ? ···सबूत मौजूद हैं।

दर्शक : वह रूप बदलकर जिन्दा होता रहा।

दूसरा व्यक्ति : मैं उसे फिर मारूँगा।

दर्शक : वह फिर जिन्दा हो जाएगा।

दूसरा व्यक्ति : फिर···!

दर्शक : जब तक तू है—वह जिन्दा रहेगा।

दूसरा व्यक्ति : क्या बकता है ?

दर्शक : ले मुझे मार···यही तेरे लिए आसान है।

दूसरा व्यक्ति : क्या ? कौन है तू ?

दर्शक : एक गरीब, आम इंसान जिसे तू सदा धोखा देता रहा—उसकी हत्या का नाटक करके।

[दर्शक के ऊपर दूसरे व्यक्ति ने पिस्तौल तान ली है। दर्शक दोनों हाथ उठाकर उस पर प्रहार करने चलता है।]

डिनर पार्टी

पात्र

मेजबान
सात आदमी
दो स्त्रियाँ

[बुफे डिनर पार्टी की टेबुल लगी है—प्लेट्स लगी हैं। मेहमान आते हैं। चुपचाप एक-दूसरे को 'विश' करते हैं। हाथ मिलाते हैं। परस्पर बड़े प्रेम से प्रणाम करते हैं। श्रद्धा-विनय का वातावरण छाया हुआ है। मेजबान आता है। इस दृश्य में वही सूत्रधार बेयरा का काम करता घूम रहा है।]

मेजबान : स्वागत···'वेलकम' ! शुक्रिया ! देवियो और मेरे मेहरबान दोस्तो ! मेरी पचासवीं सालगिरह पर यहाँ आकर आप लोगों ने जो मुझे इज्जत और दुआएँ दी हैं, मैं इसके लिए तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ। मैं चाहता हूँ—डिनर शुरू होने से पहले, मैं आप सबका एक-दूसरे से परिचय करा दूँ। इधर से शुरू करना बेहतर होगा। यह हैं मिस्टर जी०पी० अरोरा—शहर के सबसे बड़े नेशनलाइज्ड बैंक के एजेन्ट ! यह हैं मिस्टर पी०डी० खोसला—कांट्रेक्टर। आप हैं महाशय धनीराम कौंसलर, और मेरे बचपन के दोस्त ! आप हैं प्रोफेसर बनर्जी—प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ! आप हैं के० बी० सिनहा—कन्ट्रोलर आफ एकाउन्ट्स। आप हैं श्रीमती प्रसाद—प्रिंसिपल लेडी कालेज, आप हैं मिस बाधवानी—टेलीविजन प्रोड्यूसर···। आप हैं मुबारक सिंह—शहर के सबसे बड़े राजनीतिज्ञ। आपको कौन नहीं जानता—मधुकर शर्मा—मजदूर संघ के प्रधान, आप हैं नेशनल हिन्दू पार्टी के चेयरमैन और विरोधी पार्टी के रहनुमा। आप हैं 'वीनस' होटल के प्रोड्यूसर रंधावा साहब। आप हैं 'नेशनल टाइम्स' के एडीटर—श्री तेजपाल सिंघानिया। आप हैं श्री कपूर—इंड्रस्ट्रियलिस्ट···वगैरह-वगैरह···यू नो।···

[सब लोग परस्पर निःशब्द बातों में डूब जाते हैं। कभी-कभी बीच में तरह-तरह की हँसी उठ जाती है। लोग निःशब्द बातों में बेतरह मस्त हैं।]

मेजबान : डिनर शुरू होने से पहले मैं आप लोगों से माफी माँग लेना चाहता हूँ—मैं अपनी सालगिरह पर 'ड्रिंक्स' नहीं 'आफर' कर सका। यह मेरा वसूल रहा है—कम से कम साल में एक दिन···'यू नो' ! मगर तन्दूरी चिकन मैंने काहिरा से मँगवाया है। 'सीक कबाब' हांगकांग से। डिनर में कोई चीज अनाज की नहीं बनी है—'आई मीन नो सीरियल'। मुल्क में अनाज की इतनी कमी है, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए। 'शुगर' की कमी है—इसलिए इंगलैण्ड से पेस्ट्रियाँ आ गई हैं। वगैरह-वगैरह···।

[अपने हाथ से प्लेट उठाकर मेहमानों को देना शुरू करता है। लोग बढ़कर एक-दूसरे को प्लेटें देना चाहते हैं—बड़ी सभ्यता और शराफत से काम शुरू होता है—

धीरे-धीरे लोग खाने पर बढ़ते हैं—सभी एक-दूसरे से कहते हैं—'पहले आप··· जी नहीं, पहले आप'। धीरे-धीरे लोग टेबुल के चारों ओर घूमने लगते हैं और थोड़ी ही देर बाद सब खाने पर टूट पड़ते हैं। धकापेल शुरू होती है। लोग आपस में लड़ना शुरू करते हैं। झीना-झपटी होने लगती है और बाकायदा लड़ाई होने लगती है। गिद्धों की जमात की तरह लोग आपस में गुत्थमगुत्था, मार-पीट, लूट-खसोट करने लगते हैं। चम्मच, काँटे, छुरी और प्लेटों से जंग छिड़ जाती है। कोई किसी के सीने पर चढ़ बैठा है—कोई किसी को गले से पकड़े हुए है। कोई छुरी से जिबह कर रहा है। कोई प्लेट से दूसरे का सिर फोड़ने लगा है। बेयरा एक-दूसरे की मदद करता रहता है—सामान देने में—लड़ाई के लिए।]

मेजबान : असली चीज़ भोजन नहीं है—संतोष है। मैं कहता हूँ, हम बिना अन्न के, खुराक के रह सकते हैं, मगर तहजीब के बिना हम नहीं रह सकते। पेट की भूख की लड़ाई से बड़ी लड़ाई है आत्मा की। हमें आत्मरक्षा की चिन्ता करनी चाहिए। अगर हमारी आत्मा जिन्दा है, तो हमें किसी चीज़ की कमी नहीं। गरीबी कोई समस्या नहीं है। गरीबी-अमीरी परमात्मा की बनाई चीज़ है। असली चीज़ है विचार, दृष्टिकोण, जीवन-दर्शन। अगर हम अपने विचारों में, उद्देश्यों में अमीर हैं, धनी हैं तो हम गरीब कहाँ हैं? हमारी समस्या गरीबी नहीं, अमीरी है, वह अमीरी जो गरीबी से पैदा हुई।

[सारे लोग धीरे-धीरे तालियाँ बजाने लगते हैं।]

एक आदमी : (प्लेट में देखकर) अरे ! यह देखिए, यह किसी की जबान कटकर गिर गई है ? जी, आपकी है ? नहीं बोल सकते तो इशारे से बता दीजिए। जाहिर है, बिना जबान के आप कैसे बोल सकते हैं ? जी···हाँ···तो।

दूसरा आदमी : जी नहीं, मेरी जबान है। यकीन नहीं, यह देखिए।

एक आदमी : फिर यह किसकी जबान है ? दोस्तो, अपनी-अपनी जीभें देखिए···कमाल है, यह जीभ कहाँ से आ गई ? हो सकता है, नकली दाँतों की तरह नकली जीभ भी बनने लगी हो।

तीसरा आदमी : ओ हो, यह उँगली किसी की कटकर गिर गयी है।

मेजबान : नहीं-नहीं···ऐसे नहीं। तब तक ये कटी हुई चीजें फ्रिज में रखवा दी जा रही हैं। जब लोग डिनर खा चुकेंगे, तभी तो याद पड़ेगा।

[लोग आराम से डिनर खा रहे हैं।]

मेजबान : मेरा ख्याल है, इस डिनर के साथ-साथ इंडियन फिल्म म्यूज़िक चलेगा। मुझे पसन्द है।

[फिल्मी संगीत उठता है—धीरे-धीरे कम होता जाएगा। लोग डिनर खत्म करते-करते फिर बेहद शरीफ, अक्लमंद हो जाते हैं।]

पहली स्त्री : बहन जी, आपकी नेकलेस ! लीजिए, इसमें तो हीरे लगे हैं।

दूसरी स्त्री : आपके बुंदे···।

पहली स्त्री : शुक्रिया !

[हँसी का स्वर]

पहला आदमी : क्यों साहब, मुल्क की आबोहवा अच्छी नहीं है।

दूसरा आदमी : आप ज्योग्राफी की बात कर रहे हैं या राजनीति की !

[मीठी हँसी]

तीसरा आदमी : मैं समझता हूँ—असूल और विचारधारा ही सबसे बड़ी चीज है—लोग अब इस बुनियादी चीज को भूलकर गरीबी, बेरोजगारी और भूख की बातें करते हैं।

चौथा आदमी : हमारे मुल्क और समाज को एक धार्मिक आन्दोलन की सख्त जरूरत है।

[हल्की-सी हँसी]

पहली स्त्री : मुल्क में अनाज की कितनी कमी है, पता है ?

पाँचवाँ आदमी : आपने भी खूब कही—मैं तो आज पन्द्रह सालों से अनाज नहीं खा रहा हूँ। मनुष्य को आखिर कुछ त्याग करना ही चाहिए। मैं सिर्फ हाई प्रोटीन की चीजें खाता हूँ, वह भी उबली हुई—मसाला-तेल कुछ नहीं।

[बनावटी हँसी]

दूसरी स्त्री : मैं तो कोई भी हिन्दुस्तानी चीज पसन्द नहीं करती। मेरे यहाँ सब चीजें 'इम्पोर्टेड' हैं।

पहली स्त्री : अरे, आपके सीने में तो काँटा अब तक चुभा है ! लाइए मैं 'फर्स्टएड' कर देती हूँ।

चौथा आदमी : जी, शुक्रिया ! नहीं-नहीं, साड़ी मत फाड़िए···

[वह छुरी निकालती है। बेयरा मदद करता है।]

दूसरा आदमी : हमें धैर्य से काम लेना चाहिए।

दूसरी स्त्री : धैर्य से भी बड़ी चीज़ मानवता है।

[सिर हिलाकर स्वीकृतियाँ]

छठा आदमी : हमारी सरकार का फर्ज है कि···

सातवाँ आदमी : जी, सरकार कुछ नहीं करती, बड़ी धाँधली है।

छठा आदमी : मैं तो त्याग करने को तैयार हूँ, मगर स्वास्थ्य मेरा ठीक नहीं रहता।

सातवाँ आदमी : जी, सेहत ही तो बुनियाद है···'हेल्थ इज हेल्थ' !

[दोनों की ही-ही]

तीसरा आदमी : सवाल यह है कि यहाँ की जनता कुछ नहीं करती। जनता को चाहिए···।

छठा आदमी : सरकार को चाहिए।

सातवाँ आदमी : सरकार का फर्ज है।

छठा आदमी : मैं तो त्याग करने को तैयार हूँ।

[सारे लोग अपनी-अपनी बातें करने लगते हैं—सुनने वाला वहाँ कोई नहीं है—दूर से वही एक दर्शक उन्हें कान लगा कर सुन रहा है। लोग धीरे-धीरे जाने लगते हैं।]

मेजबान : देवियो और सज्जनो ! मेरे मेहरबान दोस्तो ! जाने से पहले अपनी-अपनी चीजें इत्मीनान से पहचान कर जरूर ले लीजिएगा। फ्रिज में आपकी चीजें हिफाजत से रखी हुई हैं। चप्पल-जूतों के साथ···गुडनाइट···बाई···थैंक्यू वेरी मच ! गुडनाइट···

[सब चले जाते हैं। बेयरा खाली टेबुल की चीजें निहारता रह जाता है। फिर वह उन्हीं मेहमानों की हँसियों की नकल करता है।]

ली। जनता को

कोई नहीं है—दूर
धीरे जाने लगते

हले अपनी-अपनी
की चीजें हिफाजत
यू वेरी मच !

ता है। फिर वह

हत्या की राजनीति

पात्र

एक आदमी
एक युवक
सूत्रधार

[एक समृद्ध आदमी अपने कमरे में आता है। रात के बारह बज रहे हैं। आते ही कोट उतारता है, टाई उतारने लगता है। तभी एक ओर से एक युवक एक हाथ में पिस्तौल और दूसरे हाथ में किताब लिए छिपा हुआ उसके कमरे में दाखिल होता है। फोन की घंटी बजती है।]

आदमी : हेलो, यस, अशोक सोमानी स्पीकिंग। इस वक्त ?···घड़ी देखो मिस्टर मलिक, रात के बारह बज रहे हैं। यस, यस, मैं अभी आ रहा हूँ डाइरेक्टर्स आफ कम्पनीज की स्पेशल मीटिंग से। यस···हाँ···हाँ···जी, मीटिंग के बाद मैं क्लब गया था—फारेन ट्रेड के ज्वाइंट सेक्रेटरी के साथ ब्रिज खेलकर आ रहा हूँ। अर्थ···उनकी बीवी को वह 'फारेन प्रेजेन्ट्स' पहुँचा दिया था न ? 'गुड···दैट्स राइट' ! क्या ? ···क्या कहा ? माल पकड़ा गया ? हवाई जहाज का वह माल···या शिप का ? ···ओह, माई गॉड ! ऐसा करो···जो सन्दूक भरा सोना है न, उसे वहाँ उसी जगह पानी में डाल दो। ओ हो···तुम डरते क्यों हो ? जीप से नहीं, दूसरी इम्पाला गाड़ी से जाओ। हिम्मत से काम लो ईडियट ! बकवास बन्द करो ! क्या···ह्वाट ? ओ हो, कल मैं देख लूंगा !···मैं खुद चीफ मिनिस्टर से मिलूंगा। इलेक्शन में हमने तीस लाख रुपये किसलिए दिए थे ? क्या ? क्या कहा ? धीरे क्यों बोलता है ? यस···यस···क्या ? पार्टी प्रेसीडेंट ने ऐसा कहा ?' 'इम्पासिबल' ···मैंने अपने हाथ से तीस लाख रुपये 'कैश' दिए हैं उनकी पार्टी के मंत्री महोदय को। 'डोन्ट बी सिली'···क्या, मंत्री महोदय ने सिर्फ दस लाख दिया ? बीस लाख खुद रख लिया ? ऐसा बताया प्रेसीडेंट ने ? ओह, गॉड ! इसमें हमारा क्या कसूर ?···खैर, इस वक्त मुझे आराम से सोने दो। बन्द करो बकवास···और झटपट सारा 'स्मगल्ड सोना' पानी में छिपा दो···हाँ-हाँ, उसी गहरे पानी में डाल दो। नॉनसेन्स···कावर्ड !

[फोन काट देता है। युवक इस बीच छिपता हुआ पलंग के नीचे घुस गया है। आदमी एक गिलास पानी पीता है—चैन की साँस लेता है और एक किताब निकाल कर पढ़ने लगता है।]

आदमी : रात के बारह बजे एक खूनी किसी रईस मालदार का 'मर्डर' करने उसके कमरे में दाखिल होता है—वह उसके पलंग के नीचे आ छिपता है—तो आदमी का पहला फर्ज है अपने कमरे के सारे दरवाजों और खिड़कियों को खोल देना। **(खोलने का अभिनय)** हो सकता है खूनी बहुत दिनों से आदमी के पीछे पड़ा हो और उसे उस खास मौके की तलाश हो, जिस दिन उसकी बीवी नर्सिंग होम में

'एडमिट' हो। नौकर-चाकर सो गए हों। दरबान किसी वजह से छुट्टी पर चला गया हो। 'यस, दैट्स राइट'···ठीक बिल्कुल ! अपनी हिफाजत के लिए पहला काम—अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करना—'यौगिक एक्सरसाइज' !

[पलंग पर लेटकर यौगिक क्रियाएँ करने लगता है। नीचे खड़ा होकर कुछ अन्य क्रियाएँ करता है—फिर फर्श पर आसन मार कर बैठता है और प्राणायाम करने लगता है—बीच-बीच में चुपके से पलंग के नीचे देख रहता है। एक टार्च लेता है और उसे जलाकर अपने चेहरे पर प्रकाश फेंकता है और छिपकर बड़ी होशियारी से पलंग के नीचे रोशनी में उस युवक को देखता है। बेहद खुश होता है।]

आदमी : उमर ज्यादा नहीं है। यही बाईस-तेईस साल। सेहत भी कोई ज्यादा अच्छी नहीं है। हो भी कैसे ? दिन-रात कॉफी, सिगरेट और वही गंदी किताबें पढ़ना। हुअँ, सशस्त्र क्रान्ति···'ब्लडी रेवेल्यूशन' (**हँसता है**) गरीबी···'अनइम्पलायमेंट'। उसे मिटाने का यह उपाय कि हमें इस तरह कट कर दिया ! (**हँसते हुए रिवाल्वर निकाल लेता है**) 'यस···माई डियर 'ब्रेव फैंड' मेरे दुस्साहसी, नाराज दोस्त··· नहीं-नहीं मेहमान। (**किताब खोलकर पढ़ता है**) यस, नाऊ, आई एम रेडी···मैं अब तैयार हूँ। निकल आओ बाहर ! आई चैलेंज यू !

लेफ्ट राइट लेफ्ट।
लेफ्ट राइट लेफ्ट।
पीछे घूम !
सावधान !

जी हाँ ! मैं भी कालेज के दिनों में एन०सी०सी० में रहा हूँ। बाहर निकल ! अयँ, दुश्मन बाहर नहीं निकल रहा है। हो सकता है, वह बम लेकर आया हो और वहीं से मुझ पर बम फेंक दे। या दुश्मन 'टाइम बम' के फूटने का इन्तजार कर रहा हो। सावधान ! याद रखो, मेरे कपड़े 'बुलेटप्रूफ' हैं। मुझे कतई कोई डर नहीं।

[युवक तेजीसे पिस्तौल ताने निकलता है।]

युवक : सावधान !

[दोनों एक-दूसरे को देखने लगते हैं—दोनों के मुख पर अजीबोगरीब प्रतिक्रियाएँ होने लगती हैं। कभी एक किताब खोलकर पढ़ने लगता है, कभी दूसरा।]

आदमी : आपकी तबीयत तो ठीक है न ?
युवक : 'करण्ट कैपिटेलिस्ट !'
आदमी : 'थैंक्यू वेरी मच फॉर द कांप्लीमेंट। क्या पिएँगे, कोई गर्म चीज···या ठंडी ?
युवक : तेरा खून !

आदमी : अयँ, यह भी कोई पीने की चीज है। मेरे पास 'इम्पोर्टेड ड्रिंक्स' हैं···मैं खुद 'वाइंस' बनाता हूँ—ताजे अँगूरों से···चम्बेली-गुलाब के पानी में एक चौथाई जिंजर, एक तिहाई बादाम, काजू और बाकी···!

युवक : चुप रहो।

आदमी : मेरे नौजवान दोस्त, मैं सिर्फ तुम्हें बता रहा था। देखिए, मेरे मुँह से आपके लिए 'तुम' निकल आया ? बात यह है कि तुम्हारी उम्र का मेरा बेटा है, इंगलैण्ड में पढ़ता है—'लंदन स्कूल आफ इकनामिक्स' !

युवक : बेसिर-पैर की बातों में मुझे फँसाने की बेमतलब कोशिश मत करो !

आदमी : तो भाई, इत्मीनान से मारो मुझे। इत्ते गुस्से में क्यों हो ? आखिर तुम मुझे एक वसूल के लिए मारने आए हो···मेरा-तुम्हारा कोई आपसी बैर तो नहीं ?

युवक : आपसी बैर है ! इत्ती गरीबी, इत्ती बेकारी, इतना अन्याय इसीलिए है, क्योंकि तुम हो।

आदमी : ओह ! अब समझा। अगर मेरे खत्म हो जाने से इस मुल्क की गरीबी, बेकारी, अन्याय खत्म हो सकता है···तो आओ, खुशी से मेरा कत्ल कर दो। मैं इस राष्ट्र की बलिवेदी पर शहीद होना ही चाहता हूँ। आपको मेरी भाषा कुछ कड़ी तो नहीं लग रही है ? दरअसल मैं इस वक्त जज्बाती हो गया हूँ। भावनाओं से भर गया हूँ। मैं शहीद होना चाहता हूँ। सिर्फ एक ही अंतिम इच्छा है—मेरे मरने के बाद —यहाँ मेरी एक संगमरमर की मूर्ति बनवाना। उसके लिए मैं एक लाख, दो लाख रुपये एडवांस तुम्हें देता हूँ।

युवक : खबरदार, जो अपनी जगह से हिले !

आदमी : यह सही है कि प्राइवेट सेक्टर से एक मूर्ति बनवाने में आज ज्यादा से ज्यादा बीस हजार रुपये लगते हैं। पब्लिक सेक्टर या हुकूमत उसी के लिए कम-से-कम पचास हजार खर्च करेगी···पर मेरे दोस्त, जब तक मेरी मूर्तियाँ बनेंगी, महँगाई और खर्चे बीस गुना अधिक हो जाएँगे।

युवक : तुम जैसे 'स्मगलर' और 'ब्लैकमार्केटियर की मूर्ति क्या तुम्हारी लाश को बिजली के खम्भे से लटका दी जाएगी, ताकि लोग थूक सकें।

आदमी : ओ हो हो···मेरे नौजवान दोस्त, तुम गुस्से में हो, वरना मैं तुम्हें बताता— आजादी से पहले हमारे नेता लोग अक्सर अपने जोशीले भाषणों में कहा करते थे, 'आजादी मिलते ही बेईमानी काला बाजारी करने और समाज के गद्दारों को खम्भों से बाँध कर लटका दिया जाएगा।'

युवक : हम वही करने जा रहे हैं।

आदमी : यही तुम्हारी किताब में लिखा है ?

युवक : बन्द करो बकवास···।

आदमी : क्यों, तुम्हें देर हो रही है ?

युवक : हाँ !

आदमी : अपनी पिस्तौल से मारोगे या मैं अपनी पिस्तौल दूँ ?

युवक : बन्द करो चापलूसी !

आदमी : भाई, मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ—बल्कि बिल्कुल निश्चित हो जाना चाहता हूँ कि तुम्हारी पिस्तौल की गोली से मैं बिल्कुल मर जाऊँगा न, कहीं यह तो नहीं कि मुझे घंटों तड़पना पड़े। मुझे 'डाइंग डिक्लेरशन' वगैरह देना पड़े··· मुझे यह कतई पसन्द नहीं। मैं राष्ट्र की बलि-वेदी पर फौरन कुर्बान हो जाना चाहता हूँ, ताकि मेरी कुर्बानी मेरा बलिदान आने-जाने वाले भारत को रोशनी दे सके—देखिए, मैं कोई लेक्चर नहीं दे रहा हूँ—ईमानदारी की बात कर रहा हूँ।

युवक : सावधान ! एक, दो··· !

आदमी : सावधान, तीन कहने से पहले जरा मुझे अपनी किताब पढ़ लेने दीजिए और मेहरबानी करके आप भी पढ़ लीजिए। आप की किताब लाल है और मेरी किताब हरी है।

युवक : एक मिनट का वक्त देता हूँ।

आदमी : जी, एक मिनट तो बहुत है, मुझे सिर्फ एक सेकेण्ड का वक्त चाहिए !··· (**किताब पढ़ता है।**)

युवक : बस ! वक्त खत्म हो गया।

आदमी : आल राइट, मैं तैयार हूँ। आप मुझे इत्मीनान से मार सकें—मैं अपनी पिस्तौल दूर फेंक देता हूँ (**पलंग पर फेंकता है**) चलिए। रुकिए···रुकिए···। आप उतनी दूर से मुझे क्यों मारते हैं। आइए, पिस्तौल की नली यहाँ रख कर दाग दीजिए। फर्स्ट क्लास रहेगा।

युवक : अब भी होशियारी दिखाने चले हो ? ताकि लोग यह समझें कि तूने आत्महत्या की !

आदमी : खैर ! जैसी आपकी मर्जी।

युवक : इन्कलाब जिन्दाबाद !

आदमी : (**छींक आ जाती है**) 'सॉरी···आई एम सो सॉरी।'

[युवक अपनी पुस्तक पढ़ता है।]

आदमी : अच्छा, बलिदान देने से पूर्व मैं चंद बातें, बेहद जरूरी, आपको बता देना चाहता हूँ।

युवक : नहीं, कतई नहीं।

आदमी : सुनिए तो···जल्दबाजी में काम मत कीजिए। मेरी चंद बातें···राष्ट्रीय महत्त्व की हैं, आप सुनिए तो सही। बकवास लगे मेरी बात तो आप शौक से गोली चला दीजिएगा। इजाजत हो तो जरा-सा पानी पी लूँ ? गला बेहद सूख गया है। सुबह आठ बजे का घर से निकला हूँ—कम्पनी मीटिंग, बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स की मीटिंग···। फैक्टरी···

युवक : चुप रहो।

आदमी : खैर, बिना पानी पिए ही मैं कुछ ऐसे 'सीक्रेट्स', पर्सनल बातें आपको बता देना चाहता हूँ ताकि मरने के बाद मेरी आत्मा को शान्ति मिल सके। (**गला साफ करता है**) मेरा जन्म ठीक उस दिन हुआ, जिस दिन महान बलिदानी भगतसिंह को फाँसी दी गई। मेरी माँ ने भविष्यवाणी की—मेरा बेटा भी महान राष्ट्रसेवी—बलिदान होगा। देखिए वह बात सच निकली।···तब मैं ठीक सोलह साल का हुआ था—जिस दिन महात्मा गांधी की हत्या हुई थी। उस रात मैंने एक छोटा-सा 'एटम बम' बनाया था।

युवक : झूठे···एटम बम।

आदमी : मेरे मेहरबान, बहादुर दोस्त, तुम्हें जो कुछ कहना है—मेरी मृत्यु के बाद **कह** लेना···इस वक्त जो कुछ मैं तुम्हें, सिर्फ तुम्हें बता रहा हूँ उसे दिल पर हाथ रख कर सुन लो। (**गला साफ करता है**) ओह, पानी भी क्या चीज है। खैर! हाँ तो जनाब, मैंने 'एटम बम' बनाया। उसका परीक्षण मैंने हिन्द महासागर में किया। क्या लहरें उठी थीं···वाह-वाह-वाह! जैसे रोजमर्रा की इस्तेमाल की चीजों की कीमतें बढ़ती हैं—हाँ जी, ऐसा था मेरा 'एटम बम'। फिर मैं हर साल एक एटम बम बनाने लगा। इस साल जो एटम बम तैयार किया है—वह अब तक मेरे पास है। जापान वालों ने कहा कि हमारे लिए बना दो, एक दर्जन एटम बम ···मैंने कहा, कमाल है—अगर मुझे एटम बम का बिजनेस ही करना है तो अपने मुल्क से क्यों न करूँ! इत्मीनान रखिए—मैं आपको एटम बम बनाने का पूरा फार्मूला दे दूँगा। मेरा गला सूखता चला जा रहा है—पूरे नियम का असर पड़ गया है न!

[युवक उसे गिलास का पानी पिलाता है।]

आदमी : शुक्रिया! हिन्दोस्तान की ओर से जो पहली तकरीर यू० एन० ओ० में दी गई थी—वह मैंने तैयार करके दी थी। डाक्टर किसिंगर मेरे पर्सनल फ्रेंड हैं। प्रेसीडेंट निक्सन जब चीन जा रहे थे, डाक्टर किसिंगर ने हांगकांग में उनसे मेरी मुलाकात कराई थी। चीन के लोग किस तरह के मजाक पसन्द करते हैं, मैंने उन्हें बताया था। बाकायदा रिहर्सल कराया था। हँसने-मुस्कराने का ढंग बताया था। अगर चीनी नेता इस तरह हँसें (**अभिनय करके बताता है**) तो उन्हें इस तरह हँसना चाहिए! (**हँसकर बताता है**) अगर वे इस तरह मुस्कराएँ तो प्रेसीडेंट को इस तरह मुस्कराना चहिए!···(**दिखाता है**) यह सही है कि मेरे पास अपार धन-दौलत है, ताकत है···पर सारा 'ब्लैक' नहीं है। बात यह है कि किसी अच्छी तस्वीर के लिए कम-से-कम दो रंग तो होने ही चाहिए—'ब्लैक एंड ह्वाइट'! इससे तसवीर उभरती है। मैंने 'विल' में लिख दिया है—जब इस मुल्क में अकाल पड़े, कहर पड़े, दंगे हों, तो मेरा धन यहाँ के दुखी-गरीब लोगों में बाँट दिया जाए।

युवक : क्या मैं आपका दायाँ हाथ देख सकता हूँ?

आदमी : जी हाँ, शौक से ! मगर मेरे बदन में 'रेडियो-एक्टिविटी' का असर है।

युवक : जी ?

आदमी : हाँ, मगर इस कदर डरने की कोई बात नहीं है।

युवक : माफ कीजिए, मैं अब जाना चाहता हूँ ?

आदमी : अरे, मेरे बलिदान का क्या होगा ?

युवक : आपके हाथ में जो किताब है, इसका नाम क्या है ? इसका लेखक कौन है ?

आदमी : ओ हो···आपको इस किताब में दिलचस्पी है ? लीजिए, मैं खुशी से यह किताब आपको भेंट करता हूँ। (**हस्ताक्षर करके देता है।**)

युवक : (**पढ़ता है**) 'विथ लव फ्राम आथर ?' इसके लेखक आप खुद हैं ?

आदमी : बात यह है कि···आप जैसे नौजवान लोग दूसरे मुल्कों से उधार लिए हुए विचारों को अपना हथियार और दर्शन के लिए एक ऐसी किताब लिखनी ही चाहिए—जिसमें जिन्दगी की सफलता के सारे राज़ हों।

युवक : शुक्रिया !

आदमी : अपनी किताब तो मुझे दीजिए···। अरे-रे-रे, अपनी पिस्तौल क्यों छोड़े जा रहे हैं ?···सुनिये तो···सुनिये। मैं आपको अपनी गाड़ी से छुड़वा देता हूँ। (**आगे बढ़ता है।**)

[युवक जाता है। सूत्रधार आता है।]

सूत्रधार : यह थी लाल किताब। 'ताकत बन्दूक की नली से निकलती है।' हरी किताब के पन्ने तो कोरे हैं। (**गाता है—**)

कोरा कागज था यह मन मोरा
लिख दिया भाग्य तूने मोरा।

पालिटिक्स आफ ह्यूमन ट्रेजिडी

पात्र

कुछ स्त्रियाँ

तीन व्यक्ति

[गरीब औरतें दो-दो की संख्या में बैठी आटे की चक्की पीसती हुई गा रही हैं।]

झापक पेड़वा छिगुलवा की पतवन गहबर रे
रामा तेहितर ठाढ़ी है हिरनियाँ, कि
हिरना बिसूरहिं रे !
चरत चरत हिरना हिरनी से पूछहिं रे
हिरनी से पूछहिं रे···।

[तभी एक झंडा लिए पहला व्यक्ति आता है। गायन के बीच में ही बोलता है।]

पहला व्यक्ति : सुनो-सुनो, मेरी बात सुनो। गाने-रोने से कुछ नहीं होने वाला। तुम्हारी लड़की कुएँ में गिरकर मर गई। क्यों मर गयी ? वह तपेदिक की मरीज थी—गलत। पेड़ के नीचे हिरनी कब तक रहेगी ? हिरन ने हिरनी से तो यही कहा—तुझे खाने-पीने की तकलीफ है तो चल राजा के खिलाफ आवाज उठा। यही तो बात है—तुम्हारी लड़की हरिजन थी और उस पर ब्राह्मण ठाकुरों ने जुल्म किया। चलो उठो। रोने से क्या होगा ? हिरन और हिरनी की कहानी पुरानी पड़ गई। चलो, अब अपनी नयी कहानी बनाओ। मेरे झंडे के नीचे आओ—मैं नयी कहानी बनाता हूँ।

[स्त्रियाँ गाने लगती हैं—]

की तोर चरहा झुराव की पानी बिन तरसहिं हो
ना मोर चरहा झुरान ना पानी बिन तरसहिं हो
रामा कल राजा दशरथ घर छट्ठी तुमहिं मारि—
डरिहहिं हो।

[पहला व्यक्ति इस बीच चला जाता है : दूसरा व्यक्ति दूसरा झंडा लेकर आता है।]

दूसरा व्यक्ति : सुनो, तुम सब गरीबी से मर रहे हो। तुम्हारी जवान लड़की क्यों मर गई ? इस इलाके से जो इलेक्शन जीतकर गया था—वह महलों में बैठा मौज कर रहा है। राजा दशरथ के घर राम का जन्म हुआ और उनकी छठी में हिरन मारा गया। हिरन मर गया। उसे मरना ही था। मगर तुम्हारी लड़की मरकर भी नहीं मरी है। तुमने उसकी लाश जला दी—मैं कराऊँगा पोस्टमार्टम और नया केस तैयार करूँगा। हिरनी अपने हिरन को नहीं बचा सकी—क्यों ? क्योंकि उसे कोई

रास्ता दिखाने वाला नहीं मिला। उठो, मैं दिखाऊँगा तुम्हें रास्ता और दूर करूँगा तुम्हारी गरीबी। मरे हुए हिरन को जिन्दा करूँगा।

[स्त्रियाँ गा रही हैं—]

चुप रहु रे हिरनी रे चुप रहु तू कस बौराइस रे
मर जहिहौं राम जी के काज जनम बनि जइहैं रे!
मचिया पै बैइठी हैं रानी कौशल्या सो हिरनी अरज करै रे
मसुआ तू खाइउ मोरी रानी खलरिया हमहिं देउ ना।
भागी जा रे हिरनी तैं भागि जा रे हिरनी
खलरी नाहिं देवैं रे।
खलरी मढ़ैवे खँजरिया राम मोर खेलिहैंइ रे।

[तीसरा व्यक्ति झंडा लेकर आता है।]

तीसरा व्यक्ति : हिरन इसलिए मारा गया कि उसमें अन्ध धर्म था। राम के नाम पर मरना वह अपनी किस्मत समझता था। अपनी किस्मत तुम्हारे हाथों में है। चलो, उठाओ मशाल और आग लगा दो इस जंगल में, जहाँ तुम्हारा हिरन मारा गया—मतलब तुम्हारी बेटी कुएँ में कूदकर मर गई। क्या तमाशा है—रानी कौशल्या में इतनी शराफत भी नहीं कि वह हिरनी को हिरन का चमड़ा ही वापस कर दें—यह जुल्म, यह अत्याचार! राजमहल में हिरन के चमड़े से बना बाजा बज रहा है और हिरनी जंगल में उस बाजे को सुनकर अपने हिरन के आने की बाट जोह रही है। गलत बिल्कुल गलत। ऐसा कभी नहीं होता। तुम्हें यह जानना चाहिए—न्याय और अधिकार केवल राजनीति से मिलते हैं—इन आँसुओं से नहीं। हिरन वापस आएगा, अगर तुम लोग मेरा साथ दो। इन्कलाब जिन्दाबाद। मैं तुम्हारी मरी हुई लड़की वापस दिला सकता हूँ—तुम लोगों को आत्मा की अमरता पर विश्वास है—उठो, आओ मेरे साथ—मुझे भी तुम्हारे ही आँसुओं पर विश्वास है और यही हमारा भरोसा है।

[स्त्रियाँ गा रही हैं—]

जब जब बाजै रे खँजड़ियाँ।
हिरनियाँ बनक सुनै रे,
ठाढ़ी है जंगलवा के बीच हिरन मोर अइहैं रे!
छापक पेड़वा छिगुलवा सो पतवन गहवर रे,
ताहितर ठाड़ी है हिरनियाँ सो हिरना बिसूरैंइ रे।

ड्रिल

[एक व्यक्ति लोगों की ड्रिल करा रहा है। एक गरीब भिखारी उनके सामने हाथ पसारे घूम रहा है। जैसे ही वह सामने पड़ता है वैसे ही ड्रिल कराने वाला व्यक्ति 'पीछे घूम' कहता है। जब दायें जाता है तब ड्रिल कराने वाला लोगों को बायें घुमा देता है। इसी तरह कभी उस भिखारी से उन लोगों का सामना नहीं हो पाता।]

वापस घर आना

[एक व्यक्ति सूटबूट पहने रात को घर वापस आता है। उसका कार्य—

1. कमरे में घुसना।
2. कोट उतारना और खूंटी पर टाँगने का संघर्ष।
3. टाई उतारने का संघर्ष।
4. जूता उतारने का संघर्ष।

सहसा उसकी नजर मेज पर पड़े किसी खत पर पड़ती है—वह खत पढ़ता है—पढ़ते-पढ़ते रो पड़ता है। दुबारा पढ़ते हुए हँस पड़ता है—तीसरी बार पढ़ते हुए हँसना-रोना एकसाथ होता है।]

शादी

पात्र

मां
पिता
ससुर
सास
लड़का
लड़की

[पिताजी कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं—आसपास अन्य पाँच कुर्सियाँ रखी हुई हैं। बीच में मेज है। माँ आती है।]

माँ : क्यों जी, तुम बैठे अखबार ही पढ़ते रहोगे—लड़के वालों के आने का वक्त हो गया है।

पिता : अपनी लड़की तो तैयार है न ? मेरा मतलब जूड़ा-ऊड़ा बनवाकर आ गई है न ? मेकअप वगैरह !

माँ : 'ब्यूटी सैलून' से बिल्कुल तैयार होकर आ गई है—कुल पैंतीस रुपये लगे हैं।

पिता : अभी तो और न जाने कित्ते लगेंगे। लड़के के माँ-बाप दहेज के बिल्कुल खिलाफ हैं—पर देखना उनकी चाल—कैसे चंट हैं दोनों—ऐसा गुस्सा आता है जब वे ही-ही करके बातें करते हैं।

माँ : अरे ! अखबार बन्द भी करो।

[दरवाजे पर दस्तक]

पिता : (दौड़ते हैं) आइए, आइए, आइए···जी···।

[सास-ससुर आते हैं। बड़ी विनम्रता और बेहद शराफत से लोग परस्पर मिलते हैं।]

ससुर : वाह-वाह ! बड़ा अच्छा मकान है।

सास : मन प्रसन्न हो गया।

पिता : (एप्लाइड) देखा न, मकान पर नजर लग गई।

माँ : सब आप लोगों के आशीर्वाद हैं।

पिता : (एसाइड) पेट काट-काटकर मकान बनवाया है—कर्ज से लदा हूँ और उल्टे इनके आशीर्वाद से मकान बना है।

ससुर : क्या हाल-चाल हैं जी ?

पिता : सब मेहरबानी है आपकी।

माँ : लड़का कहाँ है बहनजी ?

सास : आ ही रहा होगा—बैंक से सीधे आएगा। बड़ी जिम्मेदारी है उस पर।

माँ : हाँ जी, क्यों नहीं···बड़ा अच्छा लड़का है।

सास : कुल सात सौ रुपये तनख्वाह मिलते हैं—अब थोड़ी-बहुत ऊपर से भी··· ही-ही-ही···

पिता : हाँ, जब से बैंक नेशनलाइज हुए हैं।

माँ : चुप रहो जी ! हें-हें-हें···बैंक की नौकरी बड़ी जिम्मेदारी की है।

पिता : हाँ, क्यों नहीं, जब से 'नागरवाला केस' हुआ है, ईश्वर उसकी आत्मा को स्वर्ग में शान्ति दे। होशियारी तो बहुत की थी, मगर ईश्वर न्याय करने वाला है··· क्यों जी, मैं गलत तो नहीं कह रहा। हमारा ख्याल है कि···लेकिन नहीं, आपका ख्याल बेहतर होगा ? (**हाथ जोड़े रहना।**)

ससुर : देखिए जी, आप इस तरह से हाथ जोड़े रहकर मुझे शर्मिन्दा मत कीजिए। आप हमारे कर्जदार नहीं हैं। किसी तरह से हमसे छोटे नहीं हैं। हमारा कोई दबाव नहीं है आप पर।

पिता : सच, आप महान हैं।

सास : बेटी कहाँ है, उसे तो बुलाइए।···

माँ : मीना बेटी···आ जाओ···देखो, तुम्हें बुला रहे हैं।

[लड़की आती है। दोनों के पैर छूती है। दोनों आशीर्वाद की झड़ी लगा देते हैं।]

ससुर : देखो बेटी, 'यू फील फ्री'।

पिता : हाँ, सब अपने लोग हैं।

माँ : बहुत कमजोर हो गई है। अब तक तो पढ़ती रही है और अब कालेज में नौकरी···।

ससुर : देखिए, मैं नहीं चाहता कि मेरी बहू कहीं नौकरी करे। यह हमारी शान के खिलाफ है—लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि बहू मेरी वजह से नौकरी छोड़ दे। क्यों बेटी, मैं कोई गलत तो नहीं कह रहा ?

[लड़की सिर हिलाकर जवाब देती है।]

सास : क्यों बेटी, मेरा लड़का अशोक तुम्हें पसन्द है ?

[लड़की सिर हिलाकर उत्तर देती है।]

माँ : बहुत कम बोलती है···मजाल क्या कि अपने से बड़ों से कभी सवाल-जवाब करे।

सास : बड़ी अच्छी बेटी है। क्यों जी, इसके नाम कुछ···।

पिता : हम कुछ समझे नहीं।

ससुर : इनका मतलब है लड़की के नाम कुछ 'नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट' कुछ 'फिक्स डिपाजिट', 'इंश्योरेंस' वगैरह···।

पिता (एसाइड) अब ये लोग अपने असली मतलब पर उतरना शुरू हो रहे हैं···।

[इस बीच माँ ने टेबुल पर खाने-पीने की चीजें सजा दी हैं।]

ससुर : यह क्या कर रही हैं बहन जी, इत्ती तकलीफ ?

पिता : अजी, हम किस लायक हैं···प्लीज···।

माँ : एक भी चीज बाजार की नहीं है। सब मेरी बेटी के बनाए हैं।

[सास-ससुर खाने पर लग जाते हैं।]

ससुर : वाह···वाह ! बहुत अच्छे···बहुत अच्छे !

सास : वाह-वाह, क्या कहने !

ससुर : अरे, तुम तो मीठी चीज मत खाओ।

सास : अजी, तुम्हें भी तो मना है।

[लड़का आता है। लड़की के माँ-बाप के पैर छूता है। लड़की खड़ी हो जाती है।]

ससुर : बैठो अशोक···इधर आओ !···बैठो बेटी। देखिए, मुझे यह पसन्द नहीं है कि लड़की किसी तरह से भी अपने को लड़के से कम समझे। तुम पूज्य हो हमारे लिए बेटी। मेरा हमेशा असूल रहा है—'यत्र नारीस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' —जहाँ नारी की पूजा होती है—वहीं देवता निवास करते हैं।

सास : आओ अशोक, पहले कुछ खा-पी लो।

लड़का : नहीं माँ, मैं कॉफी पीकर आ रहा हूँ।

माँ : नहीं बेटे, कुछ तो खा लो।

पिता : अच्छा, हम कॉफी बनवा देते हैं—बेटी, कॉफी बना लाओ···एक मिनट में आ जाएगी।

लड़का : जी नहीं, शुक्रिया !

सास : बेटे !

ससुर : बेटे !

लड़का : मैं इस सबके कतई खिलाफ हूँ। आप लोग लड़की देखने आए हैं या खाना खाने ! यह क्या तमाशा है कि लड़की वालों का इतना शोषण हो।

ससुर : बेटा, यह शोषण क्या होता है ?

सास : बैंक यूनियन का सेक्रेटरी है मेरा बेटा।

लड़का : लड़के वाले लड़की वालों से अपने आपको इत्ता बड़ा क्यों समझते हैं ?

पिता : परम्परा है बेटे।

माँ : बेटी, अपने हाथ से थोड़ा दो न।

लड़का : मैं शादी की इस परम्परा के सख्त खिलाफ हूँ। यह माडर्न एज है—समानता और स्वतंत्रता का युग। (कहते हुए खाने लगता है।)

सास : बड़े आधुनिक विचारों का है मेरा बेटा।

ससुर : इसके ख्यालात बहुत ऊँचे हैं।

माँ : सब ईश्वर की कृपा है।

पिता : यह हमारा सौभाग्य है जी।

[सब खाना-पीना समाप्त करते हैं।]

ससुर : लड़की की उमर क्या है ?

पिता : चौबीस साल तीन महीने तेरह दिन ।

ससुर : बहुत खूब···। जरा इसकी जनमपत्री तो दिखाइए। (**लेकर देखते हैं**) अच्छा है ···राहु की दशा भी ठीक है । अब यह बताइए, इसका वजन कितना है ?

लड़का : यह क्या बेकार के सवाल हैं पापा जी, मुझे यह कतई पसन्द नहीं !

सास : तू चुप रह । अच्छा बेटी, जरा चल के दिखाना तो सही ।

[लड़की चलकर दिखाती है। सास बढ़कर लड़की के बदन को छूकर, दबाकर देखती है ।]

सास : अच्छा है, बहुत अच्छा है ।

ससुर : अच्छा बेटी, कुछ गाकर सुनाना तो ।

[लड़की एक भजन गाती है—]

हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिए ।
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें
धर्मचारी ब्रह्मचारी वीर व्रतधारी बनें···।

[सब वाह-वाह करते हैं ।]

सास : कोई फिल्मी गाना भी गा सकती हो ?

ससुर : नहीं ! मुझे फिल्मी गाने बिल्कुल पसन्द नहीं ।

सास : तुम चुप रहो जी···मेरी बहू है ।

पिता : गा दो बेटी ।

[लड़की गाती है—]

इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने
इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा ।
हमरी न मानो बजजवा से पूछो
जिसने असरफी गज दीना दुपट्टा मेरा ।···

सास : भाई, लड़की मुझे पसन्द है । अशोक, चल, बेटी को अँगूठी पहना ।

[अशोक अँगूठी पहनाता है। पिता लड़की के द्वारा लड़के के हाथ में अँगूठी पहनवाता है ।]

ससुर : जरा बेटे, अँगूठी देखूं तो ! (**देखता है**) देखिए जी, आपने हीरे की अँगूठी देने के लिए कहा था !

पिता : जी हाँ, मुझे याद है···शादी के वक्त दूंगा ।

ससुर : मैंने सिर्फ याद दिलाया···मेरा मतलब यह नहीं कि आप जरूर दें । आखिर महँगाई का जमाना है। भाई, लड़की मुझे भी पसन्द है । अब और बातें तै हो जानी चाहिए ! मैं चाहता हूँ, शादी जनवरी के महीने में हो ।

पिता : ठीक है ।

ससुर : मैं आपको किसी तरह की परेशानी में नहीं डालना चाहता। करीब पाँच सौ लोग बारात में आएँगे—जी हाँ, मुझे मालूम है—गेस्ट कंट्रोल कानून लागू है—पर मैं इसका इन्तजाम ऊपर से कर लूँगा। इसका मामा होम मिनिस्ट्री में अफसर है। मेरे भतीजे के फादरइनला शहर में कोतवाल हैं। आपको वेजीटेरियन-नानवेजीटेरियन दोनों का इन्तजाम करना होगा। साफ बात है, हमें कैश कतई नहीं चाहिए—सारा सामान दे दीजिएगा'''हम कबूल कर लेंगे।

पिता : मेरी बात तो सुनिए!

ससुर : ठीक है, ठीक है! मुझे मालूम है, आपकी कोई और संतान तो है नहीं—सो यह मकान मेरे लड़के के नाम'''।

पिता : बात तो सुनिए, श्रीमान जी!

ससुर : और बातें आपस में बैठकर तै कर लेंगे। अब तो रिश्ता हो गया।

सास : अब तो सब अपने लोग हैं।

[परम श्रद्धा-विनय-शराफत से लड़के-लड़की उनके पैर छूते हैं। आशीर्वाद की जैसे वर्षा होने लगती है—लोग जाते हैं। संगीत बजता है और संगीत खत्म होते ही सूत्रधार अखबार बेचने आता है।]

आदमी : ताजा अखबार'''आज की ताजा खबर'''श्रीमती मीना टंडन की हत्या''' सुहागरात को मीना टंडन की हत्या।'''

ना चाहता। करीब पाँच सौ
नेस्ट कंट्रोल कानून लागू है—
वाला होम मिनिस्ट्री में अफसर
हैं। आपको वेजीटेरियन-
बात है, हमें कैश कतई नहीं
लेंगे।

र संतान तो है नहीं—सो यह

ता हो गया।

ते हैं। आशीर्वाद की जैसे
र संगीत खत्म होते ही

मीला टंडन की हत्या···

दो व्यक्ति

[पिताजी कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं—आसपास अन्य पाँच कुर्सियाँ रखी हुई हैं। बीच में मेज है। माँ आती है।]

माँ : क्यों जी, तुम बैठे अखबार ही पढ़ते रहोगे—लड़के वालों के आने का वक्त हो गया है।

पिता : अपनी लड़की तो तैयार है न ? मेरा मतलब जूड़ा-ऊड़ा बनवाकर आ गई है न ? मेकअप वगैरह !

माँ : 'ब्यूटी सैलून' से बिल्कुल तैयार होकर आ गई है—कुल पैंतीस रुपये लगे हैं।

पिता : अभी तो और न जाने कित्ते लगेंगे। लड़के के माँ-बाप दहेज के बिल्कुल खिलाफ हैं—पर देखना उनकी चाल—कैसे चंट हैं दोनों—ऐसा गुस्सा आता है जब वे ही-ही करके बातें करते हैं।

माँ : अरे ! अखबार बन्द भी करो।

[दरवाजे पर दस्तक]

पिता : (दौड़ते हैं) आइए, आइए, आइए···जी···।

[सास-ससुर आते हैं। बड़ी विनम्रता और बेहद शराफत से लोग परस्पर मिलते हैं।]

ससुर : वाह-वाह ! बड़ा अच्छा मकान है।

सास : मन प्रसन्न हो गया।

पिता : (एप्लाइड) देखा न, मकान पर नजर लग गई।

माँ : सब आप लोगों के आशीर्वाद हैं।

पिता : (एसाइड) पेट काट-काटकर मकान बनवाया है—कर्ज से लदा हूँ और उल्टे इनके आशीर्वाद से मकान बना है।

ससुर : क्या हाल-चाल हैं जी ?

पिता : सब मेहरबानी है आपकी।

माँ : लड़का कहाँ है बहनजी ?

सास : आ ही रहा होगा—बैंक से सीधे आएगा। बड़ी जिम्मेदारी है उस पर।

माँ : हाँ जी, क्यों नहीं···बड़ा अच्छा लड़का है।

सास : कुल सात सौ रुपये तनख्वाह मिलते हैं—अब थोड़ी-बहुत ऊपर से भी··· ही-ही-ही···

पिता : हाँ, जब से बैंक नेशनलाइज हुए हैं।

माँ : चुप रहो जी ! हें-हें-हें···बैंक की नौकरी बड़ी जिम्मेदारी की है।

पिता : हाँ, क्यों नहीं, जब से 'नागरवाला केस' हुआ है, ईश्वर उसकी आत्मा को स्वर्ग में शान्ति दे। होशियारी तो बहुत की थी, मगर ईश्वर न्याय करने वाला है··· क्यों जी, मैं गलत तो नहीं कह रहा। हमारा ख्याल है कि···लेकिन नहीं, आपका ख्याल बेहतर होगा ? **(हाथ जोड़े रहना।)**

ससुर : देखिए जी, आप इस तरह से हाथ जोड़े रहकर मुझे शर्मिन्दा मत कीजिए। आप हमारे कर्जदार नहीं हैं। किसी तरह से हमसे छोटे नहीं हैं। हमारा कोई दबाव नहीं है आप पर।

पिता : सच, आप महान हैं।

सास : बेटी कहाँ है, उसे तो बुलाइए।···

माँ : मीना बेटी···आ जाओ···देखो, तुम्हें बुला रहे हैं।

[लड़की आती है। दोनों के पैर छूती है। दोनों आशीर्वाद की झड़ी लगा देते हैं।]

ससुर : देखो बेटी, 'यू फील फ्री'।

पिता : हाँ, सब अपने लोग हैं।

माँ : बहुत कमजोर हो गई है। अब तक तो पढ़ती रही है और अब कालेज में नौकरी···।

ससुर : देखिए, मैं नहीं चाहता कि मेरी बहू कहीं नौकरी करे। यह हमारी शान के खिलाफ है—लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि बहू मेरी वजह से नौकरी छोड़ दे। क्यों बेटी, मैं कोई गलत तो नहीं कह रहा ?

[लड़की सिर हिलाकर जवाब देती है।]

सास : क्यों बेटी, मेरा लड़का अशोक तुम्हें पसन्द है ?

[लड़की सिर हिलाकर उत्तर देती है।]

माँ : बहुत कम बोलती है···मजाल क्या कि अपने से बड़ों से कभी सवाल-जवाब करे।

सास : बड़ी अच्छी बेटी है। क्यों जी, इसके नाम कुछ···।

पिता : हम कुछ समझे नहीं।

ससुर : इनका मतलब है लड़की के नाम कुछ 'नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट' कुछ 'फिक्स डिपाजिट', 'इंश्योरेंस' वगैरह···।

पिता (एसाइड) अब ये लोग अपने असली मतलब पर उतरना शुरू हो रहे हैं···।

[इस बीच माँ ने टेबुल पर खाने-पीने की चीजें सजा दी हैं।]

ससुर : यह क्या कर रही हैं बहन जी, इत्ती तकलीफ ?

पिता : अजी, हम किस लायक हैं···प्लीज···।

माँ : एक भी चीज बाजार की नहीं है। सब मेरी बेटी के बनाए हैं।

[सास-ससुर खाने पर लग जाते हैं।]

ससुर : वाह···वाह ! बहुत अच्छे···बहुत अच्छे !

सास : वाह-वाह, क्या कहने !

ससुर : अरे, तुम तो मीठी चीज मत खाओ।

सास : अजी, तुम्हें भी तो मना है।

[लड़का आता है। लड़की के माँ-बाप के पैर छूता है। लड़की खड़ी हो जाती है।]

ससुर : बैठो अशोक···इधर आओ !···बैठो बेटी। देखिए, मुझे यह पसन्द नहीं है कि लड़की किसी तरह से भी अपने को लड़के से कम समझे। तुम पूज्य हो हमारे लिए बेटी। मेरा हमेशा असूल रहा है—'यत्र नारीस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' —जहाँ नारी की पूजा होती है—वहीं देवता निवास करते हैं।

सास : आओ अशोक, पहले कुछ खा-पी लो।

लड़का : नहीं माँ, मैं कॉफी पीकर आ रहा हूँ।

माँ : नहीं बेटे, कुछ तो खा लो।

पिता : अच्छा, हम कॉफी बनवा देते हैं—बेटी, कॉफी बना लाओ···एक मिनट में आ जाएगी।

लड़का : जी नहीं, शुक्रिया !

सास : बेटे !

ससुर : बेटे !

लड़का : मैं इस सबके कतई खिलाफ हूँ। आप लोग लड़की देखने आए हैं या खाना खाने ! यह क्या तमाशा है कि लड़की वालों का इतना शोषण हो।

ससुर : बेटा, यह शोषण क्या होता है ?

सास : बैंक यूनियन का सेक्रेटरी है मेरा बेटा।

लड़का : लड़के वाले लड़की वालों से अपने आपको इत्ता बड़ा क्यों समझते हैं ?

पिता : परम्परा है बेटे।

माँ : बेटी, अपने हाथ से थोड़ा दो न।

लड़का : मैं शादी की इस परम्परा के सख्त खिलाफ हूँ। यह माडर्न एज है—समानता और स्वतंत्रता का युग। (कहते हुए खाने लगता है।)

सास : बड़े आधुनिक विचारों का है मेरा बेटा।

ससुर : इसके ख्यालात बहुत ऊँचे हैं।

माँ : सब ईश्वर की कृपा है।

पिता : यह हमारा सौभाग्य है जी।

[सब खाना-पीना समाप्त करते हैं।]

ससुर : लड़की की उमर क्या है ?

पिता : चौबीस साल तीन महीने तेरह दिन ।

ससुर : बहुत खूब···। जरा इसकी जनमपत्री तो दिखाइए। (**लेकर देखते हैं**) अच्छा है ···राहु की दशा भी ठीक है । अब यह बताइए, इसका वजन कितना है ?

लड़का : यह क्या बेकार के सवाल हैं पापा जी, मुझे यह कतई पसन्द नहीं !

सास : तू चुप रह । अच्छा बेटी, जरा चल के दिखाना तो सही ।

[लड़की चलकर दिखाती है। सास बढ़कर लड़की के बदन को छूकर, दबाकर देखती है ।]

सास : अच्छा है, बहुत अच्छा है ।

ससुर : अच्छा बेटी, कुछ गाकर सुनाना तो ।

[लड़की एक भजन गाती है—]

हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिए ।
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें
धर्मचारी ब्रह्मचारी वीर व्रतधारी बनें···।

[सब वाह-वाह करते हैं ।]

सास : कोई फिल्मी गाना भी गा सकती हो ?

ससुर : नहीं ! मुझे फिल्मी गाने बिल्कुल पसन्द नहीं ।

सास : तुम चुप रहो जी···मेरी बहू है ।

पिता : गा दो बेटी ।

[लड़की गाती है—]

इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने
इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा ।
हमरी न मानो बजजवा से पूछो
जिसने असरफी गज दीना दुपट्टा मेरा ।···

सास : भाई, लड़की मुझे पसन्द है । अशोक, चल, बेटी को अँगूठी पहना ।

[अशोक अँगूठी पहनाता है। पिता लड़की के द्वारा लड़के के हाथ में अँगूठी पहनवाता है ।]

ससुर : जरा बेटे, अँगूठी देखूँ तो ! (**देखता है**) देखिए जी, आपने हीरे की अँगूठी देने के लिए कहा था !

पिता : जी हाँ, मुझे याद है···शादी के वक्त दूंगा ।

ससुर : मैंने सिर्फ याद दिलाया···मेरा मतलब यह नहीं कि आप जरूर दें । आखिर महँगाई का जमाना है। भाई, लड़की मुझे भी पसन्द है । अब और बातें तै हो जानी चाहिए ! मैं चाहता हूँ, शादी जनवरी के महीने में हो ।

पिता : ठीक है ।

ससुर : मैं आपको किसी तरह की परेशानी में नहीं डालना चाहता। करीब पाँच सौ लोग बारात में आएँगे—जी हाँ, मुझे मालूम है—गेस्ट कंट्रोल कानून लागू है—पर मैं इसका इन्तजाम ऊपर से कर लूँगा। इसका मामा होम मिनिस्ट्री में अफसर है। मेरे भतीजे के फादरइनला शहर में कोतवाल हैं। आपको वेजीटेरियन-नानवेजीटेरियन दोनों का इन्तजाम करना होगा। साफ बात है, हमें कैश कतई नहीं चाहिए—सारा सामान दे दीजिएगा···हम कबूल कर लेंगे।

पिता : मेरी बात तो सुनिए !

ससुर : ठीक है, ठीक है ! मुझे मालूम है, आपकी कोई और संतान तो है नहीं—सो यह मकान मेरे लड़के के नाम···।

पिता : बात तो सुनिए, श्रीमान जी !

ससुर : और बातें आपस में बैठकर तै कर लेंगे। अब तो रिश्ता हो गया।

सास : अब तो सब अपने लोग हैं।

[परम श्रद्धा-विनय-शराफत से लड़के-लड़की उनके पैर छूते हैं। आशीर्वाद की जैसे वर्षा होने लगती है—लोग जाते हैं। संगीत बजता है और संगीत खत्म होते ही सूत्रधार अखबार बेचने आता है।]

आदमी : ताजा अखबार···आज की ताजा खबर···श्रीमती मीना टंडन की हत्या··· सुहागरात को मीना टंडन की हत्या।···

ा। करीब पाँच सौ
ोम कानून लागू है—
मिनिस्ट्री में अफसर
आपको वेजीटेरियन-
, हमें कैश कतई नहीं

ा तो है नहीं—सो यह

गया।

। आशीर्वाद की जैसे
ीत खत्म होते ही

ा टंडन की हत्या…

दो व्यक्ति

[आमने-सामने से दो व्यक्ति मंच पर आते हैं। पहले वे दोनों परस्पर देखे बिना आते-जाते हैं। फिर एक-दूसरे को आँख चुरा कर देखते हैं। एक-दूसरे से बचकर देखते हैं। फिर संशय और अविश्वास से देखते हैं। फिर मुस्कराते हैं। हँसते हैं अपने आप में। फिर एक-दूसरे से डरे-डरे हाथ मिलाते हैं। फिर जैसे पहचान शुरू होती है।]

पहला व्यक्ति : मैंने कहीं आपको देखा है।
दूसरा व्यक्ति : ऐसा लगता है, आपसे मेरी पहचान है !
पहला व्यक्ति : हम दोनों ने कहीं एकसाथ सफर किया है।
दूसरा व्यक्ति : कहीं एकसाथ रहे हैं।
पहला व्यक्ति : हाँ, किसी आफिस में।
दूसरा व्यक्ति : या किसी 'क्यू' में।

[दोनों हाथ मिलाते हैं फिर चुपचाप चलने लगते हैं—आमने-सामने।]

पहला व्यक्ति : आपकी शकल पहचानी नजर आती है।
दूसरा व्यक्ति : आपकी शकल थोड़ी बदल गई है।
पहला व्यक्ति : हाँ, थोड़ा वजन बढ़ गया है।
दूसरा व्यक्ति : आप पहले कुछ और कपड़े पहनते थे।
पहला व्यक्ति : तब मेरी शादी नहीं हुई थी।
दूसरा व्यक्ति : हाँ, तब मैं किसी और नौकरी में था।

[हँसते हैं फिर चुपचाप चलने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : देखिए न जैसे मैं आप ही को ढूँढ़ रहा था।
दूसरा व्यक्ति : मुझे भी जैसे आप ही की तलाश थी !
पहला व्यक्ति : यह भेंट भी कैसी अजीब है।
दूसरा व्यक्ति : ह्वाट ए कोइसीडेंस !
पहला व्यक्ति : 'इट इज ए ग्रेट लक !'

[दोनों फिर चुपचाप चलने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : आप कैसे हैं ?
दूसरा व्यक्ति : ठीक है, बिल्कुल ठीक !
दूसरा व्यक्ति : हाऊ आर यू ?

परस्पर देखे बिना
दूसरे से बचकर
राते हैं। हँसते हैं
र वैसे पहचान शुरू

मने।]

पहला व्यक्ति : फाइन…थैंक्यू !

[चल पड़ते हैं।]

पहला व्यक्ति : और क्या हालचाल हैं ?

दूसरा व्यक्ति : आप सुनाइए !

[चलने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : आजकल मौसम का कुछ पता नहीं चलता।

दूसरा व्यक्ति : एक्जैक्टली ! बड़ा अजीब है !

पहला व्यक्ति : आपके घर में तो सब ठीक-ठाक हैं न ?

दूसरा व्यक्ति : जी हाँ। आपके परिवार के लोग तो कुशल से हैं न ?

पहला व्यक्ति : नौकरी ठीक-ठाक चल रही है न !

दूसरा व्यक्ति : स्वास्थ्य तो ठीक है न ?

पहला व्यक्ति : कमाल है, आपने मुझे याद रखा। पर कैसे ?

दूसरा व्यक्ति : आप मुझे भूले नहीं, पर क्यों ?

[दोनों फिर चलते हैं।]

पहला व्यक्ति : और क्या हालचाल हैं ?

दूसरा व्यक्ति : आप बताइए ?

पहला व्यक्ति : हाऊ डू यू डू ?

दूसरा व्यक्ति : हाऊ डू यू डू ?

पहला व्यक्ति : और सुनाइए !

दूसरा व्यक्ति : और ?

[दोनों चलते हैं।]

पहला व्यक्ति : आपका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है ?

दूसरा व्यक्ति : आपको ये कपड़े बहुत अच्छे लगते हैं।

पहला व्यक्ति : यह कितनी अच्छी बात है, हमारी इस तरह भेंट हो गयी। 'व्हाट ए लक !'

दूसरा व्यक्ति : मौसम अब थोड़ा अच्छा हो गया है।

पहला व्यक्ति : ऐसे ही हो जाता है।

[दोनों फिर चलते हैं।]

दूसरा व्यक्ति : आपका इधर आना कैसे हुआ ?

पहला व्यक्ति : आप कहाँ जा रहे थे ?

दूसरा व्यक्ति : आपने मुझे पहचाना कैसे ?

पहला व्यक्ति : आपने मुझे कैसे जाना—यह मैं ही हूँ ?

दूसरा व्यक्ति : आप अपने घर से कब चले ?

पहला व्यक्ति : यह कैसे जान लिया—मैं सीधे घर से ही चला हूँ ?
दूसरा व्यक्ति : आपकी घड़ी में क्या बजा है ?
पहला व्यक्ति : आपकी···?
दूसरा व्यक्ति : यह कैसे जान लिया, मेरी घड़ी बन्द है ?
पहला व्यक्ति : आज आपके दफ्तर में स्ट्राइक क्यों थी ?
दूसरा व्यक्ति : आज आप दफ्तर क्यों नहीं गए ?
पहला व्यक्ति : आप कुछ परेशान लगते हैं, बात क्या है ?
दूसरा व्यक्ति : ऐसी तो कोई खास बात नहीं होनी चाहिए—फिर भी ?

[दोनों आमने-सामने से गुजरने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : जब आपने मुझे देखा तो पहचाना क्यों नहीं ?
दूसरा व्यक्ति : जब आपने मुझे पहचाना तो बोले क्यों नहीं ?
पहला व्यक्ति : संकोच किस बात का ?
दूसरा व्यक्ति : हाँ तो डर कैसा ?
पहला व्यक्ति : हाँ जब पहचान थी···।
दूसरा व्यक्ति : हाँ जब बोलने की इच्छा थी···।

[दोनों परस्पर देखने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : क्या बात है ?
दूसरा व्यक्ति : हाँ, बात क्या है ?
पहला व्यक्ति : कोई खास बात ?
दूसरा व्यक्ति : अब तो हम लोग परिचित हैं।
पहला व्यक्ति : हाँ, अब तो वैसा कुछ संकोच नहीं होना चाहिए।

[दोनों संग-संग चलने लगते हैं।]

पहला व्यक्ति : बात यह है कि···
दूसरा व्यक्ति : वही तो, दरअसल बात यह है कि···!
पहला व्यक्ति : जी हाँ !
दूसरा व्यक्ति : बिलकुल ! हाँ, तो···।

[सन्नाटा]

पहला व्यक्ति : तुम कुछ परेशान-से लगते हो।
दूसरा व्यक्ति : भाई, ऐसी भी क्या बात है।
पहला व्यक्ति : यही तो बात है।
दूसरा व्यक्ति : बात ही कुछ ऐसी है।
पहला व्यक्ति : ऐसी भी क्या बात, जो कही न जा सके।
दूसरा व्यक्ति : वही तो !

[दोनों अलग-अलग बिन्दुओं पर जाकर चुपचाप खड़े हो जाते हैं। पहला व्यक्ति खाँसता है, दूसरा जोर से खाँसता है। एक नाक साफ करता है, दूसरे को छींक आ जाती है। एक जम्हाई लेता है, दूसरा चुटकी बजाता है।]

पहला व्यक्ति : मैंने अपने भारत देश में लोगों को
गाते हुए सुना है—अब भी आज भी।
मजदूर कारखानों में काम करते हुए गाते हैं।
अपनी गरीबी के गीत अपने स्वप्नों के गीत।
किसान हल चलाते हुए देवताओं के गीत गाते हैं।
जाड़ों में ठिठुरती गाँव की स्त्रियाँ
मेले में जाती हुई विरह के गीत गाती हैं।
मछुआरे, केवट ऋतुओं के गीत गाते हैं।
माताएँ शिशुओं को अंक में लिए
राम और कृष्ण के भजन गाती हैं
नंग-धड़ंग बच्चे राम-रावण की लीला करते हैं
सच, सब को मैंने गाते सुना है अब भी, आज भी
सब वही गाते हैं जो उनका अपना निजी है।

दूसरा व्यक्ति : हाँ, मैंने भी लोगों को गाते हुए देखा है
सुना है—कुछ-कुछ मेरी भी समझ में आया है।
दफ्तरों में काम करती हुई स्त्रियाँ, घर-गृहस्थी
के गीत गाती हैं।
टाइपिस्ट, टीचर, नर्स, डाक्टर, शासक होकर भी
करवा चौथ के व्रत रखती हैं और चौके में गाती हैं।
चोर, डाकू, स्मगलर, ब्लैक मार्केटिए, धोखेबाज,
कायर, झूठा, कामचोर इन सबको गीत गाते
सुना है—हाँ, करुण गीत।
अफसर, सिपाही, पुलिस, राजनेता को भी चुपचाप
गाते सुना है—
ऐसे गीत, जिसे वे औरों को नहीं सुना सकते।

दोनों : हाँ, वही तो। मैंने गीत सुने हैं!
ऐसे गीत जो उनके अपने निजी हैं।

पहला व्यक्ति : तो ?

दूसरा व्यक्ति : हाँ तो।

[सन्नाटा]

पहला व्यक्ति : लो मैं तुम्हारे लिए एक उपहार ले आया हूँ। बहुत दिनों से मैं इसे सम्हाल कर रखे हुए था, एक ऐसे अफसर, राजनेता, मजदूर, किसान, स्त्री, सिपाही

को भेंट देने के लिए जिसे अब भी विश्वास है न्याय में, मानव-मूल्यों में, और अपने देश के उज्ज्वल भविष्य में।

पहला व्यक्ति : मैं भी वही उपहार लिए घूम रहा हूँ। और तलाश रहा हूँ किसी ऐसे विद्रोही को, नायक को, त्यागी को जो अब भी अपना गीत गाता है और अपने अनुभवों के भीतर से स्वयं को तलाशता है।

पहला व्यक्ति : लेकिन यह क्या ? जो उपहार मैं ले आया हूँ, वह तो तुम्हारा ही है।

दूसरा व्यक्ति : हाँ, सच !

जो मैं छिपाए था, जिसे मैं अपना समझकर
तुम्हें भेंट करना चाहता था,
वह तो तुम्हारी ही है।

दोनों : (एकसाथ) हम तुम्हारे लिए एक उपहार लाए थे
पर यह तो तुम्हारा ही था।
हमने लोगों को गाते हुए सुना है···।

ैं, और अपने

ा हूँ किसी ऐसे
ूँ और अपने

ारा ही है।

इतिहास की कक्षा

पात्र

अध्यापक

छात्रगण

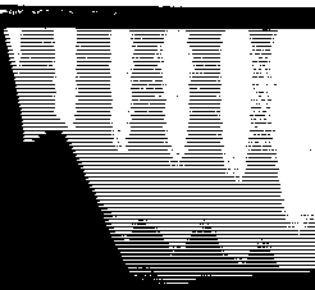

[कुछ छात्र जैसे उल्टी हुई मेज-कुर्सियों के पीछे उनका सहारे लिए उनमें छिपे सो रहे हैं—या मरे-से सिगरेट पी रहे हैं। इतिहास का अध्यापक आता है।]

अध्यापक : (**क्लास लेने की पूरी तैयारी के बाद**) हाँ तो कल मैं क्या कह रहा था? 'आई से, टॉपिक' क्या था?

[छात्र कुर्सियों के पीछे से शोर करते हैं—मज़ाक-रिमार्क्स 'डिकेडेंट', 'बुर्जुआ', 'रियक्शनरी', 'रोबोजनिस्ट', हाँ-हाँ, 'कीप क्वायट', 'गेट अवे'।]

अध्यापक : इतिहास के क्लास में यह मज़ाक। तुम लोगों का इतना चारित्रिक पतन? मारेल डिग्रेडेशन! सावधान, यह इतिहास की क्लास है—इंडियन हिस्ट्री··· भारतीय इतिहास। (**शोर**) यह विद्यालय है···ज्ञान-केन्द्र···यह ऐसी पवित्र भूमि है जिसमें हमारे पूर्वजों ने साधना की है। यह उन महान अध्यापकों, शिक्षा-शास्त्रियों, विचारकों का स्वप्न है कि भावी पीढ़ी को प्रकाश मिलता रहे—'फ्राम डार्कनेस टू लाइट'।

[शोर—'फ्राम लाइट टू डार्कनेस', 'दियर वाज नो लाइट एवर']

अध्यापक : 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'!

[शोर—'यार बन्द करो यह बकवास']

अध्यापक : शर्म करो, शर्म। हम भी विद्यार्थी थे। हम भी तुम्हारी तरह जवान और विद्रोही थे। उस विद्रोह के लिए हमने पूरी तैयारी की। अच्छा स्वास्थ्य, उम्दा सेहत और अपनी पूरी पढ़ाई—विद्याध्ययन!

[शोर जारी है]

अध्यापक : देखो, अपना स्वास्थ्य। देखो अपने चेहरे—बुड्ढों जैसी शक्लें। कमर झुकी हुई। आँखें धँसी हुई। दिन-रात सिगरेट, चरस, कॉफी और न जाने क्या-क्या। यही तुम्हारा विद्रोह है, यही है तुम्हारा 'प्रोटेस्ट', विरोध!

[शोर। कागज के हथगोले अध्यापकों पर फेंकते हैं।]

अध्यापक : अगर तुममें ताकत है तो सामने आओ। सामने आकर बातें करो। यह विद्रोह नहीं कायरता है···बुजदिल कहीं के! मुझे अफसोस है, तुम सब मेरे विद्यार्थी हो। अगर यही सब करना है तो यहाँ क्यों आते हो। बोलो, जवाब दो।

पहला छात्र : (**निकलता है**) मुझे अफसोस है, तुम मेरे टीचर हो।

अध्यापक : टीचर से बात करने का यही ढंग है ? बुझाओ सिगरेट, यह क्लास रूम है—कॉफी हाउस नहीं।

पहला छात्र : अब कॉफी हाउस में भी 'नो वैकेन्सी', 'राइट आफ एडमीशन रिजर्व्ड'···।

[फिर शोर]

अध्यापक : बोलो, तुम्हें किस बात का अफसोस है कि मैं तुम्हारा टीचर हूँ !

दूसरा छात्र : आप टीचर क्यों हैं—इसी बात का अफसोस है क्या मतलब है इस पढ़ाई का ?

अध्यापक : पढ़ाई का मतलब ज्ञान है···तहजीब है और सभ्यता की समझ। इसका कोई ताल्लुक नहीं है नौकरी से, समझे !

तीसरा छात्र : तो नौकरी का किस चीज से ताल्लुक है ? हम तो उसी नौकरी के लिए बी० ए०, एम० ए०, इंजीनियरिंग, एम० बी० बी० एस, बी० काम, एल-एल०बी० वगैरह की महज डिग्री लेने आए हैं। और अब हमें पता चल गया कि इन डिग्रियों से नौकरी नहीं मिलती, फिर हमारी पढ़ाई क्यों ? यह इतिहास की क्लास, इंडियन हिस्ट्री क्यों ?

[शोर ही शोर]

अध्यापक : अच्छा, बताओ, तुम लोग नौकरी क्यों करना चाहते हो ?

पहला छात्र : पता नहीं !

दूसरा छात्र : मैं बताऊँ—वक्त बरबाद करने के लिए।

तीसरा छात्र : जी नहीं, दफ्तरों में बुड्ढा होकर मर जाने के लिए तनखाह।

चौथा छात्र : क्योंकि नौकरी के अलावा यहाँ और कुछ नहीं है।

पाँचवाँ छात्र : क्योंकि नौकरी के बिना शादी नहीं होती।

अध्यापक : शादी क्यों करना चाहते हो ?

पहला छात्र : नानसेंस, यह हिस्ट्री की क्लास है।

अध्यापक : हाँ, हिस्ट्री। इंडियन हिस्ट्री। क्या है इंडियन हिस्ट्री ?

दूसरा छात्र : हाई स्कूल तक पढ़ते-पढ़ते जी ऊब गया। सोचा खेती करूँगा, पर जी नहीं लगा। बम्बई भागा। धक्के खाकर लौटा, सोचा आगे पढ़ूँ, वक्त काटने के लिए। बी०एस-सी० में दाखिला न मिला, बी० ए० में चला आया। सोचता रहा, हिस्ट्री की जगह इकनामिक्स लूँ या इकानामिक्स की जगह लिटरेचर या लिटरेचर छोड़कर एन० सी० सी०। या सब कुछ छोड़कर डिप्लोमा इन 'बुक-बाइंडिंग' ले लूँ। या···या···या····! और···और···और···हाँ तो···हाँ तो ! या···या··· या···या···।

अध्यापक : डोन्ट ड्रिफ्ट !

दूसरा छात्र : ड्रिफ्ट। इसके क्या माने···यही अल्फाज बार-बार मैंने अपने पिताजी के मुँह से सुना है—'ड्रिफ्ट'।

सभी : यस ह्वाट डू यू मीन बाई ड्रिफ्ट ? क्या मतलब ?

अध्यापक : 'लेट मी सी द लेटेस्ट डिक्शनरी' (**शोर—कोश देखना**) 'ड्रिफ्ट' माने बहाव, प्रवाह, रुख, गीत, अनियमित गति, धारा, हाँ यस, बहाव के कारण जहाज का अपने रास्ते से भटक जाना। चक्कर काटते होने के कारण फेंकी हुई चीज का अलग जा पड़ना। जंगल का कानून। समय के साथ बहना। छेद करना या छेद को बड़ा करते रहना। चुपचाप बैठे रहना। हस्तक्षेप न करना। स्थिति सुधारने के लिए कुछ न कुछ करना। समझ गये न ?

सभी : नहीं।

[बढ़ता शोर]

अध्यापक : मतलब भटकना—इधर से उधर, उधर से इधर।

[दूसरा छात्र ड्रिफ्ट को माइम करने लगता है।]

अध्यापक : स्टाप···स्टाप···दिस नानसेंस।

[तीसरा छात्र भटकने का माइम करता है।]

पहला छात्र : मैं हायर सेकेंडरी में फिजिक्स मैथमेटिक्स का छात्र था—आठवीं क्लास में मैथ टीचर ने कहा—'मुझसे ट्यूशन कराओ, वरना बेटे फेल हो जाओगे।' मैंने कहा, 'सर ! मुझे तो मैथ में एट्टी-नाइन्टी पर्सेन्ट मार्क्स मिलते हैं।' उन्होंने कहा, ओ० के० ! और सचमुच मैं फेल हो गया आठवीं जमात में। फिर डैडी ने कहा, 'मैथ छोड़ो, बॉयोलोजी लो—एम० बी० बी० एस० करो—डाक्टर बनो।' तो मैं इस तरह बॉयोलोजी का स्टुडेंट हो गया। वहाँ फिर वही बॉयोलॉजी के टीचर ने कहा, 'मुझे ट्यूटर रख लो ताकि प्रैक्टिकल में अच्छे नम्बर आ जाएँ।' ठीक। मैंने डैडी से सारा चक्कर बताया। उन्हें ट्यूटर रख लिया। फिर यह खबर केमिस्ट्री के टीचर को मिली। उन्होंने कहा, 'बेटे, केमिस्ट्री प्रैक्टिकल का क्या होगा ? मगर डैडी के पास इतने पैसे ही न थे कि दो-दो ट्यूटर रखते। रिजल्ट यह हुआ कि हायर सेकेंडरी में मुझे थर्ड डिवीजन मिला। फिर साहब शुरू हो गया वही गाना—'इस दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई इधर गिरा, कोई उधर गिरा··· (माइम) कोई इधर···कोई उधर···

तीसरा छात्र : यस, कोई इधर, कोई उधर। ड्रिफ्ट माने—बहाव के कारण जहाज का अपने रास्ते से भटक जाना। (गाना) 'इस दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई इधर गिरा, कोई उधर गिरा···कोई यहाँ···कोई वहाँ···।'

[जहाज के भटकने का माइम]

चौथा छात्र : समय के साथ बहना। छेद करना या छेद को बड़ा करते रहना। (**माइम**)

पाँचवाँ छात्र : चुपचाप बैठे रहना। हस्तक्षेप न करना। स्थिति सुधारने के लिए कुछ न करना। (माइम)

अध्यापक : शान्त। प्लीज़ शान्त। घर जाओ, घर। चले जाओ, घर।

पहला छात्र : 'राइट आफ एडमीशन रिजर्व्ड बाई माई फादर।'

दूसरा छात्र : पाँच के पहले नहीं।

सभी छात्र : और दस के बाद कभी नहीं।

[शोर। माइम। अध्यापक भाग निकलता है। धीरे-धीरे लड़के थककर उन्हीं कुर्सियों और टेबुलों की आड़ में सो जाते हैं। थोड़ी देर बाद अध्यापक का प्रवेश।]

अध्यापक : अच्छा हुआ, सब चले गए। राम-राम, क्या चारित्रिक पतन हुआ है। न कहीं नियम है, ना कोईमर्यादा-ना आदर्श। क्या था भारतवर्ष का गौरव। कैसे-कैसे विश्वविद्यालय थे इस देश में। कैसे-कैसे गुरु, आचार्य और शिष्य। कैसा था वह ज्ञान का प्रकाश! तक्षशिला···नालंदा···अब इन नामों से प्राइवेट कमर्शियल कालेजेज चलते हैं। हर डिग्री की कीमतें उनके 'सिलेबस' पर छपी हैं। (**विराम**) भारतीय इतिहास में वह कौन-सा काल है—जहाँ से हमारा यह पतन शुरू हुआ? छठी शताब्दी, जब हम पर विदेशी आक्रमण शुरू हुए। नहीं, बाहरी आक्रमणों से देश मजबूत होता है। फिर? इस मुल्क पर मुसलमानी हुकूमत! नहीं तो··· मुसलमान तो इसी मुल्क का हो गया—लाल किला, ताजमहल, फतेहपुरी सीकरी। तो? अंग्रेजों की गुलामी···हाँ, अंग्रेजों की गुलामी। नहीं, नहीं, अंग्रेज न आए होते तो हम सोते ही रहते। फिर?···फिर? बिना क्रान्ति के हमें दान में आजादी जो मिल गयी। नहीं, यह भी नहीं, नहीं। आजादी के बाद इस मुल्क पर एक ही पार्टी की लगातार हुकूमत। नहीं···नहीं,···यह भी नहीं···नहीं···नहीं।

सभी : (एक ही स्वर में) डोन्ट ड्रिफ्ट।

अध्यापक : (**भयभीत**) कौन?···कौन हो तुम लोग? कौन हो···मुझे यहाँ से जाने दो। हट जाओ। मुझे पढ़ना है अभी, मैं लाइब्रेरी जा रहा हूँ पढ़ने—रिचर्स करने···। वह समय क्या था···वह कारण क्या था? 'लाजिक एण्ड रीजन', 'टाइम एण्ड रीजन', 'क्राइसिस इन द स्प्रिट आफ टाइम···एण्ड स्पेस', 'हिस्टारिकल ट्रुथ'··· 'द लाजिक आफ फाल', 'डिक्लाइन आफ एम्पायर एंड नेशन'···'फ्रीडम एंड स्लेवरी', 'राइज़ एंड डेवलपमेंट', 'रेलिट एण्ड इर्रेलिवेंट,···'सोसायटी एण्ड इंडिविजुअल'।

[अध्यापक बोलता रहता है और सारे छात्र उसके चारों ओर ड्रिफ्ट का अभिनटन करते हैं।]

बीरबल की खिचड़ी

पात्र

पाँच आदमी
विदूषक

[मंच के ऊपर से

उसके नीचे एक

पकाने वाला

उधर से गुजरता है

पहला आदमी : अरे !

अरे अकबर बादशाह

है क्या ?

[धीरे-धीरे इसी

उससे उसी

करते । इस बीच

निकालता है ।]

दूसरा आदमी :

तीसरा आदमी :

चौथा आदमी : मैं

शेष सभी :

नमस्ते ।

[लोग आते-

पहला आदमी :

दूसरा आदमी :

हैं ।

करता ।

तीसरा आदमी

चौथा आदमी

पाँचवाँ आदमी

है ।

[

[मंच के ऊपर से एक रस्सी के सहारे खाना पकाने का एक बर्तन लटक रहा है। उसके नीचे एक अँगीठी जल रही है—बीच में काफी फासला है।

पकाने वाला विदूषक दूर बैठा मजे से हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। एक आदमी उधर से गुजरता है। उस दृश्य को देखकर—]

पहला आदमी : अरे ! यह नया बीरबल कहाँ से आ गया ? ओ भाई, यह क्या है ? अरे अकबर बादशाह के जमाने में यह मजाक सुना था। ओ···मैन, तू बहरा भी है क्या ?

[धीरे-धीरे इसी तरह चार आदमी और आते हैं और सभी उस दृश्य को देखकर उससे उसी तरह की तमाम बातें पूछते रहते हैं। फिर वे लोग आपस में भी बातें करते। इस बीच वह आदमी अपने झोले में से एक राजा की सारी पोशाक निकालता है।]

दूसरा आदमी : पागल है कोई।

तीसरा आदमी : हम यहाँ रुके क्यों हैं ? हमारे पास इत्ता वक्त कहाँ है ?

चौथा आदमी : मैं तो इधर से टहलने जा रहा था।

शेष सभी : एक्जैक्टली···दैट्स राइट···बिल्कुल। (**जाते हुए परस्पर**) अच्छा जी··· नमस्ते। बाई-बाई। क्या तमाशा है। जिधर देखो, उधर पागलपन।

[लोग जाते-जाते रुक जाते हैं और परस्पर वार्तालाप करते हैं।]

पहला आदमी : पागलपन क्या जी, चारों तरफ, अँधेर है।

दूसरा आदमी : कोई आदमी अपने को नहीं देख रहा है। लोग छोटी-छोटी बातों में फँसे हैं। बताइए, यह मुल्क कैसे तरक्की करेगा। यहाँ कोई अपना काम नहीं करता।

तीसरा आदमी : लड़के लोग बसें जला रहे हैं—कालेज-यूनीवर्सिटियों को बन्द करके मजे लूटना चाहते हैं।

चौथा आदमी : अजी टीचर लोग भी इसमें मिले हुए हैं। बिना काम के तनखा जो मिलती है।

पाँचवाँ आदमी : भाई, हमारे मुल्क की पालिटिक्स ही ऐसी है—चारों तरफ अँधेर है।

[लोग तेजी से बाहर निकल जाना चाहते हैं पर फिर लौट पड़ते हैं। सब लोग

एक-दूसरे के मुँह देखते रह जाते हैं—बातें शुरू करते हैं, पर लोग मुड़-मुड़कर पीछे भी देखते रहते हैं।]

पहला आदमी : मैंने अपनी फैक्टरी बन्द कर दी—बताइए, हम लोग कितना 'बोनस' बढ़ाते चले जाएँ—इन कामचोर मजदूरों के तो पेट ही नहीं भरते।

दूसरा आदमी : सरकार गरीबी नहीं अमीरी खत्म करना चाहती है—मतलब सारा मुल्क गरीब, बैकवर्ड।

तीसरा आदमी : दरअसल इस मुल्क म चरित्र 'कैरेक्टर' की कमी होती जा रही है।

चौथा आदमी : हर स्कूल-कालेज में धर्म-मजहब की 'कम्पलसरी' तालीम होनी चाहिए।

[सहसा सारे लोग पीछे मुड़कर देखते हैं और डर जाते हैं। पर कोई एक-दूसरे से अपना डर नहीं बताना चाहता।]

पाँचवाँ आदमी : बाहर ये कौन लोग खड़े हैं ?

पहला आदमी : लगता है चारों तरफ हैं।

दूसरा आदमी : देखिए ना, अभी तो पूरी रात भी नहीं हुई है।

तीसरा आदमी : कितना अँधेर है, नो बडी इज सेफ इन दिस रेचेड सोसायटी।

चौथा आदमी : मेरा ख्याल है—हमें धीरे-धीरे बोलना चाहिए।

[एकदम चुप्पी]

पाँचवाँ आदमी : मगर यह आदमी कौन है ?

पहला आदमी : यह तो पागल है—देखिए बिल्कुल राजा बनने की तैयारी में है।

[सब चुप देखते हैं।]

दूसरा आदमी : अजी आजकल किसी के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

तीसरा आदमी : हम पुलिस को इत्तला भी नहीं कर सकते।

[विराम]

चौथा आदमी : क्या हम सब मिलकर एकसाथ बाहर नहीं जा सकते ? सुना है—एकता में बहुत ताकत होती है—जरा आज देखें तो सही।

पाँचवाँ आदमी : यू सी, आई एम इंडस्ट्रियलिस्ट, नाट ए बिजनेसमैन···।

चौथा आदमी : भाई, है तो आखिर सब कुछ 'बिजनेस' ही। मेरा इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का 'बिजनेस' है। मैं कुछ भी 'इम्पोर्ट' कर सकता हूँ और भी 'एक्सपोर्ट।'

पहला आदमी : मैं सरकारी नौकर हूँ। मुझे अपने आपको नौकर कहने में फख्र है।

दूसरा आदमी : आई एम वी. आई. पी.।

पहला आदमी : आई एम ए पब्लिक मैन।

[सब लोग अपने-अपने पद, व्यक्तित्व का मूक अभिनय करने लगते हैं।]

विदूषक : 'योर अटेन्शन प्लीज'। आई एम राजा बीरबल।

पहला आदमी : पागल ! बीरबल राजा नहीं, राजा अकबर का मंत्री था।

विदूषक : 'वोट आफ नो कान्फीडेन्स' से मंत्री बीरबल राजा बन गया।

[सब हँस पड़ते हैं। पर सहसा डरकर चुप हो जाते हैं।]

दूसरा आदमी : फिर यह बीरबल की खिचड़ी क्या पका रहा है ?

विदूषक : यह तुम्हीं लोगों का कहना है कि हमारी हुकूमत जो भी प्रोग्राम बनाती है—वह बीरबल की खिचड़ी हो जाती है। देखो, आग और खिचड़ी के बर्तन के बीच जो फासला है, वह तुम्हीं लोग हो।

सभी : पागल ! सिरफिरा।

[सब लोग जाने लगते हैं, पर डर के मारे फिर वापस आ जाते हैं।]

तीसरा आदमी : बाहर, चारों तरफ कौन लोग हमें घेरे खड़े हैं ?

विदूषक : हमारी प्रजा खड़ी है।

[विराम]

चौथा आदमी : मेरे डिनर का वक्त हो गया है, मुझे बेहद भूख लगी है।

पाँचवाँ आदमी : मैं डिनर लेकर टहलने निकला था, मुझे बेहद प्यास लगी है।

विदूषक : चलो, अपनी-अपनी कहानी सुनाओ। जो सही कहानी सुना देगा, वह यहाँ से बाहर जा सकता है।

सभी : यह क्या तमाशा है। हम कोई सपना तो नहीं देख रहे हैं ! मुझे कोई कहानी-वहानी नहीं याद है। यह क्या बच्चों का खेल-तमाशा है। हम जिम्मेदार लोग हैं। हमारे पास इत्ता फिजूल वक्त कहाँ !

विदूषक : कहानी सुनाओ।

[सन्नाटा]

पहला आदमी : अच्छा, मैं सुनाता हूँ। एक था राजा···।

विदूषक : राजा-रानी की कहानी, अपनी सच्ची कहानी नहीं, वरना तुम लोग यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।

[सब डरे हुए आपस में बातें करने लगते हैं। दोनों तरफ से तमाम चेहरे बाहर अँधेरे में प्रकट होते हैं। ये लोग बेहद डरे हुए हैं।]

दूसरा आदमी : लोग अपने-अपने कान बन्द कर लें तो अपनी एक कहानी सुना सकता हूँ। (**सब कान बन्द करते हैं**) मैं भी एक टीचर था। प्रिंसिपल बनने के लिए मैंने स्कूल में हड़ताल करानी शुरू की। प्रिंसिपल बन गया। उसके बाद मैंने··· उसके बाद···उसके बाद···।

विदूषक : उसके बाद क्या।

तीसरा आदमी : अजी मैं सुनाता हूँ। मैंने एक फाइनेंस कम्पनी खोली। जब दस लाख की जमा-पूंजी हो गयी तो फाइनेंस कम्पनी का दिवाला निकाल कर गायब हो गया। आया जनरल इलेक्शन···दो-दो लाख लगा कर तीन उम्मीदवार खड़े किए लोकसभा के लिए। तीनों जीत गये। फिर···फिर···फिर।

सभी : फिर ? आगे क्या हुआ ?

चौथा आदमी : मैं सुनाता हूँ। अरबन प्रापर्टी सीलिंग की बात उठी। मैंने अपने दोनों लड़कों से कहा—अपनी-अपनी बीवियों को डाइवोर्स करो। डाइवोर्स हो गया कागजों पर···प्रापर्टी बँट गयी सब में। मगर कमाल हो गया—बड़ी बहू ने कहा, मैं तो सचमुच डाइवोर्स चाहती थी, संस्कारवश ऐसा कर नहीं पा रही थी ··फिर ···फिर···फिर···और···और···फिर···फिर···और ।

पाँचवाँ आदमी : मेरे पास कुल आठ मिलें हैं। केमिकल, सीमेंट, काटन, शुगर अब तक कुल चार मिलें बन्द करके सरकार को दे दिए हैं—पब्लिक सेक्टर। तब से मेरी 'हाबी' हो गयी है—घाटा, 'लॉस' दिखाने के लिए नयी-नयी कंपनियाँ खोलना और···और···और···।

[विदूषक हर कहानी के अन्त में 'हो-हो' करके बड़े बजे से हँसता है।]

विदूषक : (**उठता है**) हो सकता है, आप लोगों की बातों की गर्मी से मेरी खिचड़ी पक गयी हो। देखिए ना, बिल्कुल पक गयी। बीरबल की खिचड़ी पक गयी। नहीं, नहीं, आप लोगों की नहीं। बाहर लोग खड़े हैं···असंख्य भूखे···नंगे···गरीब।··· बिना पेशे के···बिना नौकरी के···बेकार···भूखे···। बड़ा क्रोध है उनमें। बेहद गुस्सा है। तुम्हारी कहानियाँ उन्होंने सुन ली हैं। बोलो, बोलो, अब कहाँ जाओगे ? (**सब भयभीत आदमी चारों ओर घिर आते हैं**) देखो··· बोलो ··देखो··· बताओ।

[दोनों तरफ वही तमाम चेहरे अँधेरे में प्रकट होते हैं।]

जाओ उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाओ। उनके बीच में जाओ···घूमो··· उनके बीच से गुजरो···सुना दो अपनी पूरी कहानियाँ। वे तुम्हें अब भी माफ कर देंगे—बहुत अच्छे लोग हैं। बहुत अच्छे। जाओ, देर मत करो। जाओ···।

[वे लोग जाते हैं। विदूषक धीरे-धीरे मंच पर नृत्य करना शुरू करता है। पृष्ठभूमि से असंख्य कंठों से लोगों के गाने का स्वर सुनायी देता है।]

कम्पनी खोली । जब दस लाख
वाला निकाल कर गायब हो
कर तीन उम्मीदवार खड़े किए
···फिर।

बात उठी । मैंने अपने दोनों
करो। डाइवोर्स हो गया
हो गया—बड़ी बहू ने कहा,
कर नहीं पा रही थी ···फिर
ीर ।
मेंट, काटन, शुगर अब तक
—पब्लिक सेक्टर । तब से
नयी-नयी कंपनियाँ खोलना

से हँसता है ।]

वर्मा से मेरी खिचड़ी पक
नहीं पक गयी । नहीं, नहीं,
भूखे···नंगे···गरीब।···
क्रोध है उनमें । बेहद
लो, अब कहाँ जाओगे ?
बो··· बोलो ··देखो···

में जाओ···घूमो···
हें अब भी माफ कर
।जाओ···।

करना शुरू करता है ।
है।]

नया तमाशा

पात्र

कपूर और दास (दो गायक)
बड़े साहब
सेन बाबू (सेक्शन आफिसर)
मिस्टर वर्मा (सीनियर क्लर्क)
चंदी—चपरासी
रामी—चंदी की पत्नी
चंदर—चपरासी

[प्रकाश दो गायकों पर उभरता है। दोनों बाजा बजाते हुए गा रहे हैं—]

आजा !
आजा आजा देख तमाशा ।
आजा !!
घर हो या दफ्तर हो ।
बाबू हो या मिस्टर हो ।
सबको है अपनी-अपनी
अपनी कुर्सी
अपना रोब ।
अपनी लुंगी
अपनी टोप ।
कैसी बातें
कैसी चीत ।
कैसी हार
कैसी जीत ।
भाड़ में जाय देश
भाड़ में जाय समाज ।
अल्ला अल्ला
खैर सल्ला,
मत करो हल्ला ।
ऐ लल्लू ।
आजा आजा देख तमाशा ।
आजा ।
आजा !
देख तमाशा देख तमाशा ।

[अभिवादन करते हुए]

कैसा है यह खेल तमाशा ।
आजा !
खेल तमाशा ।
देख तमाशा !!

[इस बीच दफ्तर का दृश्य तैयार। ये दोनों गायक दफ्तर के कर्मचारी—कपूर और दास होकर अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाते हैं। एक ओर सेन बाबू, मिस्टर वर्मा, बिल्कुल अलग बड़ साहब बैठे कार्यरत हैं।]

साहब : मिस्टर वर्मा।

वर्मा : सेन बाबू !

रहे हैं—]

सेन : दास !

दास : कपूर।

कपूर : चन्दीराम।

दास : चन्दीराम। चन्दीराम। चपरासी चन्दीराम साढ़े बारह बज गए अब तक नहीं आया चन्दीराम। नालायक !

कपूर : कामचोर।

सेन : नमकहराम।

वर्मा : निकाल बाहर करो इसे। जब तक नौकरी नहीं मिली घर और दफ्तर के चक्कर काटता रहा। नौकरी मिली नहीं कि दिमाग खराब।

कपूर : आप भी तो दस बजे की जगह साढ़े दस बजे दफ्तर आते हैं।

वर्मा : क्या कहा ?

कपूर : कुछ नहीं सर ! यस सर।

सेन : क्या बोलना माँगता है ?

दास : आप तो बारह बजे आते हैं।

सेन : क्या बोला ?

दास : कुछ नहीं सर, कुछ नहीं। यस सर, यस सर !

[दास और कपूर—गायक रूप में]

यस सर यस सर खेल तमाशा
नीचे से ऊपर सत्यानासा
नीचे वाला ऊपर वाले को पकड़े
ऊपर वाला नीचे वाले पर अकड़े।
माइट इज राइट
राइट इट माइट
आजा आजा खेल तमाशा।

[यही दुहराते हैं। इस बीच इधर दफ्तर के लोग क्रमशः बड़े साहब फोन पर, वर्मा और सेन आपस में 'दैट्स राइट' दुहराते हैं। तभी दौड़ा हुआ चन्दीराम आता है। कपूर और दास उसे घूरने लगते हैं।]

कपूर : कहाँ था अब तक ?

दास : तेरी खैरियत नहीं।

चन्दी : सर ! बीबी को अस्पताल ले गया था। बहुत बीमार चल रही है साहब !

वर्मा : दफ्तर को अस्पताल समझ रखा है।

सेन : मिस्टर वर्मा, इसकी एक ही दिन की छुट्टी काट लो। यह बोदमाश है, नोमक-हराम है !

चन्दी : नहीं साहब मर जाऊँगा। ऐसी गलती फिर नहीं करूँगा।

कपूर : अच्छा दौड़ के गर्म-गर्म चाय ला !

दास : एक जोड़ा पान।

वर्मा : एक गिलास पानी।

सेन : दौरता हुआ मेरे घोर जाएगा, मेरा लेंच लाएगा।

[भागने लगता है। बड़े साहब की घंटी बजती है। चन्दीराम दौड़ा हुआ जाता है।]

साहब : यह फाइल सेन साहब को—बहुत जरूरी, आज ही इस पर एक्शन हो जाना चाहिए !

चन्दी : सलाम मतलब !

साहब : मैं लंच पर जा रहा हूँ।

चन्दी : साहब, साढ़े तीन बजे आएँगे या साढ़े चार बजे ?

साहब : तुझसे साहब !

चन्दी : सरकार गलती हो गयी। यस सर, माफी !

साहब : क्लास वन आफिसर हूँ। अठारह साल की सर्विस पूरी हो चुकी है। यह मेरे अधिकार में है···

[कपूर और दास पास आकर सुन रहे थे।]

कपूर : यह मेरे अधिकार में है !
यह मेरे अधिकार में है !
यह मेरे अधिकार में है !

[साहब जाते हैं। चन्दीराम वह फाइल उठाए सेन बाबू को देता है।]

कपूर-दास : 'इम्पार्टेन्ट ! इमीडियेट'।
बहुत जरूरी। फौरन !
आज ही इस पर एक्शन हो जाना चाहिए।

सेन : (फाइल पर नोट करते हुए) मिस्टर वर्मा को—
मोस्ट इम्पार्टेन्ट···इमीडियेट···

चन्दी : (फाइल लेकर) बहुत जरूरी, सबसे ज्यादा जरूरी, फौरन।

सेन : शुनो ! मेरा लेंच।

कपूर : चाय लेने अभी तक नहीं गया।

दास : मेरा पान कहाँ है ? तू अपने-आपको समझता क्या है।

चन्दी : हाँ, यही तो खयाल है, मैं अपने-आपको समझता क्या हूँ। (**मिस्टर वर्मा को फाइल देकर**) साहब बहुत जरूरी, फौरन।

वर्मा : (**फाइल उसके मुँह पर फेंकते हुए**) बदतमीज, एक गिलास पानी लाने को कहा था।

चन्दी : अभी लाया साहब !

वर्मा : यह फाइल कपूर को दो।

[फाइल कपूर को देता है।]

चन्दी : अजी ऐसे क्यों बोलते हो !

[चला जाता है। कपूर ट्रांजिस्टर खोलकर मैच की कमेन्ट्री सुनने लगता है।]

दास : बन्द कर यह शोर।

कपूर : चुप रह।

दास : साहब सुनेंगे तो···।

कपूर : तो क्या कर लेंगे मेरा···नौकरी पक्की हो चुकी है अपनी।

[चन्दी आता है।]

चन्दी : यह लीजिए चाय। यह लीजिए पानी सर···ये लो अपना पान।

[पान दास की ओर फेंकता है—दास के मुँह पर लग जाता है।]

दास : बदतमीज, तेरी यह हिम्मत ! (**बढ़कर चन्दी को गिरेबान से पकड़ कर**) तू नहीं जानता मेरी ताकत, तेरी नौकरी की फाइल अभी मेरे पास है।

[धक्के देकर गिरा देता है।]

कपूर : अभी 'टैम्पोरेरी' है।

वर्मा : यह क्या शोर मच रखा है !

सेन : बड़े बाबू एई की तोमाशा है !

वर्मा : खामोश !

सेन : ओरे चोंदीराम, आमार लेंच ओभी तक नहीं आया। हम तुमको 'डिसमिस' करा देने सकता। छोड़ो बाबू इसकी फाइल हमारे पास 'पुट अप' करो ! यह ऊलू का पाठ्ठा आमार 'पावर' नहीं जानता !

[सबकी तरफ से दबाव।]

कपूर : यह चपरासी बिल्कुल बेकार है।

दास : इसे फौरन निकाल दिया जाना चाहिए।

वर्मा : देखिए लंच का टाइम हो गया। हम ढाई बजे इस पर एक्शन लेंगे।

[संगीत। सब चले गए हैं। धीरे-धीरे प्रकाश बदलता है। संगीत तेज। पड़े-पड़े चन्दीराम एकाएक चीखता है।]

चन्दी : नहीं । मैं चन्दीराम चपरासी नहीं हूँ । चपरासी रहकर इस तरह जिन्दा नहीं रह सकता । कोई मेरे कामों की प्रशंसा नहीं करता । सब मेरा अपमान करते हैं, जैसे मैं इंसान नहीं । फिर अकेले मैं क्यों मरूँ ! मुझे वह रास्ता मालूम हो गया, कैसे कोई नीचे से ऊपर जाता है । (**हँसता है**) मैं चपरासी नहीं बड़ा बाबू हूँ । बड़ा बाबू—हैड क्लर्क । अफसर···

[चलता है । केवल एक किनारे रोशनी सिमट जाती है । जहाँ चन्दी की पत्नी रामी है ।]

चन्दी : हैलो मिसेज चाँदीराम, मैं अब चपरासी नहीं बड़ा बाबू हूँ । हैड क्लर्क । अब तुम्हारा नाम रामी नहीं, मिसेज चाँदीराम है । जरा मुँह ऊपर उठाओ । यह बात हुई न ! शाबाश । टाटा, जरा मार्केट हो आऊँ । काफी पैसे हाथ आ गए हैं । एक फाइल को नीचे से ऊपर, दायें से बायें कर दिया, बस ! मोस्ट 'कान्फिडेंशियल' किसी से कहना नहीं !

रामी : अरे साढ़े ग्यारह बज गए हैं । आफिस जाने में···।

चन्दी : अब कैसी देरी । नीचे का लोग सलाम मारता है । ऊपर का लोग डरता है । टाटा, बाई बाई ।

[वही संगीत । दृश्य बदलता है । दफ्तर के दृश्य पर प्रकाश बढ़ता है । चन्दी मिस्टर वर्मा की कुर्सी पर बैठा है । बड़े साहब बैठे हैं । रामी स्टैनो को डिक्टेशन दे रहे हैं । चन्दर नामक दूसरा चपरासी आ गया है । कपूर, दास आते हैं ।]

वर्मा : यह क्या तमाशा है, मेरी सीट । उठिए यहाँ से ।

चन्दी : चपरासी, इनके लिए दूसरी सीट लाओ ।

चन्दर : यह चपरासी का काम नहीं है ।

[स्टूल पर बैठा किताब पढ़ता हुआ बीड़ी पीता जा रहा है ।]

चन्दर : वाह-वाह ! क्या हीरो ने 'विलेन' को गच्चा दिया है । वाह बेटा, जियो मेरे लाल । वाह !

वर्मा : चपरासी !

चन्दर : देखिए साहब, जबान सँभाल कर बोलिए । आप नहीं जानते मेरी ताकत । मैं चपरासी यूनियन का 'वाइस' प्रेसीडेन्ट' हूँ । (**किताब पढ़ते हुए**) वाह बेटे ! लड़े जा अपने हक के लिए···।

[वर्मा और चन्दी में कुर्सी के लिए संघर्ष । सब तमाशा देख रहे हैं । चन्दर किताब पढ़ने में मस्त है । कपूर और दास ट्रांजिस्टर सुनने में, सेन अखबार पढ़ने में, साहब स्टैनो के साथ चाय पीने में मस्त । चन्दीराम वर्मा को पटक कर उनके सीने पर बायाँ पैर रखे खड़ा है ।]

सेन : (**अचानक**) पुलिस ! पुलिस !

चन्दी : (दौड़कर) चुप रहो !

[इस बीच वर्मा मौका देखकर अपनी कुर्सी पर फिर बैठ जाते हैं।]

सेन : ऐसा खतरनाक आदमी इस दफ्तर में नोई रोह सकता।

चन्दी : खतरनाक आप हैं—दफ्तर में डेढ़ घंटे देरी से आते हैं। अपने से नीचे वालों पर रोब गाँठते हैं, ऊपर वालों के पैर चाटते हैं। दफ्तर का एक काम नहीं। फाइल ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर···किसी को कोई डर नहीं।

सेन : मैं तोमारे खेलाफ 'एक्शन' लूँगा।

चन्दी : तुम्हारे खिलाफ मैं 'एक्शन' लूँगा !

सेन : क्या ?

[प्रकाश एकाएक फिर वहीं बीच में सिमट जाता है। चन्दी अपनी पत्नी के साथ दिखता है।]

चन्दी : हैलो डार्लिंग !

रामी : हैलो चन्दी !

चन्दी : साहब से वह काम कराना है।

रामी : क्या ?

चन्दी : अब क्लर्क से आफिसर बनना है मुझे !

रामी : उसके लिए योग्यता, बस ऊपर से दबाव 'प्रेशर' होना चाहिए।

रामी : हटो। मैं क्या जानूँ !

चन्दी : जहाँ तुम हो मेरी जान, वहाँ सब मुमकिन है।

रामी : अब तुम्हें जरा भी शर्म नहीं।

चन्दी : किसी तरह अफसर की कुर्सी पा लूँ, फिर दिखाऊँगा सालों को।

रामी : कैसी भाषा बोलते हो !

चन्दी : अब यही चलती है।

रामी : क्या ?

चन्दी : जब कोई अपना काम नहीं कर रहा, तो क्या मैं ही पागल हूँ ?

रामी : समझ लो, इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी एक दिन !

चन्दी : तुम मेरी बात मानती हो या नहीं।

रामा : नहीं। मैं तुम्हारे साहब के पास नहीं जा सकती। मैं तुम्हारी पत्नी हूँ।

चन्दी : बकवास बंद करो !

रामी : यह खेल खतरनाक है।

चन्दी : यही खेल चारों ओर है।

[देखती रह जाती है।]

चन्दी : मैं तुम्हारा पति हूँ। मेरी यह इच्छा पूरी करो, चाहे जैसे !

[वही संगीत। प्रकाश फैलता है। दफ्तर का दृश्य उभरता है। साहब के पास रामी। चन्दी सेन की कुर्सी पर बैठा है।]

चन्दर : (किताब पढ़ता हुआ) वाह बेटे, कहाँ से कहाँ पहुँच गए।

[कपूर और दास सीटियाँ बजाते हैं। सेन आते हैं।]

सेन : यह क्या ओसभ्यता है। तुम ऊधर से इधर कैसे आ गया। यह क्या गोलमाल है!

वर्मा : आपका यहाँ से ट्रांसफर हो गया सर, लीजिए ट्रांसफर आर्डर।

सेन : ओमाँ, ई क्या हो गया? किन्तु यह कैसे हुआ! मैं इस भ्रष्टाचार के खिलाफ ओदालत में 'केस' करूँगा। अभी 'रिट' दाखिल करता हूँ!

चन्दर : साहब, वक्त क्या है?

सेन : साढ़े बारह बजने में अभी तीन मिनट शेष हैं।

चन्दी : यह दफ्तर आने का समय है?

सेन : ऐशा बोलने वाला तुम कौन है?

चन्दर : साहब, लंच बाक्स लेने जाऊँ?

सेन : मोज़ाक करता है? मेरा 'पावर' नहीं जानता है? मैं 'गोजेटेड' अफसर हूँ।

चन्दी : इस जगह पर मैं आ गया हूँ। तुम्हारा ट्रांसफर हो गया। मेरा मुँह मत देखिए।

सेन : मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। मेरा माथा घूम रहा है।

चन्दर : ये मारा। वाह पट्ठे!

सेन : बड़े बाबू, इसको बोलो—मेरी जगह से हट जाए!

वर्मा : यह मेरा काम नहीं!

सेन : मिस्टर कपूर! मिस्टर दास! आप दोनों मेरा साथ दीजिए।

कपूर : हम किसी का साथ नहीं देते!

सेन : यहाँ इतना भ्रष्टाचार! हाय कैसा जमाना आ गया।

चन्दर : खुद नहीं लाए। वाह!

दास : यार मौसम बदल गया। हाय रे!

चन्दी : (एकाएक चीखता है) बन्द करो यह बकवास। मेरे लंच का समय हो गया। चपरासी मेरा लंच ला। लाता है कि नहीं?

चन्दर : नहीं!

चन्दी : गेट आउट मिस्टर सेन! कपूर—दास···ले जाओ यहाँ से फाइलें। ये कागजात। मैं यहाँ कोई काम करने नहीं महज कुर्सी पर बैठने आया हूँ। एक-एक की खाल खींचकर रख दूंगा।

[सब कुर्सियाँ उठाए उस पर प्रहार करने वाले हैं। तभी बड़ा साहब रामी को अपने साथ लिए बाहर जाने लगता है। चन्दी दौड़कर पुकारता है।]

चन्दी : रामी! रामी!

[प्रकाश के साथ संगीत बदलता है। आजा-आजा खेल तमाशा। सब एक-दूसरे को आश्चर्यचकित देखने लगे हैं।]

चन्दी : यह कैसा सपना था, जो मैंने देखा ! जो मैं नहीं हूँ वह मैंने बनते हुए देखा। जो मैं हूँ उसे पिटते, बिकते और मरते हुए देखा। हम सब अपनी-अपनी लक्ष्मण रेखा पार कर रहे हैं। अँधेरे में खड़ा कोई घूरता हुआ हमें देख रहा है।

सब : क्या ?

[पृष्ठभूमि में मार-पीट, चीख-पुकार के ध्वनिप्रभाव पर दोनों गायक बहुत ही हल्के स्वरों में गाते हैं।]

आजा आजा देख तमाशा
आजा आजा देख तमाशा
खेल तमाशा
देख तमाशा

[फुसफुसाहट के स्वरों में—]

सबको अपनी-अपनी।
भाड़ में जाय कथनी करनी
आजा आजा देख तमाशा।
खेल तमाशा देख तमाशा।
यह कैसा खेल है ?
इसे कौन रोके ?
रेलापेल है !
ठेलमठेल है।
बन्दूक ताने हैं।
कोई किसी की नहीं सुनता।
कोई कुछ नहीं मानता।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।
मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा !
भाई भतीजा ?
जात-पाँत।
क्या पार्टी बनायी।
लूटो मेरे भाई !
खंजर निकली है।
कायर हँसते हैं।
लोग देखते हैं।
राम राम रटते हैं।
आजा आजा।
आजा आजा।
देख नहीं !
आजा आजा।
आजा आजा।

हेमू का बलिदान

पात्र

हेमू : मुवारिज खां
पूरनमल : सामंत
वाचक : नर्त्तकी
कथाकार : ढिंढोरची
सिपाही : दरबान आदि

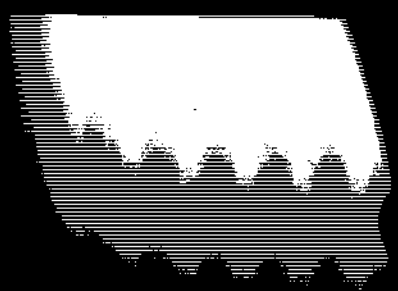

संगीत

सहजो तनिक सोहना पर कहा गुदारा सीस'
मरना है रहना नहीं जाना बिस्वे बीस।
सहजो गुरु दीपक दियो रोम-रोम उजियार
तीन लोग द्रष्टा भई मिटो भरम अधियार।

वाचक : राम तजूं पै गुरु न बिसारूँ
गुरु के सम हरि को न निहारूँ।

संगीत

आज हम हेमचन्द्र की कुछ कथा सुनाते।
जिसके शौर्य चरित्र गा-गाकर हम नहीं अघाते।
पंजय पिता पूरनमल जिनके हेम पुत्र कहाये।
धीर वीर ये महावीर थे यह इतिहास बताये।
जिसने अनन्त युद्ध कर मुगल अफगानों में जय पाई।
जिसने प्राण हथेली पर रख धर्मध्वजा फहराई।
आज हम हेमचन्द्र की कुछ कथा सुनाते।

कथाकार : मध्यकालीन भारत के महान सेना-नायक अकबर के एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी परम वीर हेमू का जन्म आधुनिक राजस्थान राज्य में अलवर क्षेत्र से तीन मील दूर **'माछेरी'** नाम के स्थान पर हुआ था।

[दृश्य में पूरनमल, दो संतों के साथ चलते हुए दिखते हैं।]

कथाकार : जिस समय सुलतान बहलोल लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, हिन्दुस्तान के विभिन्न सूबों का शासन छोटे राजकुमारों द्वारा किया जा रहा था और हिन्दुतान के प्रत्येक नगर में 'खुतबा' अलग-अलग व्यक्तियों के लिए पढ़ा जाता था उस समय जबकि चारों ओर अराजकता फैली हुई थी।

[पूरनमल और सन्तों पर दो अफगान सैनिकों का आक्रमण।]

पहला अफगान : खबरदार जो कदम आगे बढ़ाया।
दूसरा अफगान : अपनी चीजें हमारे हवाले करो।
पहला अफगान : हमारा मुँह क्या देखता।

दूसरा अफगान : कौन हो तुम ?

पूरनमल : हेमूशाह का पिता पूरनमल।

पहला अफगान : कौन हेमूशाह ?

पूरनमल : मेरा बेटा हेमूशाह—जो अराजकता और अंधकार में स्वप्न देखता है कि हिन्दुस्तान प्रभुता उसी की होनी चाहिए जो इस देश को एक राष्ट्र के रूप में प्यार करता है।

पहला अफगान : बकवास बंद।

दूसरा अफगान : माल हाजिर करो।

पूरनमल : मेरा माल—हरनाम। लो हरिनाम हाजिर है हरनाम का माल।

एक सन्त : यह हेमूशाह के पिता हैं। पर सन्तहृदय हैं।

दूसरा सन्त : हम वृन्दावन जा रहे हैं।

पूरनमल : आओ वृन्दावन चलें।

जो आवे सन्तसंग में जातिवरण कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल, मिलैसु गंगा होय।

पहला अफगान : लूट लो इन्हें।

पूरनमल : खबरदार मेरे सुपुत्र हेमूशाह को अगर पता चला तो बहुत बुरा होगा। अफगानों का दोस्त हेमूशाह।

दूसरा अफगान : अफगान दोस्त हेमूशाह। तुम उसके वालिद।

पूरनमल : हाँ पूरनमल।

सन्त : पूरनमल के प्रताप से मिटयो जगत संताप।

(वे तीनों गाते हुए चले जाते हैं) दोनो सिपाही खड़े देखते रहते हैं।

झूठा नाता जगत का झूठा है घर, बार,
यह जग झूठा देखकर सहजो भई उदास।

[वे चले जा रहे हैं]

याचक : रेवारी मक्षि धर है तिनको, क्या कीर्तिमय मन है जिनको।
साधन की सेवा सुठि करें, महाजन सबको मन है।
संत संगति वृन्दावन आये, श्री हरिवंश मिलसुख आये।

दूसरा दृश्य

[धीरे-धीरे प्रकाश आता है। हेमू अपने सैनिकों के साथ खड़ा है।]

कथाकार : हेमू को मान्यता इस्लाम शाह के शासन काल में मिली। अपनी व्यापारिक चतुरता और असाधारण प्रशासकीय योग्यता के कारण हेमू शाही रसरसंग्रहकर्त्ता

नियुक्त हो गए। अतः वह बाजार के अधीक्षक हो गए। और शीघ्र ही सलीम खां अर्थात् इस्लामशाह के इतने विश्वासपात्र बन गए कि उसके शासनकाल में अपना अधिकार जमा लिया।

[ढिंढोरची एक नगाड़ा बजाता हुआ कहता आता है—]

ढिंढोरची : सुनो, सुनो, आम खास लोगो सुनो ! शाह सलीम खां के चचेरे भाई मुबारिज खां ने सल्तनत की बागडोर सम्हाल ली है। सुनो, भाई सुनो ! चंद ही दिनों में यहाँ दरबार लगेगा और अमीर-उमरा के सामने मुबारिज खां को बादशाह की पदवी अदा की जाएगी। सुनो भाई सुनो !

हेमू : सुनो मैं हूँ हेमू।

सैनिक : हेमूवीर, हेमू शाह।

हेमू : सुनो, यह भी ढिंढोरा पीट दो कि मुबारिज खां के सिर पर बादशाही मुकुट हेमू के हाथों से पहनाया जायेगा।

ढिंढोरची : सुनो, सुनो, खास दरबार में शाह मुबारिज खां को बादशाही मुकुट हेमूशाह के हाथ से पहनाया जाएगा।

[ढिंढोरची कहता हुआ चला जाता है]

हेमू : यह हुई न बात, आखिरकार सलीम खां के चचेरे भाई मुबारिज बादशाह होंगे। जानते हो, मुबारिज खां का असली नाम क्या है—आदिली। आदिली माने अत्याचारी।

पहल सिपाही : महाराज, तो अब अत्याचारी बादशाही सम्भालेगा ?

दूसरा सिपाही : हिन्दुओं के अलावा अफगान और तुर्की सैनिक सब आपके इतने प्रशंसक हैं।

पहला सिपाही : सारी सेना आप पर विश्वास रखती है।

दूसरा सिपाही : हिन्दू, अफगान, तुर्क सिपाही नहीं, अमीर-उमरा सभी आपके साथ हैं।

पहला सिपाही : ईश्वर भी आपके साथ हैं।

दूसरा सिपाही : जिस काम में आप हाथ डालते हैं सब कुछ कामयाब होता है।

पहला सिपाही : जो भी जंग लड़ते हैं, फतहयाब होते हैं।

दोनों सिपाही : (एक साथ) बस, महाराज, संकल्प कर लीजिए।

संगीत

हेमू : हे जगदीश्वर ! महर्षि भृगु, च्यवन, भगवान परसराम का वंशज मैं संकल्प करता हूँ—नए सल्तनतशाह मुबारिज खां के पास बादशाहियत की पदवी के अलावा और कुछ न रहेगा। सारी ताकतें मेरे हाथ में होंगी। मध्यकालीन भारत से क्रूरता एवं बर्बरता से जिस हिन्दुत्व का गला घोंटा जा रहा है, उसकी मैं फिर से रक्षा करूँगा, कुछ भी न रख छोड़ूंगा। हे परमपिता परमेश्वर ! जरूरत पड़ी तो आत्मबलिदान दूँगा।

[दोनों सिपाही जै-जैकार करते हैं। सबका प्रस्थान। गायन उभरता है, उधर दरबार लगने की तैयारी होती है]

वीर था रणधीर था वह आफत का पर काला था वह
कौमियत का रूह था जूं चांद पर हाला था वह
राष्ट्र का सपूत था नाम हेमूशाह था
कौमियत की जान था कौम पर बलिदान था
कौमियत ही दीन था कौम ही ईमान था,
नाम हेमूशाह था।

तीसरा दृश्य

दरबार

दरबान : बा अदब-बा मुलाहिजा होशियार, बादशाह सलामत, शोहरे आफाक, अंजुमे तूरे माह पाकदिल मुबारिज खां, आलम पनाह तशरीफ ला रहे हैं।

[बाकायदा लगे दरबार में मुबारिज खां का आना—सब का उठकर आदाब बजाना।]

मुबारिज खां : इस खुशी के मौके पर—

जलवा दिखा दे हुश्न का इक यार और भी
मूसासिकत है तालिबे दीदार और भी
फुरसत जो होती खामर—बेताब को नसीब
लिखता जरूर थोड़े से अशआर और भी

सब : वाह-वाह। वाह-वाह। मरहबा। मरहबा!

[संगीत। नर्तकी आती है। गायन और नृत्य]

आपसे दिल लगा के देख लिया
संगो शीशा लड़ा के देख लिया
कोई शीशा मिला जो देख रास्ते में
दिल समझकर उठाके देख लिया
हमने क्या ले लिया हजूर से
एक जरा आँख उठाके देख लिया
जलवए-कुदरत खुदा तालिब,
दैर में हमने जाके देख लिया

[नर्तकी नाच रही है।

मुबारिज खां : मरहबा! मर

पहनाए।

मुबारिज खां : इसको कहाँ जा

रहती है। दौलत हुस्न

मुश्किल है। हाँ, 'तस

हेमू : सावधान बादशाह फर

मुबारिज खां : हेमूशाह, मेरी

हेमू : बादशाह सलामत मुबा

सारे पदों पर मुकर्ररी,

लिया। दूसरा फरमान

अस्तबलों पर हेमूशाह

मुबारिज खां : और तीसरा

[संगीत के साथ

वाचक : इस्लामशाह की

मे दूसरे सूबे तक।

असंतुष्ट अफगान

लें। इस्लामशाह

इब्राहीम खां और

वसियत के मु

था। मगर मु

की हालत में

[ढिंढोरची

ढिंढोरची : सुनो-

लिया। हेमू

में जीत हे

लड़ाई हुई।

शत्रुओं से

(ढिंढोरची

[नर्तकी नाच रही है। पृष्ठभूमि में गायन चलता है।]

मुबारिज खां : मरहबा ! मरहबा ! हेमूशाह, इसी वक्त मेरे सिर पर बादशाह का मुकुट पहनाए।

मुबारिज खां : इनको कहाँ जाती हो मेरी आँख···मेरी आँख हर वक्त हसीनों से लड़ी रहती है। दौलत हुस्न निगाहों में गड़ी रहती, देखना और दिखाना तो बहुत मुश्किल है। हाँ, 'तसव्वुर में नजर लड़ी रहती' है।

हेमू : सावधान बादशाह फरमान जारी करते हैं गौर से सुनिए पहला फरमान।

मुबारिज खां : हेमूशाह, मेरी ओर से तुम खुद मेरे फरमान जारी करो।

हेमू : बादशाह सलामत मुबारिज खां के फरमान के मुताबिक हेमूशाह ने सब ओहदों, सारे पदों पर मुकर्ररी, बर्खास्तगी, कानून-न्याय का काम अपने आप सम्भाल लिया। दूसरा फरमान शेर खां और सलीम खां के खजानों और उसके हाथी-घोड़े अस्तबलों पर हेमूशाह ने मुकम्मल कब्जा हासिल किया।

मुबारिज खां : और तीसरा फरमान हेमूशाह को राजा की पदवी दी जाती है।

[संगीत के साथ दृश्य समाप्त]

वाचक : इस्लामशाह की मौत के बाद पूरी सल्तनत में विद्रोह शुरू होने लगे। एक सूबे से दूसरे सूबे तक। एक शहर से दूसरे शहर तक विद्रोह की आग फैलने लगी है। असंतुष्ट अफगान सामंत अब पूरी तरह आजाद थे। चाहे जिसको अपना नेता चुन लें। इस्लामशाह की मौत के बाद सूरवंस के अफगान प्रधान मुबारिज खां, इब्राहीम खां और मुहम्मद खां खाली सिंहासन के हकदार थे। इस्लामशाह की वसियत के मुताबिक मुबारिज खां का भांजा फिरोज खां सिंहासन का मालिक था। मगर मुबारिज खां ने अपने उस भांजे की हत्या कर दी। ऐसी अराजकता की हालत में हेमूशाह ने शासन की बागडोर अपने हाथ में सम्भाली।

चौथा दृश्य

[ढिंढोरची आता है।]

ढिंढोरची : सुनो-सुनो, अफगान सामंतों ने राजा हेमूशाह को अपना नेता कबूल कर लिया। हेमूशाह और इब्राहीम, जो सल्तनत के दावेदार थे, उनके बीच हुई लड़ाई में जीत हेमूशाह की हुई। राजा हेमूशाह की ताजकरोनी और रुकसा नुहानी में भी लड़ाई हुई। जीत राजा हेमूशाह की हुई। राजा हेमूशाह ने मुबारिज खां के शत्रुओं से बाईस लड़ाइयाँ लड़ीं, सब में वह विजयी हुए।

(ढिंढोरची का प्रस्थान) संगीत उभरता है।

गायक : आक्रांत हुई यवनों से, वह तीर प्रसन्नता जननी, रात-रात लालों के होते, बंदिनी थी जिसकी जननी। कितनों ने देखी बस वे, गत गौरव भूल चुके थे, उस जननी के आशीषों ने तेरा वीराण जगाया, तेरा वीरत्व जगाया।

पाँचवाँ दृश्य

[अपने सैनिकों के साथ राजा हेमूशाह—]

हेमू : मेरे अफगान, तुर्क हिन्दू वीर सिपाहियों और सामंतो मैं अपने-आपको आप लोगों में से एक समझता हूँ। बहलोल ने लोदी वंश की कीर्ति और प्रतिष्ठा तक पहुँचाया। शेरशाह ने शूरवंश को जगमगाया। और अब अपने पिता की विजयों का उत्तराधिकारी मुगल हुमायूँ हम सब का नाश करने और अपना राज फिर यहाँ कायम करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा है। इसलिए आप सच्चे भारत माँ के सपूत हैं तो आपसी भेद-भाव और दुश्मनी भूलकर सब एकजुट हो जाएँ तो हम अपने साम्राज्य को मुगलों की गुलामी से बचा सकते हैं, लेकिन यदि आप अपने में कोई एक भी साम्राज्य शासक योग्य नहीं समझता तो आप अपने में से किसी एक अधिक बहादुर व्यक्ति को चुन लें, ताकि मैं भी उसके प्रति राजनीतिक-स्वामिभक्ति की योग्य और शपथ खा सकूँ।

पहला सिपाही : हम सबके शहनशाह आप हैं।

दूसरा सिपाही : आप ही हमारे सिपहसलार हैं।

सब : हेमूशाह की जय।

पहला सामंत : हम सब आपके प्रति राजभक्ति की शपथ लेते हैं।

दूसरा सामंत : हम सब आपके प्रति स्वामिभक्ति की शपथ लेते हैं।

प्रस्थान

कथाकार : हुमायूँ की मृत्यु, दिल्ली पर राजा हेमूशाह। का अधिकार हेमू के सिंहासनारूढ़ होने का समय।

संगीत

वाचक : हुमायूँशाह जब गढ़ गिर मरो, हेमू राज राजन भयो।

कथाकार : दिल्ली ने सैकड़ों वर्षों बाद एक धर्म-निरपेक्ष हिन्दू शासक पाया। भारतीय इतिहास में सात अक्टूबर पन्द्रह सौ छप्पन का दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने योग्य है—अब हेमूशाह भारत का सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्या हुआ।

छठा दृश्य

[**हेमू का दरबार** · नर्तक-नर्तकी शोरभीय नृत्य करते हैं। हेमू उन्हें इनाम देते हैं। हिन्दू मुसलमान, सामंत उन्हें आदर-सत्कार देते हैं। दृश्य समाप्त।]

वाचक : तू धन्य-धन्य सेनानी, हिन्दू, मुस्लिम का भाई, अफगानों में जय पाई। तब हथेली पर ध्वजा फहराई, अकबर से पहले दिल्ली का वो प्रधान शासक था। आस-पास दिल्ली पर जिसका अखंड शासन था। अकबर ले बैराम खां को चढ़ आया। दिल्ली का हिन्दू था। साम्राज्य देश का हेमू विधाता, काबुल तक जिसके नाम से था थर्राता, हेमू ने तुरन्त युद्ध साज सभी सजवाए। पानीपत के मैदान के बीच रण के छक्के बजवाए।

सातवाँ दृश्य

[युद्ध के बाजों का तुमुल नाद, सिलहुट पर तमाम राजाओं-सैनिकों के दृश्य उभरते हैं। हेमू सामने खड़ा होकर उद्‌बोधन दे रहा है।]

हेमू : आज देश की आनबन पर जो आए खो जाए। देता हूँ रण आक्रमण सावधान हो जाओ। जननी जन्मभूमि पर संकट, आकर इसे बचाओ, अकबर ले बैराम खान चढ़ आया। दिल्ली पर स्वयं संभालो शासन अपना अपनी इस दिल्ली पर, यदि दिल्ली पर विजय फतह मुगलों की फहराई, स्वयं समझ लेना परतंत्रता फिर सब कर आई, आओ हम सब मिलकर आक्रमणकारियों को लूटें। स्वयं हृदय से धूल मिला दें अपनी-अपनी फूटें। मैं भारत का सेवक हूँ, सेवा मुझको करना है और नहीं तो स्वामिभक्ति के हित हमें लड़ना है।

[युद्ध स्वर संगीत मंच पर दृश्य खुलता है।]

आठवाँ दृश्य

[मंच पर कुछ राजा इकट्ठे हैं। परस्पर बातें करते हैं।]

पहला : हेमू का रण आक्रमण का हम सब राजा हुए इकट्ठे।
दूसरा : तभी कर रहे ठटा-ठटा, ठटे सब का हँसना (**हेमू अलग खड़ा सुन रहा है**)
तीसरा : कल तक रसद बेचने वाला राजा बना फिर रहा है हेमू।

पहला : हम राजपूत हैं।

दूसरा : हमारा हेमू से क्या मुकाबला।

तीसरा : हम क्यों जाएँ हेमू की तरफ से लड़ने।

पहला : अपने आपको सेवक कहता है।

दूसरा : बगुला भगत।

तीसरा : अरे हम खुद तलवार से लड़कर दिल्ली फतह करेंगे।

पहला : दिल्ली का राज्य लेंगे।

तीसरा : मैं हेमू का तख्ता उलट दूँगा।

[अहंकारपूर्ण हँसी। हेमू सामने आकर]

हेमू : यह क्या देख रहा हूँ? यह क्या सुन रहा हूँ? बन्द करो यह शर्मनाक हँसी। बैराम खां को लेकर अकबर दिल्ली पर चढ़ाई करने आ रहा है। मुगल सेना, राजपूत, ब्राह्मण, अफगान, तुर्क में भेद नहीं करेगी। तुम सब अपने अहंकारों में बँटे हुए स्वार्थी लोग, राजपूत कहते हो अपने-आपको। मंदमति, देखते नहीं, जहाँ एकता है वहीं है वीरता। जहाँ है बलिदान, वहीं है एकता।

पहला : अकबर से अकेले लड़ूँगा।

दूसरा : तेरे कहने से नहीं लड़ेंगे।

दूसरा : तू क्या समझे राजपूत की शान।

हेमू : याद रखना अगर पानीपत की इस लड़ाई में तुम राजपूतों ने मेरा साथ नहीं दिया तो भारत माता तुम्हें कभी नहीं क्षमा करेगी। सुनो···सुनो। कान खोलकर सुन लो। हेमू की जीत भारत माता की विजय होगी। मेरी हार सबकी हार होगी। यह स्वतंत्र जीवन फिर वापस नहीं मिल सकता। पछतावे के आँसुओं से प्रायश्चित के पौधे में पाप का फल लगता है। आओ, चलो मेरे साथ, भूल जाओ सारे मतभेद, जला दो अपने-अपने अहंकार को। भारत माता की पुकार सुनो। भारत माता की···

सब : जै।

हेमू : भारत माता की।

सब : जै।

हेमू : चलो, आगे बढ़ो।

[सब हेमू के साथ जाते हैं, पृष्ठभूमि में युद्धभूमि का प्रभाव, सिलहुट पर दृश्य उभरते हैं।]

वाचक : महावीर हेमू के उर में न दम्भ, न स्वार्थ, न छल था। वीरों का वीर जिसे बस अपनी बलि का बल था। अब भी हेमू का जीवन यह हमको बतलाता, हेमू का बलिदान आज भी जीवन-ज्योति जगाता।

नवाँ दृश्य

[सारे सामंत, सैनिक हेमू का झंडा लिए मंच पर आते हैं। हेमू के पिता पूरनमल साधू भेष में गाते हुए आते हैं—]

नवलदास जी कीन्हीं दाया,
हेमू ने, हेमू ने
नष्ट होत भृगवंश बचाया

वाचक : वह शौर्य पराक्रम तेरे
वीरों का बाना बनते
यश को ले साथ पताका
दश दिशि में बढ़ती जावे।

सब : हेमू तेरी यह विजया
युग-युग तक गान सुनावे

[सब उस झंडे को पकड़ एकाकार होते हैं।]

वाचक : सदा-सदा हेमू का जीवन
यह हमको बतलाता
हेमू का बलिदान आज भी
जीवन-ज्योति जगाता।

लड़कियाँ

पात्र

पाँच नौकरानियाँ
पाँच लड़कियाँ

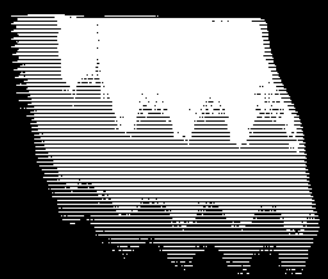

[होस्टल का बड़ा कमरा। पाँचों नौकरानियाँ झाड़ू-पोंछा, फिलट, सफाई, कपड़े पर आयरन करते हुए दिखती हैं। सब अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। पहली लड़की आती है—नाइट गाउन में।]

पहली लड़की : ऐ इधर-उधर क्या देखती है ? सारा काम पड़ा है अब तक। कामचोर कहीं की। अब तक कुछ भी नहीं किया। कहीं कोई सफाई नहीं। फर्श अब तक गन्दा। टेबुल कुर्सी पर इतनी धूल। जब तक कोई सिर पर सवार नहीं, कहीं कोई काम नहीं। नमकहराम कहीं की। तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है। मेरी 'बेड टी' इतनी ठंडी क्यों थी ? निकाल बाहर कर दूँगी। मेरा सूट आयरन हुआ ? क्या आयरन करती है—बेवकूफ कहीं की। जरा भी सऊर नहीं।

[कपड़ा लेकर चली जाती है। सारी नौकरानियाँ एक स्वर में।]

सब : (दर्शकों से) हम नौकरानियाँ,
लड़कियाँ-नौकरानियाँ।
ये साहबजादियाँ,
हम नौकरानियाँ।

पहली नौकरानी : इनका काम है गन्दा करना, मेरा काम सफाई। इनका काम है गाली देना, कौन करे लड़ाई।

सब : हम नौकरानियाँ,
लड़कियाँ-नौकरानियाँ।
ये साहबजादियाँ,
हम नौकरानियाँ॥

[दूसरी लड़की निकलती है तौलिया लपेटे।]

दूसरी लड़की : बदतमीज। कामचोर। मुझे देखा तो काम पर लग गयी। क्या बातें कर रही थी ? किससे ? हर वक्त बातें-बातें-बातें। और हमारी नकल। हम क्या पहनते हैं, क्या खाते है, कहाँ जाते हैं, किनसे मिलते हैं, सब पर इनकी निगाह। चोट्टी कहीं की। देखो यह शीशा, अब तक कित्ता गन्दा पड़ा है। इससे हम अपना 'मेकअप' कैसे करेंगे ? पाउडर लगाकर साफ करो। सफाई के लिए ही साबुन, पाउडर दिया जाता है। मालूम है तुम लोग इसे बचाकर बेचती हो और छिप-छिपकर सनीमा देखती हो। किसी दिन पकड़ लिया तो सीधे पुलिस के हवाले।

मेरा कपड़ा कहाँ है ? कपड़ों पर आयरन कर रही हो या अपना सिर फोड़ रही हो। (कपड़े लेकर) यही किया है आयरन ! एक भी सिलवट नहीं गयी। नमक-हराम। जल्दी से सफाई खत्म करो। नाश्ता लगाओ फटाफट, हमारे पास वक्त नहीं।

[कपड़े लेकर चली जाती है। सब फिर एकसाथ गाती हैं।]

सब : हम नौकरानियाँ,
लड़कियाँ-नौकरानियाँ।
ये नवाबजादियाँ,
हम नौकरानियाँ।

दूसरी नौकरानी : हम दोनों के दो संसार,
केवल नफरत नहीं है प्यार।
साहबजादियाँ रोब जमातीं,
कहाँ का गुस्सा कहाँ दिखातीं।

सब : ये साहबजादियाँ,
हम नौकरानियाँ।
ये नवाबजादियाँ,
हम इनकी बाँदियाँ।

तीसरी नौकरानी : ये अपने को मार्डन कहतीं,
अपने हाथ कुछ नहीं करतीं।
ये कहतीं विद्रोह करेंगे,
नारी मुक्ति के कदम बढ़ेंगे।
क्या हम नारी नहीं ?

सब : ये साहबजादियाँ,
हम नौकरानियाँ।
ये नवाबजादियाँ,
हम इनकी बांदियाँ।

[तीसरी लड़की आती है—बहुत जल्दी में है।]

तीसरी लड़की : कहाँ है मेरी लिपस्टिक ? ओ-हो खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देखती हो ? अभी तक यह शीशा साफ नहीं। पोंछो इसे। फिल्ट करो इस जगह। कितनी बदबू फैला रखी है। जानवर, बीस्ट। मेरे कपड़े क्या देख रही हो ? लालची। नकलची। हटो मुझे 'मेकअप' करने दो। हट जाओ यहाँ से। मनहूस कहीं की। झटपट नाश्ता लगाओ। टोस्ट, आमलेट, मिल्क, कार्नफ्लैक, अंडे, काफी···।

[सब जाती हैं। तीसरी लड़की आइने के सामने अपने 'मेकअप' में लगती है। चौथी आकर 'मेकअप' कराती है। पहली-दूसरी लड़की आकर पहले कमरे की सफाई

देखती हैं फिर वे भी मेकअप में लग जाती हैं। पाँचों नौकरानियाँ हाथ में प्लेट-चम्मच लिए आती हैं। चम्मच से प्लेट बजाती हुई।]

सब : घिसो घिसो और घिसो,
रगो रंगो और रंगो।
कसो कसो और कसो,
फँसो फँसो और फँसो।

चौथी लड़की : 'ईडीयट्स।' नाश्ता लगाओ।

तीसरी लड़की : मुझे क्या घूर रही है। बदतमीज।

[चारों लड़कियाँ पूरे 'मेकअप' कर चलती घूमती हैं।]

लड़कियाँ : हाय। हाऊ स्मार्ट।

नौकरानियाँ : थैंक्यू।

[सब लड़कियाँ हँस पड़ती हैं।]

दूसरी लड़की : ऐ छोकरी। हिन्दी डिक्शनरी लाओ।

पहली लड़की : क्या ?

दूसरी लड़की : हिन्दी डिक्शनरी नहीं जानती बेवकूफ। मेरी आलमारी में जहाँ जूते रखे हैं उसी में एक मोटी भद्दी-सी किताब है।

पाँचवीं लड़की : क्यों तकलीफ करती हो, मैं बता दूँ—विघ्न माने 'डिस्टरबेंस'।

दूसरी लड़की : तो तुमने 'डिस्टरबेंस' क्यों नहीं कहा ?

पाँचवीं लड़की : हमारे कन्ट्री का प्राबलम यही है कि थोड़े-से ही लोग अंग्रेजी जानते और बोलते हैं, बहुत-से लोग आई मीन नाइन्टी परसेन्ट लोग अंग्रेजी जानते ही नहीं। फिर इस डैम कन्ट्री का प्रोग्राम कैसे होगा ?

['मेकअप' ठीक करने लगती है।]

दूसरी लड़की : अब हम रेडी हो गया, जाएगा।

तीसरी लड़की : मैं कैसी लगती हूँ ?

पहली लड़की : किलिंग फैन्टास्टिक।···मैं कैसी···?

तीसरी लड़की : ए गर्ल आज मोटरसाइकिल।

[नौकरानियाँ हँस पड़ती हैं।]

पहली लड़की : शटअप। क्यों हँसी ? तुम्हारी यह हिम्मत, हमारे सामने हँसो। हमारी बातों पर हँसो। बदतमीज। इतना दिमाग खराब हो गया है। चलो, कान पकड़ कर दीवार के पास खड़ी हो जाओ। चलो, आई मीन चलो।

[सब कान पकड़कर खड़ी होती हैं।]

दूसरी लड़की : दीवार के सहारे नहीं। दीवार से अलग। आई से—दीवार गन्दी हो

जाएगी। आँख नीची। और नीची। कहीं रोजी-रोटी का ठिकाना नहीं था, भीख माँगती आई थी, हमने 'पिटी' करके नौकरानी बना लिया तो दिमाग खराब हो गया।

[सारी लड़कियाँ टेबुल पर लंच लेने लगती हैं।]

पहली लड़की : मिस ज्योति शर्मा, मैंने आपको कई बार मेंसन किया है। कुछ टेबुल-मैनर्स होते हैं। सबसे पहले आप खाना शुरू कर देती हैं। काँटे छुरी का इस्तेमाल नहीं करतीं। डर्टी हैंड से खाने लगती हैं। 'माउथ शट' करके नहीं खातीं।

पाँचवीं लड़की : शान्त हो जाइए बहनजी। आइए पहले आराम से नाश्ता कीजिए।

पहली लड़की : (बैठती हुई) व्हाट बहन जी। आई एम नाट बहन जी। यू० आर हेल बहन जी।

पाँचवीं लड़की : यस आई एम बहन जी।

पहली लड़की : यू एक्सेप्ट ?

पाँचवीं लड़की : जी हाँ, मैं स्वीकार करती हूँ।

पहली लड़की : आई मीन यू एक्सेप्ट ?

पाँचवीं लड़की : स्वीकार।

पहली लड़की : व्हाट स्वीकार ?

पाँचवीं लड़की : स्वीकार।

दूसरी लड़की : प्लीज, कीप क्वाइट।

[सारी लड़कियाँ नाश्ता कर रही हैं।]

दूसरा नौकरानी : बाप रे कितना खाती हैं।

तीसरी नौकरानी : बाहर जाकर भी खाती रहेंगी। कभी इसके साथ कभी उसके साथ।

चौथी नौकरानी : कैसी चभर-चभर खा रही हैं। जी होता है कि मुँह नोच लूँ। देखो-देखो मुँह कैसे बना रही हैं। किसी लायक मुँह होता तो और···।

पाँचवीं नौकरानी : इनके खाने में तो जहर मिला देना चाहिए।

पहली नौकरानी : हे मुँहजली, जिसका नमक खाती है, उसे इस तरह बददुआ देती है रे कलमुँही !

पाँचवीं नौकरानी : तू चुप रह।

चौथी नौकरानी : तू चुप रह।

[सब झगड़ पड़ती हैं। पाँचवीं को छोड़ सारी लड़कियाँ खड़ी हो जाती हैं।]

सब : (एक साथ) यह क्या हो रहा है ?

पहली नौकरानी : आप लोग नाश्ता कर रही हैं न, हम लोग मंगलगीत गा रही हैं।

सब : व्हाटिज दिस मंगलगीत ?

पाँचवीं लड़की : भारतीय संस्कृति में ऐसी परम्परा है···

पहली लड़की : ओ हो, सीधी जबान में बोलो।

पाँचवीं लड़की : गेस्ट लोग जब ईटिंग करते हैं तो होस्ट के हाउस की औरतें म्युजिक गाती हैं।

सब : ओ फाइन। वेरी फाइन। सिंग, सिंग, सिंग।

[सारी लड़कियाँ फिर खाने लगी हैं। नौकरानियाँ गा रही हैं—]

टेढ़ी अंधी आँख पै लगा कै कजरा।
आँख न दीदा खाँय मलीदा
टेढ़ी अंधी आँख पै लगावै कजरा।
बिल्ली खाये चूहा
पेट भरे ना मूआ
टेढ़ी अंधी आँख पै लगावै कजरा।
जितनी बड़ी भूख
उतना बड़ा पेट
जितना बड़ा पेट
उतना छोटा गुस्सा
टेढ़ी अंधी आँख पै लगावै कजरा।

सब : दैट्स आल, दैट्स आल। स्टाप, स्टाप, स्टाप।

[सबके हाथ में नौकरानियाँ हाथ-मुँह पोंछने को तौलिए देती हैं।]

पहली लड़की : यह फोकस म्यूजिक था या लोकल ?

पाँचवीं लड़की : न फोकस न लोकल···

दूसरी लड़की : ओह, इट वाज बोकल।

[सब नौकरानियाँ प्लेट, मेज आदि की सफाई में लग गयी हैं। लड़कियाँ आइनों में अपना 'मेकअप' ठीक करने में लगी हैं।]

पाँचवीं लड़की : बड़ा तेज जमाना है।
सबको अलग-अलग जाना है
सबकी अपनी-अपनी लड़ाई है
विजयी होकर आना है।
अपने-आप से भयभीत
इसलिए सब से डरी है।
हम सब अलग-अलग इतनी सेल्फकांशेस
घर कभी थोड़ा रुककर जाना नहीं
अपना वह सेल्फ क्या है।
केवल 'सेल्फकांशेस'
तभी इतना गुस्सा भरा है।
इतनी तेज जिन्दगी होती चली जा रही है :

पर है कौन वह हाँकने वाला
यह हम पूछते नहीं
पूछने के लिए ज़रा ठहरकर देखना होता है
पर ठहरे कि पिछड़ जाएँगे
इस तेज़ दौड़ में हार जाएँगे
हम सब अलग-अलग भयभीत हैं अपने-आपसे
यह राज़ केवल वही हाँकने वाला जानता है
हमें अपना पता नहीं है
तभी इतनी नफरत है
इतना अहंकार है।
हर दूसरा मेरा शत्रु है क्योंकि वह मेरा 'कम्पटीटर' है
वह मेरा अपना नहीं है
क्योंकि मैं अपना नहीं हूँ।
पर फिर भी कहीं कुछ रुकता नहीं
और हम केवल चाहते हैं—
उस भय ने केवल दो इच्छाएँ पैदा की हैं
सुरक्षा और स्वतंत्रता
मतलब शादी और नौकरी
हर कोई उसी की तलाश में है
इसलिए हर कोई दूसरे से भयभीत है
और एक दिन सचमुच ऐसा हो जाता है
सारी लड़कियाँ नौकरी भी पा जाती हैं
और एक-एक दूल्हा भी
सच है, जिन खोजा तिन पाइयाँ
जो चाहोगे वह जरूर मिलेगा—
यह सत्य न सही पर फैक्ट है।
पर यह भी सच है, कहीं कुछ रुकता नहीं
एक फैक्ट दूसरे फैक्ट को जन्म देता है
जब शादी हुई तो बच्चा जन्म लेता है
ऐसा हुआ लड़कियों की जिन्दगी में
ऐसा ही हुआ नौकरियों की जिन्दगी में
हाँ, कहने को ही सच अलग-अलग हैं
जिन्दगी तो बस एक ही, एक ही वसूल है
पर मानता कौन है, यही तो भूल है
लड़कियाँ हो गयीं माता, नौकरानियाँ हो गयीं आया
और इन दो के बीच आ गया एक तीसरा।

दो नफरतों के बीच क्या भविष्य पलेगा ?
दो रातों के बीच क्या सूरज उगेगा ?

[इस बीच मंच से लड़कियाँ, नौकरानियाँ चली गयीं और अब पहली लड़की पहली माँ बनकर आती है। पीछे-पीछे पहली नौकरानी आया बनकर आती है। उसके अंक में मालकिन का बच्चा (प्लास्टिक या रबर का गुड्डा) है। बच्चा बेतरह रो रहा है।]

पहली आया : मालकिन ! बच्चा रो रहा है।

पहली मालकिन : नालायक कहीं की। मैंने कित्ती बार कहा—मत कह मुझे मालकिन···।

पहली आया : मेम साहब, आपका बच्चा रो रहा हे।

पहली मालकिन : बच्चा नहीं बेबी, बेवकूफ कहीं की। ले जा इसे अन्दर। मेरे दफ्तर पहुंचने का समय हो गया है। यह रोता है तो किसलिए है तू नमकहराम ?

पहली आया : हे मेमसाहब, जबान सँभालि कै बोला करो, हाँ। अब हम नौकरानी नहीं, आया हैं। तुम एक बेबी की मम्मी हो तो मैं तीन बेबी की मदर हूँ, हाँ।

पहली मालकिन : तो ?

पहली आया : बेबी का रोना हमसे नाहीं सहा जाता—बेबी किसी का क्यों न हो, हाँ।

पहली मालकिन : तो इसे चुप करा न।

पहली आया : जरा गोद में ले लो, चुप हो जाएगा।

पहली मालकिन : और मेरा कपड़ा गन्दा हो गया तो ?

पहली आया : अभी छू-छू कर लिया है। गन्दा नहीं करेगा मेरा राजा, बहुत छमज-दार है।

[माँ की गोद में दे देती है।]

पहली आया : देखो कैसा चुप हो गया मेला लाजा। जला प्याल कल्लो ना।

पहली मालकिन : छी-छी-छी ! गीला कर दिया मेरा कपड़ा। सुअर। **(फर्श पर रख देती है। आया झट उठा लेती है)** ले जा इसे अन्दर। कपड़े बदलकर सुला दे। नहीं सोता तो रोने दे। रोते-रोते सो जाएगा। अकेली क्या मेरी ही जिम्मेदारी है। खड़ी-खड़ी मेरा मुंह क्या देख रही है ? ले जा इसे मेरी आँखों के सामने से। सुन ! बेबी को भूखा रखा तो सिर तोड़ दूंगी तेरा। मुझे पता है तू चोट्टी है अव्वल दरजे की। बेबी का 'मिल्क' चुराकर अपने बच्चों को पिलाती है। खबरदार जो बच्चे मेरे घर में घुसे।

[तेजी से चली जाती है। बच्चा रोने लगता है। बच्चे को फर्श पर रखकर डाँटती-डराती है।]

पहली आया : ऐ चुप रहता है कि नहीं ? मारूँगी वह लप्पड़ कि जाय गिरोगे काली के खप्पर।

[भीतर से दूसरी माँ निकलती है।]

दूसरी मालकिन : ऐ क्या शोर मचा रखा है। ले जा यहाँ से।

[पहली आया बच्चे को हाथ से टाँगे लिए जाती है। दूसरी आया इसके बच्चे को लेकर आती है।]

दूसरी आया : मेमसाहब, बेबी को बुखार है।

दूसरी मालकिन : डाक्टर को फोन कर दिया है। जो दवा देंगे, पिला कर सुला देना। बेबी को घर में बन्द कर कहीं खिसकना नहीं। अगर ऐसा किया फिर, दो बार माफ कर चुकी हूँ, और बर्दाश्त नहीं करूँगी। सीधे पुलिस के हवाले करूँगी तुझे। नालायक, बेबी को बुखार तेरी बेवकूफी की वजह से आया। दफा हो यहाँ से। मुझे देर हो गयी।

दूसरी आया : मेमसाहब, 'मदर इन ला' जी को फोन कर दूँ ? वह फट आ जाएँगी। नहीं तो बेबी को बहुत तकलीफ होगी। नहीं तो 'फादर इन ला'···

दूसरी मालकिन : खबरदार ! कोई 'मदर इन ला', 'फादर इन ला' नहीं। यहीं आकर डेरा जमा देंगी। फिर मेरा साँस लेना हराम कर देंगी।

[तेजी से चली जाती है। आया बेबी को गोद में लिए वहीं खड़ी रह जाती है। भीतर से तीसरी माँ बिगड़ती हुई निकलती है।]

तीसरी मालकिन : हरामजादी ! मेरा 'फूड' खा-खाकर मोटी हो रही है। मेरा 'कास्मैटिक्स' इस्तेमाल कर हेमामालिनी बनना चाहती है। सारे नौकरों से इश्क करती घूमती है। अब तक तीन-तीन मर्द किए हैं तूने। **(तीसरी आया बच्चे को अंक में लिए आ खड़ी है)** निकल जा मेरे घर से। तू समझती क्या है, जब मैंने अपने नालायक 'हसबैंड' को घर से निकाल दिया तो तू क्या है ?···बदतमीज, तू मेरी नकल करती है ? मेरे कपड़े पहन बाजार में घूमती है। मेरी बराबरी करती है ?

तीसरी आया : मेमसाहब, एक बार और माफ कर दीजिए।

तीसरी मालकिन : निकल जा मेरे घर से, अभी फौरन इसी वक्त दफा हो जा।

तीसरी आया : आखिर मेरा कसूर क्या है ?

तीसरी मालकिन : तू अपने आपको मुझसे ज्यादा जवान और खूबसूरत क्यों समझती है ?

तीसरी आया : हाय दइया। यह क्या सुन रही हूँ। इसके 'हसबैंड' इतने सीधे और नेक हैं बेचारे कि मुझसे ठीक से जो बात कर लेते हैं, वह इसके लिए इतना बर्दाश्त के बाहर है। इसे अपने-आप पर भरोसा नहीं।

तीसरी मालकिन : क्या बड़बड़ा रही है ?

तीसरी आया : ठीक है ! मैं जा रही हूँ। लो सम्हालो अपना बेबी। पर सब भंडाफोड़ कर दूँगी।

तीसरी मालकिन : क्या ? तू यहाँ खड़ी क्या कर रही है ? भागती है या···।

[दूसरी आया भागती है।]

तीसरी आया : समझ लो मेमसाहब, कह दूँगी सब ।

तीसरी मालकिन : ओ हो, मेरे कहने का यह मतलब थोड़े ही था कि तुम सचमुच चली जाओ। मैं तो तेरा इम्तहान ले रही थी कि तुझे किसी देर में गुस्सा आता है। अरे तेरे बिना मैं कैसे रह सकती हूँ। चल पिक्चर चलते हैं।

तीसरी आया : नहीं।

तीसरी मालकिन : अच्छा चल गोलगप्पे खाएँगे।

तीसरी आया : नहीं।

तीसरी मालकिन : अच्छा, अब तुझे कभी नहीं डाटूँगी ?

तीसरी आया : नहीं।

तीसरी मालकिन : अच्छा अब तुझे किसी चीज के लिए मना नहीं करूँगी। चल मार्केट घूमने चलते हैं।

तीसरी आया : और बेबी ?

तीसरी मालकिन : इसे मिस ज्योति शर्मा के 'होम' में छोड़ आ। जा खड़ी क्या है ? मैंने उसे 'डेट' दिया है।

तीसरी आया : किसे ?

तीसरी मालकिन : उसे।

तीसरी आया : नम्बर चार।

तीसरी मालकिन : यी 44···

[आया बच्चे को लिए तेजी से दौड़ती है। मंच के एक किनारे 'होम फार चाइल्ड' दिखता है। मिस ज्योति शर्मा बच्चों के साथ खेल रही है। आया को देखते ही···]

ज्योति : ओ हो। बच्चे को लेकर इत्ता तेज नहीं दौड़ते।

तीसरी आया : यह मेरा बच्चा थोड़े ही है। मैं तो नौकरी करती हूँ। लो सम्हालो इसे। शाम को सात बजे ले जाऊँगी। टाटा।

[जाती है। दृश्य में ज्योति बैठे हुए गुड्डों से घिरी हुई है।]

ज्योति : मेरे प्यारे बच्चे ! नहीं, नहीं, तुम्हें गुड्डे-गुड्डी नहीं कहूँगी। जो तुम हो मैं वही कहूँगी। जो मैं हूँ मैं वही रहूँगी। प्यास लगे तो पानी दूँगी। भूख लगे तो दूध पिलाऊँ। नींद लगे तो अंक सुलाऊँ। रोओगे तो गोद खिलाऊँ। किस्सा सुनो या गीत सुनाऊँ ? किस्सा भी औ गीत भी ? वाह भाई वाह ! किस्सा भी औ गीत भी। वाह भाई वाह। (अभिनन्दन करती हुई) एक था जंगल। हाँ भाई जंगल। बहुत बड़ा जंगल। यह शहर भी तो जंगल है। घना अँधेरा। कभी न होता। जहाँ सवेरा। जंगल में चिड़ियाँ रहती थीं—तरह-तरह की चिड़ियाँ—अलग-अलग चिड़ियों के झुंड। हर चिड़िया की अपनी भूख। हर चिड़िया का

अपना भय। हर चिड़िया की अपनी बोली—चीं, पीं, कू कू, टीपू, क्याऊँ, क्याऊँ, चूं चूं, कें कें, पें पें, चिक्किर चिक्किर, पी पी कूअ् कूअ्। हर चिड़िया के अपने पंख। अपनी चाल फुर फुर फुर फुर्र···फुर्र···सायँ सूँ···सुर्र···फड़फड़ फड़फड़। बच्चों को छोड़ चली जाती चिड़ियाँ। जंगल में साँप-अजगर रहते। आसमान में बाँझा शिकारे, चील्ह झपट्टे कीए पंख, बच्चों पर लगाए आँख। सो सारे बच्चे डरे-डरे, भूख-प्यास से मरे-मरे। एक दिन एक चिड़िया आयी सतरंगे पंखों वाली। लगी एक गीत सुनाने।

[गा पड़ती है—]

गाओ गाओ गुन गुन
खेलो खेलो चुनमुन
डरो काहे डरो काहे
आवो मेरी खुली बाँहें
रामजी का जंगल
सीता फुलवारी
सब मेरे चुनमुन
मैं महतारी।
आओ आओ मेरे चुन-मुन
गाओ गाओ गुनगुन
खेलो मेरे चुनमुन

ज्योति : तो सारे बच्चे आ गए उसके पास। अब कोई न रहा उन्हें डर। अनेक से सब हो गए एक। सब गए आपस में मिल। जैसे एक हो गया दिल। सब के प्राण गए खिल। शाम को जब चिड़ियाँ आयीं। दौड़ी आयीं बच्चों के पास। हाय राम, इतने बच्चे! इसमें कौन है मेरा बच्चा? मैं तो उसे पहचानती भी नहीं। हाय दइया कैसे पहचानूँ। लड़ने लगीं चिड़ियाँ आपस में, यह मेरा बच्चा···नहीं यह मेरा बच्चा···चुप रह यह मेरा बच्चा···।

[सारी माताएँ आकर इसी तरह बच्चों को झीना-झपटी करना शुरू करती हैं। आपस में लड़ने लगती हैं।]

ज्योति : यह क्या करती है? कोई माँ भला ऐसा करती है? जनने से ही क्या जननी होती है? जो पाले वही माँ होती है। जाओ अपनी-अपनी आया को भेजो। वही करें शिशु की पहचान।

[सारी आयाएँ आती हैं। माताएँ उन्हें डाँटना शुरू करती हैं।]

माताएँ : उठा मेरे बच्चे को। पहचान मेरे बेबी को। चल जल्दी कर। बदतमीज कहीं

की। कहाँ थी अब तक ? कमाल है, मेरे बेबी को नहीं पहचानती। इसीलिए तनखाह देती हूँ ?

[सारी आयाएँ बच्चों की पहचान में परस्पर लड़ने लगती हैं माताएँ आपस में झगड़ रही हैं। फिर सब आपस में लड़ने-झगड़ने लगती हैं। एक बिन्दु पर आकर सभी मूर्तिवत चुप हो जाती हैं ज्योति बच्चों के बीच में गाती है—]

गाओ गाओ गुन गुन
खेलो खेलो चुनमुन
रामजी का जंगल
सीता फुलवारी
सब मेरे चुनमुन
हम महतारी।

[शेष सब इसी गीत में शामिल होती हैं और सारे बच्चों के बीच में बैठती जाती हैं।]

हम ना साहबज़ादियाँ
हम ना नौकरानियाँ
हम सब हैं नारियाँ
फूल भरी क्यारियाँ।

[पर्दा]

मैं और मैं

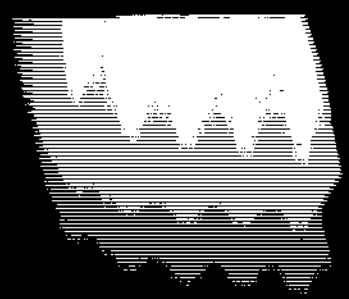

मैं : कौन ?

मैं : मैं । और तुम ?

मैं : मैं । कमाल है, एक ही जगह दो मैं कैसे !···
क्या कहा ? कौन हो तुम ?

मैं : मैं !

[हँसने लगता है ।]

मैं : शी···'कीप क्वायट डोन्ट डिस्टर्ब मी' !

मैं : ओह ! तो अपनी जबान से भाग कर अब दूसरे की जबान में मुझ पर रौब डालना चाहते हो । यार आज तो अपनी भाषा-बोली में दो-चार बात हो जाएँ । ओह ! मुझे घूर रहे हो । मैं देहाती भेष में हूँ इसलिए ?

मैं : तुम दिल और दिमाग से भी देहाती और गाँव-गँवई के हो, वरना इस तरह···

मैं : भई जब गुस्सा करते हो तो बिलकुल नादान बच्चे हो जाते हो ।

मैं : देखो, मेरे बिस्तरे पर पाँव मत रखो ।

मैं : इसलिए कि तुम भाग न जाओ ।

मैं : बकवास बंद करो ।

मैं : अच्छा, तुम्हीं कोई बकवास शुरू करो । यकीन करो मैं तुम्हारी बकवास सुनने का पिछले अड़तालीस सालों से आदी रहा हूँ ।

मैं : कौन हो तुम ?

मैं : यार, अब तो पहचान जाओ ।

मैं : ओह, तो तुम हो ।

मैं : हाँ मैं ही हूँ ।

मैं : पर मैं भी तो मैं हूँ ।

मैं : हाँ देख रहा हूँ । जिस क्षण से तुम मैं हुए तभी मैं भी हुआ । एक मैं दूसरे मैं को देख रहा है । तभी तो तुम लेखक हुए । देखो-देखो उठो नहीं । जहाँ जैसे हो उसी तरह वहीं बैठे रहो । अपने लेखक का नाम सुनते ही उठने लगे । फिर दौड़ने लगोगे, फिर आसमान में, हवा में अतीत में, न जाने कहाँ-कहाँ उड़ने लगोगे । आज यहाँ से भागने नहीं दूँगा, हाँ ।

[हँसता है ।]

मैं : तो इसमें हँसने की क्या बात है ?

मैं : अच्छा जी, तो पहले वजह ढूँढते हो फिर हँसते हो। पढ़ने-लिखने का यही असर हुआ है तुम पर। यार कभी-कभार यूँ ही हँस लिया करो।

मैं : अपनी झेंप छिपाने के लिए जैसे लेखक लोग ठहाका मारकर हँस पड़ते हैं—अपनी हीनता, नपुंसकता छिपाने के लिए, भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए ? जी नहीं, मैं ऐसे नहीं हँसता। मैं तभी हँसता हूँ जब मुझे खुद हँसी आती है।

मैं : बड़े तीसमारखां हो।

मैं : सो तो हूँ।

मैं : किसके लिए ?

मैं : अपने लिए।

मैं : अच्छा, अब तक कितने प्यार-मुहब्बत किए ?

मैं : तुम तो सब कुछ जानते हो।

मैं : जानता तो हूँ, पर यह जानना चाहता हूँ कि तुम भी 'जानते' हो कि नहीं।

मैं : जहाँ जिससे जितना प्यार किया है, उतना ही हूँ मैं—बल्कि वहीं हूँ मैं। जो जितना जहाँ नहीं कर पाया उसी की याद आती है ? वही लिखना पड़ता है।

मैं : मेरी याद नहीं आती ?

मैं : तुम्हें मेरी याद आती है ?

मैं : सवाल मेरा था।

मैं : तुम में और मुझ में कोई फर्क है क्या ?

मैं : यह अपने इंसान की भाषा बोल रहे हो या अपने लेखक की ?

मैं : मैं पहले बँटा था, अब एक हूँ।

मैं : फिर मुझे पहचाना क्यों नहीं ?

मैं : देखना चाहता था कि तुम में अभी कितना दम बाकी है।

मैं : मतलब ?

मैं : तुम मुझ से बातें कर सकते हो या नहीं।

मैं : अच्छा।

मैं : और बातें भी क्या करोगे।

मैं : अब क्या लग रहा है ?

मैं : तुम बातें कर सकते हो। मतलब हम बातें कर सकते हैं।

मैं : 'यक्ष प्रश्न' नाटक में तुम्हारी मुझ से बहुत अच्छी बातें हुई हैं। अच्छा, अब तुम मुझ से कोई बात करो।

मैं : क्यों, बात तो मुझ से तुम करने आए थे।

मैं : बात माने प्रश्न नहीं। बात माने बात···परिचय···एक समान हो जाना···देखने लग जाना।

मैं : तुम तो मुझे सदा से देखते रहे हो।

मैं : अब तुम भी मुझे देखो।

मैं : देख रहा हूँ।

मैं : क्या ?···ऐं कोई बात करो।
मैं : देखने दो।
मैं : देखकर तुम रोने लगोगे।
मैं : हाँ, मैं एक जवान लड़की हूँ।
मैं : और मैं एक जवान लड़का हूँ।
मैं : आओ चलो कहीं घूम आएँ।
मैं : इसकी अब कोई जरूरत है ?
मैं : बड़े खतरनाक आदमी हो। मैं जा रहा हूँ।
मैं : सच, क्या तुम जा सकते हो ?
मैं : क्यों नहीं, देखो···यह देखो···अरे तुम भी साथ-साथ चलने लगे।

[दोनों की हँसी]

मैं : अच्छा यार, सच-सच बताओ, अभी कितनी देर है ?
मैं : यार अभी बहुत देर है।
मैं : मतलब···।
मैं : कोई खूबसूरत चीज देखता हूँ तो अब भी मुँह में पानी आ जाता है। आँखें भर आती हैं।
मैं : यह चक्कर कब पूरा होगा ?
मैं : यह चक्कर नहीं यही हूँ मैं।
मैं : मैं ?
मैं : जो मैं हूँ···जो कुछ···जितना जैसा···वही हूँ मैं।
मैं : वही तो मैं हूँ।
मैं : नहीं, वह तुम नहीं हो, तुम कुछ और बनना चाहते हो जो तुम नहीं हो।
मैं : जो मैं नहीं हूँ क्या मैं वह बन सकता हूँ ?
मैं : बन तो सकते हो, पर हो नहीं सकते।
मैं : यह तुम्हारा फैसला है ?
मैं : मैं फैसला नहीं देता—स्वीकार करता हूँ।
मैं : तो क्या तुम महान् नहीं बनना चाहते ?
मैं : यही है तुम्हारा मैं। मेरा मैं यह नहीं है।
मैं : क्या है ?
मैं : जो है।
मैं : क्या है ?
मैं : जो मैं जीता हूँ।
मैं : मैं जी सकता है अब भला ? मैं या तो अतीत में रहता है या भविष्य में···।
मैं : आओ चलें, एक कप चाय बनाएँ साथ-साथ और चुपचाप पीएँ साथ-साथ।
मैं : क्यों शराब क्यों नहीं ?

मैं : शराब तो किसी और की बनाई हुई रखी है, बस ढाल कर पी जाना है। चीज अपने हाथ से बनाई जाए, उसी का आनन्द लिया जाए।

मैं : पीकर ?

मैं : नहीं जीकर।

मैं : जीना इतनी छोटी-सी चीज है ?

मैं : तभी तो तुम महान् बनने के चक्कर में हो।

मैं : महानता का मजाक क्यों उड़ा रहे हो ?

मैं : तुम्हें ऐसा लगता होगा क्योंकि तुम्हें जिन्दगी छोटी-सी चीज लगती है।

[दोनों मैं हँसते हैं।]

मैं : अच्छा, यह बताओ तुम लाल हो या मैं ?

मैं : मैं लक्ष्मीनारायण लाल हूँ।

मैं : मैं भी लक्ष्मीनारायण लाल हूँ। और तुम ?

मैं : दो कैसे एक हो सकता है ?

मैं : तुम लक्ष्मीनारायण लाल की जगह कालिदास क्यों नहीं हो जाते। चलो आज से मैं तुम्हें इसी नाम से पुकारूँगा।

मैं : जी नहीं, माफ कीजिए, जो मैं हूँ वही हूँ।

मैं : महान् नहीं बनना चाहते ?

मैं : यार इस तरह बददुआ और गाली क्यों देते हो ?

मैं : अच्छा, चलो हाथ मिलाएँ।

मैं : चौके में। देखो चौका कितना गंदा है। श्रीमती आरती लाल की तबीयत अगर खराब न होती तो यह चौका इतना गंदा होता।

मैं : चलो साफ करें।

मैं : पहले बर्तन, फिर चौका, फिर चाय···।

मैं : फिर ?

मैं : इस क्षण तो केवल यही है। इसके अलावा और कुछ भी नहीं। न मैं तुम···।

सबरंग मोहभंग

पात्र

पुरुष : अजय मड़ोदिया
युवती : कुमारी राजकिरन कौल
पहला युवक : अशोक निशेष
दूसरा युवक : अमिताभ श्रीवास्तव
तीसरा युवक : पंकज सक्सेना
चौथा युवक : गोविन्दप्रसाद नामदेव
पाँचवाँ युवक : अविनाश श्रीवास्तव
दर्शक : सुनील जैन

मध्यांतर के बाद

पहला युवक : हेमन्त मिश्र
दूसरा युवक : ज्योति स्वरूप
तीसरा युवक : पंकज सक्सेना
युवती : राजकिरन कौल
आगन्तुक : अजय गड़ोदिया

श्रेय

मंच-विधान : जमील अहमद, दिलीपचन्द
प्रकाश : विजय काविश, रवि शर्मा, अशोक भार्गव और जमील अहमद
संगीत-चुनाव : पंकज जमील
संचालन : कुमारी त्रिपुरा शर्मा
परिधान : कुमारी राजकिरन कौल और कुमारी नूतन मिश्रा
मंच-व्यवस्था : पंकज सक्सेना
निर्देशन : ज्योति स्वरूप, जमील अहमद

पहला दृश्य

[मंच पर प्रकाश आते ही पुरुष और युवती एक-दूसरे का पीछा करते दौड़ते दिखते हैं। अचानक युवती रुककर बोलने लगती है। पुरुष दौड़ने का अभिनय कर रहा है।]

पुरुष : ज़रा ज़ोर से ! और ज़ोर से ! ओहो, चिल्लाकर नहीं। अभिनय···अभिनय···।

युवती : हे महाकाल ! (सहसा रुककर) ठीक है ?

पुरुष : चलेगा। सामने देखो, सामने। घबड़ाते नहीं।

युवती : हे महाकाल ! कैसी है यह दौड़ !
हे महाशून्य ! कैसा है यह मौन !

पुरुष : शरीर में भाव लाकर···।

युवती : फिर से करूँ ?

[पुरुष रुकता है।]

पुरुष : यह रिहर्सल नहीं, प्रदर्शन है।

युवती : हे महाकाल ! कैसी है यह दौड़ ! (सहसा) दौड़ते क्यों नहीं ? दौड़ो !

[पुरुष दौड़ने का अभिनय करता है।]

युवती : यह धुरी क्या है जिस पर सब रहा घूम
कौन है घूम रहा
कौन है घुमाने वाला
उत्तर मौन क्यों है
मैं कब तक पुकारूँ तुम्हें अकेला कंठ ले
हे महाकाल, क्षितिज पर भोर फूटेगा कब
कब टूटेगा तुम्हारा मौन ?

[दर्शकों में अशांति फैलने लगती है। उन्हीं में बैठे हुए युवक बोलना शुरू करते हैं।]

पहला : भाई, यह कवि-सम्मेलन है या नाटक ? कहीं गलत जगह तो हम नहीं आ गए ?

दूसरा : पहले थोड़ा और देख तो ले।

तीसरा : इसमें देखना क्या है ?

चौथा : अरे भाई, थोड़ा सब्र तो रखो। उधर देखो।

पहला : हम नाटक देखने आए हैं, यह बकवास सुनने नहीं। न कोई सिर, न पूँछ। एक बेमतलब दौड़ लगा रहा है और यह बहनजी दिमाग चाट रही हैं···महाकाल··· महाशून्य···जिसका कोई मतलब नहीं। फिजूल की लफ्फाजी।

तीसरा : हम दर्शकों का जैसे कोई मतलब ही नहीं है। जिस पर ये नाटक वाले कहते हैं—दर्शक नहीं हैं। और दर्शकों की यह हालत बनाते हैं—'बोर' करते हैं खामखा।

[इस बीच मंच पर वही दृश्य चल रहा है। अब पुरुष रुककर बोलना चाहता है।]

पहला : देखिए जनाब, कुछ बोलने से पहले हम दर्शकों की सुन लीजिए—इस तरह आप हमें 'बोर' नहीं कर सकते।

तीसरा : कुछ हमारे मतलब की चीज़ दिखाइए, वरना आप सिर पीटिए। हम चले।

पहला : हमारे टिकट के पैसे वापस कीजिए।

दूसरा : अरे भाई, इस बेचारे का 'डायलॉग' तो सुन लो। हो सकता है, कोई दिलचस्प बात पैदा हो जाए।

तीसरा : ठीक है। तू भी सुना।

पुरुष : जो रुका है आपके सामने, दरअसल वह भी दौड़ रहा है।

पहला : अब सम्हालो।

पुरुष : रुकने और दौड़ते रहने में सिर्फ उतना ही फर्क है, जो रोने और हँसने में है।

तीसरा : तेरा सिर है !

पुरुष : क्या आपने कभी अपनी मुस्कराहट नापी है
कोई है जो हमारी खामोशी नाप रहा है
आओ हम भी नाप लें उसकी मुस्कान
नहीं तो वह यह कहकर चुप हो जाएगा
सारी मुस्कान यह केवल डेढ़ इंच की है।

पहला : यार, यह एक्टर है कि दर्जी ?

तीसरा : भाई साहब, माफ कीजिए, बहुत हुआ।

चौथा : बहनजी रुक जाइए। थक गई होंगी।

[युवती रुक जाती है।]

पुरुष : आप लोग क्या चाहते हैं ?

पहला : जाहिर है, नाटक देखना चाहते हैं।

पुरुष : कैसा नाटक ?

पहला : जो हमारी समझ का हो। हम आपका हवाई, दिमागी खेल नहीं बर्दाश्त कर सकते।

चौथा : बहुत हुई बकवास तुम्हारी।

पहला : हम मनोरंजन के लिए आए हैं।

पुरुष : कैसा मनोरंजन ? हम कोई फिल्मी गाना सुनाएँ ? हँसी-मजाक पेश करें ?

दूसरा : पहली बात, हम दर्शकों का भी खयाल कीजिए।

तीसरा : हम जिस मकसद से यहाँ आए हैं, उसे मत भूलिए।

चौथा : वरना हम आपको यहाँ खड़ा नहीं रहने देंगे।

पुरुष : ठीक है हम आपकी बात मानते हैं। तो आप लोग यहाँ आ जाइए। नहीं, नहीं, सब लोग नहीं। वहाँ से शोर मचाना आसान है। यहाँ आते ही सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। आप आइए···आप···आप···भी आ जाइए···और आप भी। बाकी लोग बैठ जाइए अपनी-अपनी जगह। लाइट ऑफ। (अँधेरा) लाइट दो। पूरी लाइट।

[प्रकाश]

दूसरा दृश्य

[मंच पर वही पुरुष खड़ा है। चारों युवक और वही युवती।]

पुरुष : तो हम आपका नाटक शुरू करें ?

चारों : बिलकुल।

पुरुष : आपके नाटक का नाम क्या होगा ?

पहला : सबरंग।

दूसरा : नहीं, मोहभंग।

पुरुष : चलिए—सबरंग मोहभंग।

[संगीत]

पुरुष : हाजरीन लेडीज एण्ड जेंटिलमेन, देवियो, महाशय, सज्जनो ! बेटिकट घुसपैठिए बेबुलाए मेहमानो, मंच के इधर-उधर बेमतलब खड़े खुसुर-फुसुर करते हुए लोगों से, बड़ा बच्चा लोग बातें बन्द। देवियो, इधर ध्यान दीजिए, ज़िन्दगी का प्याला कभी भरता नहीं, नाटक का जाम पीजिए। खेल बुरा लगे, तो खुलकर हमें बददुआ दीजिए। अच्छा लगे, राम-राम कीजिए। आइए, अब थोड़ा-सा इधर ध्यान दीजिए। देखिए और सोचिए। सोचने से अगर एलर्जी है तो सोचने की 'स्विच' ऑफ कर दीजिए और जिसकी बिजली ही कट गई है, चाहे तो अन्दर एक लालटेन जला लीजिए और जिसे देखना नहीं आता, मतलब आँखें भरपूर हैं, मगर खुदगर्जी

से इस कदर चकनाचूर हैं कि अपने अलावा और कहीं कुछ दीखता ही नहीं तो उसे मेरी करजोड़ बिनती है, अजी आपके सामने मेरी क्या गिनती है—विनती यह है कि थोड़ा-सा ध्यान दीजिए, हँसी आए तो रोक लीजिए। न आए तो रूमाल से मुँह पोंछ लीजिए। जो आप चाहेंगे, हम वही दिखाएँगे। गरज़, हममें-आपमें कोई फर्क नहीं। आप जो चाहेंगे, वही होंगे आप। आप जो होंगे, वही होंगे हम।

[दर्शक शोर मचाते हैं—'खेल करो शुरू क्या लगे यह भाषणबाज़ी करने !']

पुरुष : कमाल है ! पहले पूछना होगा, आखिर देखने वाले देखना चाहते हैं ?

युवती : ये जब यहाँ देखने आए हैं हमें, तो यह साफ है कि ये अपने-आपको नहीं देखना चाहते हैं !

पुरुष : पर सवाल है कि ये देखना क्या चाहते हैं ?

युवती : मतलब, आपके पास अपना कुछ दिखाने को नहीं है ?

पुरुष : क्यों नहीं ! तुम हो एक हसीना, जिसे देखकर आए पसीना। अरे बन भी जाओ, राम, श्याम, गुलाम और सतकाम।

युवती : मेरा नाम तो बताइए।

पुरुष : बताना मना है।

युवती : तो हटिए किनारे, कीजिए इशारे।

पुरुष : तो इनसे न पूछूँ !

युवती : पूछिए, मगर भाषण मत दीजिए।

पुरुष : मगर पूछने के पहले हालचाल तो पूछना ही पड़ता है। हाँ, तो हाज़रीन ! जो हम हैं, वही हैं आप, जो हम हैं, वही है हमारा बाप। तो हम वक्त और बरबाद न करें, खेल शुरू कर दें। आप आए हैं तो लौटकर जाना भी है। आएँगे तो खाना भी है। हाँ, तो हाज़रीन, हम खेल दिखाएँगे नमकीन। जो कहेंगे, वही 'क्विएट' कर देंगे सीन। बोलिए, क्या चाहिए, बताइए हाज़रीन—कॉमिडी या ट्रेजिडी, ड्रामा या मेलोड्रामा, रेलिजस या माइथोलॉजिकल, सोशल या···

[दर्शकों में से एक आवाज़ आती है।]

आवाज़ : रोमांस।

दूसरी : नहीं, रोमांटिक कॉमेडी।

तीसरी : नहीं, खालिस रोमांस। हम ज़िन्दगी से बोर हो चुके हैं। कहीं कुछ खालिस नहीं।

पुरुष : लड़िए नहीं, झगड़िए नहीं। हम समझ गए, आपको चाहिए रोमांस। तो रोमांस चलती सड़क का, क्लास-रूम या चौके-चूल्हे का ? डोमेस्टिक रोमांस या किसी दफ्तर का, क्लर्क या किसी अफसर का···?

[एक आदमी खड़ा होकर जोर से कहता है—'अजी, पन्द्रह-बीस मिनट में सब चाहिए।']

पुरुष : तो लीजिए, हमारे खेल का जाम पीजिए। हम शुरू करते हैं सड़क के रोमांस से···। आप ही लोगों के साथ से। आप, आप, आप, आप और आप यहाँ आ जाइए।

[पुरुष तेज़ चलता है। दृश्य में चलती हुई युवती बैग खोलकर उसके शीशे में अपने-आपको देखती हुई होंठों पर लिपस्टिक लगा रही है। चारों युवक उसका पीछा कर रहे हैं। पुरुष चौराहे का ट्रैफिक पुलिस बनकर सीटी बजाता हुआ हाथ दिखाता है। पूरा ट्रैफिक रुक जाता है।]

राम : उधर कोई ट्रैफिक नहीं तो इधर क्यों रोक दिया ?
श्याम : देखते नहीं, हमें देर हो रही है !
गुलाम : इत्ती तेज़ धूप में खड़ा कर दिया !
सतकाम : बहनजी, आप क्यों नहीं कुछ कहतीं ?
युवती : आप लोग क्यों नहीं कहते ?
राम : आप नज़दीक हैं।
श्याम : आपकी बात का असर पड़ेगा।
सतकाम : हमारी कौन सुनता है !
श्याम : यार, चुप भी रहो।
राम : चुप तो हैं ही।
युवती : इसके अलावा और है ही क्या ?
राम : देखिए, ऐसा मत कहिए।
श्याम : बहनजी, आप भी किसके मुँह लग रही हैं ?
सतकाम : हाय, कित्ती उमस है !
श्याम : ओ रे भाई, इधर तो घूम।
राम : जल्दी भी क्या है !
श्याम : तुम्हें न हो, मुझे है।
राम : तो चीखते क्यों हो ?
श्याम : ताकि उसे सुनाई पड़े।
युवती : अरे, मेरी घड़ी ही रुक गई।
सतकाम : हम सब रुके हैं।
युवती : आप सब घड़ी हैं ? कोई दूसरा चाभी दे तो चलेंगे ?
राम : हम घड़ी नहीं हैं।
युवती : तो चलते क्यों नहीं ?
राम : आप मेरे साथ चलेंगी ?
युवती : चलने के लिए कोई शर्त नहीं होती। जिसको जाना है, वह चल पड़ता है; पर आप लोगों ने तो शर्तों की ज़िन्दगी काटी है।
गुलाम : क्या आपने नहीं काटी ?

युवती : बस, अब यही रह गया, हम आपस में लड़ें।

[पुलिस वाले ने अपनी पॉकेट से एक शीशा निकालकर युवती के सामने कर दिया है। युवती उसमें अपना मेकअप ठीक करती है।]

राम : महाशयजी, हमें जाने दीजिए।

युवती : सवाल है, जाइएगा कहाँ ?

राम : जहाँ मुझे जाना है।···कमाल है, हमें जाने क्यों नहीं देते ?

[पुलिस वाले ने शीशा पॉकेट में रख लिया है और इधर पीठ फेर ली है।]

श्याम : जिधर कोई ट्रैफिक नहीं, उधर पास दिए जा रहे हैं। हमें खामखा रोक रखा है।

गुलाम : सुना है, उधर से कोई महाशयजी अभी गुज़रने वाले हैं, तभी इधर का सारा ट्रैफिक रोक दिया गया है।

सतकाम : कौन हैं ? क्या हैं ? कौन-सी हस्ती हैं ? कभी नाम सुना नहीं। भाई, नाम तो बताओ। यह महाशयजी कोई नाम है या उपनाम ? हअँ, महाशयजी !

युवती : मैंने सुना है।

श्याम : क्या सुना है ?

युवती : देखा भी है।

राम : क्या देखा है ?

युवती : उनके बारे में क्या कहने ! वह वाह-वाह ! जब चलते हैं तो घुंघरू बजते हैं; जब बोलते हैं तो फूल झरते हैं; जब हाथ उठाकर ललकारते हैं, तो हाय-हाय-हाय ! फिल्म के हीरो हैं, असली।

श्याम : वह हैं कौन ?

[सब युवती को घेरकर उत्तेजित होकर पूछने लगते हैं। इस बीच पुलिस वाले ने सीटी बजाकर जाने के लिए पास दिया था, पर ये लोग बुरी तरह अपनी बातों में फँसे थे।]

राम : चलो, चलो, पास दे दिया है।

[सब बढ़ते हैं, पर पुलिस वाला फिर पीठ मोड़ लेता है।]

गुलाम : हम रातों में फँसे रहे, हमारा चांस निकल गया।

श्याम : हे जी, आप कहाँ रहती हैं ?

सतकाम : आप कहाँ जा रही हैं ?

गुलाम : यह मेरा कार्ड है, क्या आपसे मेरी 'फ्रेंडशिप' हो सकती है ? यों तो मेरे पास अपना कुछ नहीं है, पर आपके लिए मैं कोई भी त्याग कर सकता हूँ।

युवती : फिर मुझे त्याग दीजिए।

श्याम : त्याग ही जीवन है। जिसमें त्याग नहीं, वह अधम है। मैं इतना पढ़-लिखकर

त्याग का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। कहीं कोई सिफारिश नहीं, नौकरी नहीं, सो त्याग का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

राम : जब कुछ है नहीं तो त्याग कैसा ? मेरे पास है—उत्साह, पर बिना किसी सपोर्ट के उत्साह ठंडा पड़ा है। आपके पिताजी क्या हैं ?

युवती : अब यही सवाल रह गया है ?

राम : पर आप हैं कौन ?

श्याम : बहनजी, बता ही दीजिए।

युवती : मैं उनकी प्राइवेट सेक्रेटरी हूँ।

राम : अरे ! फिर इसे अपना कार्ड दिखाइए।

श्याम : इसकी क्या मजाल कि हमें इस तरह रोके रखे ! वाह···

गुलाम : जी महाशयजी, यह उनकी प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। यह देखिए कार्ड। आदाब अर्ज़ !

[पुलिस वाला कार्ड देखता है। सूँघता है। गश खाकर गिरने लगता है। सब उसे सम्हालते हैं।]

राम : पास दीजिए, हम निकल जाएँ।

श्याम : हम बहुत तेज़ दौड़कर निकल जाएँगे।

गुलाम : महाशयजी की गाड़ी आ रही है।

पुलिस वाला : सावधान !

[सीटी बजाता है।]

राम : महाशयजी की सवारी के पीछे-पीछे निकल सकते हैं।

[पुलिस वाला सैल्यूट मारता है। अदृश्य महाशयजी के पीछे-पीछे पुलिसमैन चलता है। उसके पीछे-पीछे सब चलते जाते हैं।]

तीसरा दृश्य

पुरुष : हाज़रीन, तालियाँ बजाना बन्द कीजिए। अब पेशे-खिदमत है, चौके-चूल्हे का रोमांस। यह है मेरी धर्मपत्नी गुलाबो। समझ लीजिए, ये मेरे चार लड़के हैं। नाम वही चलेगा। अजी, अब नाम में क्या रखा है ? तो जनाब, यह पहले की मेरी गलती है। चार लड़के, मतलब इतनी औलाद···बाप रे ! सो गलती हो गई तो भुगत रहा हूँ। ऐसी गलती आप न करें। पर यह भी सच है, कबूल करता हूँ, जो गलती करता है, वही कहता है दूसरों से—गलती न करें। पर यह एक ऐसी गलती है, जिसे मैं अपराध कहूँगा। इसका सम्बन्ध सीधे पेट से है, और पेट ही

सारी मुसीबतों की जड़ है। हाँ, हाँ मुझे पता है, तुम लोग बहुत भूखे हो, पर अपनी माँ की मुसीबत भी तो देखो। क्या कहा, मैं देखूँ ? मैं तो देख ही रहा हूँ, अब आप लोग देखिए···।

[इस बीच गुलाबो (युवती) चूल्हा फूंकने लगती है। धुएँ से उसकी नाक में दम है। पाँचों लड़के चौके में रोटी खाने बैठे हैं।]

राम : अम्माँ, रोटी दे।

श्याम : मम्मी, खाना दे।

गुलाम : माताजी, बड़ी भूख लगी है।

सतकाम : कित्ती देर हो गई बैठे-बैठे !

राम : कलेजा मुँह को आ रहा है।

गुलाबो : तो खा लो न कलेजा ! दाढ़ीजार के पूत ! जब देखो तब खाऊँ-खाऊँ। चूल्हा नहीं जलता तो कहाँ से लाऊँ ? खुद को पकाऊँ या तेरे दाढ़ीजार बाप को पकाऊँ ? चाऊँ-माऊँ, खाऊँ-माऊँ।

[पाँचों थाली बजाकर गाना शुरू करते हैं।]

अम्मां रोटी दे
अम्मी रोटी दे
पेट मा लागी आग आँख से पानी बरसे
चहुँदिस है बरसात पिया बिन नैना तरसे
अम्माँ रोटी दे
अम्मी रोटी दे।

पुरुष : चोप्प ! साइलेंस प्लीज ! मेरे प्यारे भूखे-प्यासे जिगर के टुकड़ो, कीप क्वाइट। अरी गुलाबो ! ओ री मेरी प्यारी गुलाबो ! हे री सब्ज़परी मेरी, तू कहाँ है ? (बैठ जाता है) तेरे बिना मैं जला जा रिया हूँ। इतना धुआँ उठ रिया है इस घर में कि घुटकर मरा जा रिया हूँ।

[गुलाबो एक बाल्टी में पानी लाकर पति के ऊपर डालती है। शेष पानी चूल्हे में डालती है। पाँचों लड़के वही गीत गाते हैं। पिता अपने गीले कपड़े झाड़ रहा है। गुलाबो उसे पंखा कर रही है।]

पुरुष : अबे चोप्प, भैंस की औलाद ! ···गुलाबो ! हो री गुलाबो !

गुलाबो : (गुस्से से) मेरे बच्चों को भैंस की औलाद कहा ? मैं भैंस हूँ ?

पुरुष : अरे प्यार से कहा।

गुलाबो : प्यार नहीं, कपार। भैंस होंगे तुम !

[लड़के हँस रहे हैं।]

पुरुष : हे, चलो यहाँ से ! चलो ! भागो यहाँ से ! अच्छा भागवान, ये भैंस की

औलाद नहीं, देवी-देवता की औलाद ।

[सब चुप देखते रह जाते हैं ।]

गुलाबो : तुम मुझसे परेम करते हो न ?

पुरुष : अरे यह भी कोई कहने की बात है ।

गुलाबो : तुम्हारे हाथ में तो परेम करने की रेखा ही नहीं है ।

पुरुष : अरे काम करते-करते घिस गई रेखा । हिरदय में है ।

गुलाबो : अच्छा, अगर मुझसे परेम करते हो तो मेरे कहने से इस कुएँ में कूद जाओ ।

पुरुष : लो, इसमें क्या है, अभी कूद जाता हूँ; पर बचा जरूर लेना डूबने से । चलो, अपने हाथ से धक्का दे दो ।

गुलाबो : नहीं, मैं पतिव्रता नारी हूँ ।

पुरुष : तो मैं कूद रिया हूँ । एक, दो, तीन···

[कूदता है ।]

सब लड़के : वाह पिताजी, क्या छलाँग मारी है !

[पिताजी 'बचाओ, बचाओ' चिल्ला रहे हैं ।]

गुलाबो : रुको, चिल्लाओ नहीं । पहले अपनी भाग्य-रेखा देख लूँ कि तुम बचोगे या नहीं ।

[एक दर्शक उठकर ।]

दर्शक : बस-बस, अब रोमांस नहीं, ट्रेजिडी ।

पुरुष : सीरियस या वेरी सीरियस ?

दर्शक : वेरी सीरियस ।

चौथा दृश्य

पुरुष : ट्रेजिडी नाटक में नहीं, जिन्दगी में होती है । जिन्दगी की समझ में । नाटक सीरियस नहीं होता, 'सीरियस' होता है दर्शक । तो हाजरीन, गम्भीरता है देखने में ।

एक पुरानी कहानी सुनाता हूँ—जातक कथा—एक था राजा । उसे मांस खाने का बहुत शौक था । तरह-तरह के जीव-जन्तुओं के मांस खाता । जिस दिन मांस लजीज नहीं होता, मंत्री को पाँच कोड़े लगते ।

[दृश्य में राजा, मंत्री, रसोइया और नौकर।]

राजा : सारा भोजन नीरस।

मंत्री : क्यों रसोइया, भोजन नीरस क्यों ?

रसोइया : जैसे रोज़ बनाता था—वही मसाले, वही घी, तेल···मांस अच्छा नहीं रहा होगा।

राजा : क्यों मंत्री ?

मंत्री : दुहाई महाराज की ! मांस हिरन का था।

राजा : ओह, हिरन का मांस खाते-खाते ऊब गया।

मंत्री : भेड़ और बकरे का भी था।

राजा : रोज़-रोज़ वही भेड़-बकरा ! मंत्री को पाँच कोड़े मारे जाएँ।

[मंत्री को पाँच कोड़े लगते हैं।]

राजा : जाओ, कोई ऐसा मांस लाओ, जिसे मैंने अब तक न खाया हो। इतना लाजवाब, ज़ायकेदार हो कि मैं खुश हो जाऊँ।

मंत्री : कोशिश करूँगा महाराज !

[मंत्री खोज में निकलता है।]

पुरुष : घूमते-घूमते, तलाशते-तलाशते मंत्री एक नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ एक चिता जल रही थी। मंत्री ने सोचा, क्यों न मैं इंसान का यह भुना हुआ मांस राजा को खाने को दूँ। ऐसी नायाब चीज़ तो राजा ने कभी न खाई होगी। सो जलती चिता से मांस का एक टुकड़ा लेकर चला मंत्री राजा के पास।

[मंत्री इसी कार्य का अभिनय करता है।]

राजा : वाह-वाह ! क्या लज़ीज़ चीज़ है ! थोड़ा और ले आओ। थोड़ा और।

[रसोइया, मंत्री, नौकर ला-लाकर देते हैं।]

राजा : थोड़ा और।

मंत्री : महाराज, अब और कल।

राजा : अब यही मांस रोज़ बनेगा मेरे खाने के लिए। इसके अलावा और कोई चीज़ नहीं। वाह !

मंत्री : जो आज्ञा महाराज !

पुरुष : मंत्री रोज़ एक आदमी को मरवाता और राजा बड़े मज़े से वही खाता।

[राजा खा रहा है।]

राजा : वाह-वाह, क्या चीज़ है ! अब इसके अलावा और कुछ भी नहीं खा सकता। इससे मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा होता चला जा रहा है। मेरी बुद्धि भी बढ़ती चली जा रही है। राज्य में कितनी शान्ति है ! प्रजा सुखी है। सब इसी स्वादिष्ट भोजन का प्रताप है। वाह-वाह !

पुरुष : राज्य में प्रजा दिनोदिन कम होती चली गई। सारी प्रजा भयभीत हो गई। लोग राज्य से भागने लगे। चारों तरफ हाहाकार मच गया। एक दिन एक स्त्री रोती हुई राजदरबार में आई।

[राजा के दरबार में स्त्री आती है।]

राजा : कहाँ है मेरे देश का राजा ?
पुरुष : मैं हूँ। बोलो, तुम्हें क्या कहना है ?
स्त्री : तुम्हारा यह मंत्री हत्यारा है। मेरे बेटे को मारकर···
मंत्री : ऐ पागल स्त्री, जबान सँभालकर बातें कर ! जानती नहीं, तू क्या कह रही है ?
स्त्री : क्या राजा जानता है वह किसका मांस खा रहा है ?
मंत्री : चुप रह ! चली जा यहाँ से !
स्त्री : तूने मेरे इकलौते पुत्र को मारा।
राजा : मंत्री, यह क्या कह रही है ?
स्त्री : राजा, तू मनुष्य का मांस खा रहा है। यह प्रतिदिन किसी प्रजा की हत्या कर वही तुझे खाने को देता है। प्रजा में हाहाकार मचा है तेरी भूख का।
राजा : क्यों मंत्री, यह सच है ?
मंत्री : सच है महाराज !
राजा : यह जघन्य अपराध तूने क्यों किया ?
मंत्री : यही आपकी इच्छा थी।
राजा : क्या कहा ?
मंत्री : यही आपकी आज्ञा थी।
राजा : बन्दी कर लो इसे !

[सब मंत्री को बन्दी बनाते हैं।]

मंत्री : इसमें मेरा क्या अपराध ! जो आपको प्रिय था, मैंने वही किया। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

बचाओ, बचाओ ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं। जो आपने चाहा, मैंने वही किया। आपने कभी पूछा नहीं, सो मैंने बताया नहीं।

राजा : क्यों नहीं बताया ? यही है तेरा अपराध।
मंत्री : मैं कैसे कब बताता ?
राजा : हत्यारा कहीं का ! ले जाओ इसे, बन्दीगृह में डाल दो।

[मंत्री को ले जाते हैं। राजा अशांत होता है।]

राजा : मुझे भूख लगी है। खाना लाओ। वही खाना। वही स्वादिष्ट पकवान। क्या देख रहे हो मेरा मुँह ?

[रसोइया आता है।]

राजा : मुझे भूख लगी है। कहाँ है मेरा भोजन ?

रसोइया : वह नहीं है।

राजा : बुलाओ रानी को।···रानी !

[रानी आती है।]

राजा : देखती नहीं, मुझे इतनी भूख लगी है !

रानी : तरह-तरह के व्यंजन तैयार हैं। चलिए, भोजन कीजिए।

राजा : तुम्हें पता नहीं, मैं केवल वही भोजन कर सकता हूँ। बुलाओ मंत्री को।

रानी : मंत्री कारागार में है।

राजा : मुक्त करो।

[मंत्री आता है। सारे राजदरबार के लोग चिन्तित खड़े हैं।]

एक : मंत्री, रक्षा करो हमारी !

दूसरा : नहीं तो एक-एक कर राजा हमें खा जाएगा।

तीसरा : उसे छोड़ राजा और कुछ नहीं खाना चाहता।

रानी : बिना और कुछ खाए-पिए राजा मर जाएगा।

चौथा : राजा की आज्ञा है, कोई प्रजा न मिले तो राजदरबार से एक-एक कर लोगों की बलि दी जाए।···बचाओ-बचाओ···

[मंत्री राजा के पास आता है।]

मंत्री : राजा ! सुनो राजा ! एक थी नदी। बहुत बड़ी, बहुत गहरी।

राजा : कहानी सुनने का समय कहाँ है ? इतनी भूख लगी है।

मंत्री : बहुत छोटी-सी कथा है महाराज !

राजा : जल्दी करो !

[शेष लोग इस कहानी का अभिनंदन करते हैं।]

मंत्री : नदी में एक बड़ी मछली रहती थी। बड़ी मछली का एक ही काम था—नित्य एक छोटी मछली को खा जाती। इसका असर और मछलियों पर पड़ा। हर बड़ी मछली अपने से छोटी मछली को खाने लगी। धीरे-धीरे नीचे से छोटी-छोटी मछलियाँ समाप्त होने लगीं। फिर बड़ी मछलियों को उनसे बड़ी मछलियाँ खाने लगीं। और उस नदी में जो सबसे बड़ी मछली थी—सबसे बड़ी, उसने नदी की सारी मछलियों को खा डाला। नदी में अब एक भी मछली नहीं। केवल वही बड़ी मछली। और अब वह बड़ी मछली इतनी बड़ी, मोटी, विशालकाय हो गई कि नदी में उसका चलना-फिरना कठिन हो गया। नदी के बीच में एक जगह एक छोटा-सा पहाड़ था। एक बार वह मछली, जब उसे भूख बहुत लगी, तो उसने शिकार की तलाश में अपने पूरे बदन से उस पहाड़ को चारों तरफ से कुंडली मारकर बाँध लिया। उसके मुँह के ऊपर उसकी पूँछ। उसने

सोचा, मेरे मुंह के पास कोई छोटी मछली आई है। उसने मुंह में डाल ली अपनी पूंछ और खुद खाने लगी—अपने आपको…।

[राजा की कमर पकड़े सब वही विशालकाय मछली बने हुए हैं। सब गोलाई में हैं। राजा के मुंह के पास रानी है।]

एक दर्शक : भाई, यह तो बहुत 'सीरियस' हो गया। हमें, ऐसी 'ट्रेजिडी' नहीं चाहिए। हमें 'कॉमेडी' चाहिए।

दूसरा दर्शक : धत् ! कॉमेडी नहीं, सुखांतकी। ज़रा भी राष्ट्रभाषा से प्रेम नहीं ?

तीसरा दर्शक : अजी, कोई माइथोलॉजिकल चीज़ दिखाइए; पर सावधान, समसामयिक, मतलब 'कंटेमपोरेरी' अर्थ डालकर सारा गुड़ गोबर मत कर दीजिएगा।

पाँचवाँ दृश्य

पुरुष : समझ गया, समझ गया। हाज़रीन, मेहरबान, समझ गया। पांडवों ने जुआ खेला। इस दृश्य में कुछ और लोगों की ज़रूरत है। आ जाइए, आप भी।

[चरित्र आ जाते हैं।]

राम : पांडव जुए में हार गए।

पुरुष : चौदह वर्ष का बनवास हुआ।

श्याम : बारह वर्ष का वनवास, दो वर्ष का अज्ञातवास।

गुलाम : बनवास पूरा किया।

पुरुष : बनवास काटकर लौटे राजधानी। युधिष्ठिर बोले दुर्योधन से—भाईजान, अब दो हमारा आधा राज। हमने अपना वचन किया पूरा, भाई, तुम भी अपना वचन करो पूरा।

दुर्योधन : कैसा वचन ?

युधिष्ठिर : अरे, आप भूल गए ! आधा राज्य देने का।

दुर्योधन : यह आधा राज्य और पूरा राज्य क्या होता है ? राज्य के बारे में तुम बिलकुल अनाड़ी हो।

युधिष्ठिर : हमें हमारा राज्य दीजिए।

दुर्योधन : राज्य ? कैसा राज्य ?

युधिष्ठिर : हमारा अधिकार।

दुर्योधन : ओह ! अब समझा। राज्य माँगने आए हो ?

युधिष्ठिर : जी हाँ, बिल्कुल।

दुर्योधन : राज्य चलाने का अनुभव है ?

युधिष्ठिर : हो जाएगा।

दुर्योधन : ओह, भविष्य की बातें मत करो। राज्य चलाने का अनुभव नहीं है, इसलिए राज्य नहीं मिलेगा।

युधिष्ठिर : पर हम उसके अधिकारी हैं।

दुर्योधन : यहाँ अधिकार का प्रश्न नहीं, अनुभव का प्रश्न है। जाओ, समय मत बर्बाद करो। हुँ, राज्य दे दो इन्हें! जैसे कोई खेल है। लड्डू है—इन्हें दे दो। जाओ, तुम जैसे अनाड़ी के हाथ में राज्य देकर प्रजा को मैं तबाह नहीं कर सकता। अधिकार के नाम पर अशांति फैलाना चाहते हो! जाओ, खड़े क्या हो!

युधिष्ठिर : तो नहीं दोगे हमारा अधिकार?

दुर्योधन : माँगने से नहीं मिलती है भीख, यह तू मुझसे सीख।

युधिष्ठिर : अहंकारी!

दुर्योधन : भिखारी!

[युधिष्ठिर दौड़े हुए कृष्ण के पास जाते हैं। कृष्ण बाँसुरी बजा रहे हैं। युधिष्ठिर 'कॉलबेल' दबाते हैं।]

कृष्ण : कौन है?

युधिष्ठिर : युधिष्ठिर।

कृष्ण : 'कम इन'।

[युधिष्ठिर पास आते हैं।]

कृष्ण : चाय या कॉफी?

युधिष्ठिर : मैं बहुत परेशान हूँ महाराज!

कृष्ण : फिर तो कोकाकोला चलेगा।

युधिष्ठिर : मेरी बात तो सुनिए। दुर्योधन ने कहा—मैं पांडवों को राज्य नहीं देता।

कृष्ण : ऐसा?

युधिष्ठिर : ऐसा महाराज, ऐसा!

कृष्ण : पर वह कहता क्या है?

युधिष्ठिर : कहता है—मेरा राज्य है, मैं किसी को नहीं देता। बनवास काटकर आए, अपना धर्म पूरा किया। जो जिसका काम है, वह करेगा, कर रहा है। राज्य करने का अनुभव नहीं है, सो राज्य नहीं मिलेगा।

कृष्ण : ऐसा कहा?

युधिष्ठिर : हाँ, महाराज!

कृष्ण : घबराओ नहीं, मैं जाता हूँ उसके पास।

युधिष्ठिर : मैं भी चलूँ?

कृष्ण : नहीं। मुझे अकेले जाना होगा!

[कृष्ण दुर्योधन के पास पहुँचते हैं।]

कृष्ण : (उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए खँखारते हैं) अरे भाई, मैं आया हूँ। देखो, आया हूँ—कृष्ण। अरे, मैं इधर हूँ।

[दुर्योधन युवती से।]

दुर्योधन : पूछो 'अप्वॉइंटमेंट' लिया था ? हुँ, चले आते हैं बड़बड़ाते हुए ! वही पुराना जमाना सोच रखा है !

युवती : महाराज से आपका 'अप्वॉइंटमेंट' था ?

कृष्ण : बोलो, कृष्ण आए हैं।

युवती : (आकर) कृष्ण आए हैं महाराज !

दुर्योधन : कोई कुछ भी हो, बिना 'अप्वॉइंटमेंट' के नहीं मिल सकता। खैर, मिल लेता हूँ; पर बोल देना, आइन्दा ऐसा न हो। सुनो, ज़रा देख-सुन लेना। सावधान !

[युवती कृष्ण को एक सिपाही के पास ले जाती है।]

सिपाही : यह क्या चीज़ है ?

कृष्ण : बाँसुरी।

सिपाही : यह क्या चीज़ होती है ?

कृष्ण : बजाई जाती है···संगीत होता है।

सिपाही : कैसा संगीत ? यह क्या चीज़ है ?

कृष्ण : बजाकर दिखा दूँ ?

सिपाही : नहीं-नहीं, इसे यहाँ छोड़कर जाओ !

कृष्ण : इसे छोड़ा नहीं जा सकता।

सिपाही : कोई खतरनाक चीज़ तो नहीं ?

कृष्ण : अरे, यह बाँसुरी है भाई !

सिपाही : फिर भी कोई खतरनाक चीज़ तो नहीं ! (देखता है) क्या इसे साथ ले जाना जरूरी है ?

[युवती सिपाही के कान में कुछ कहती है। सिपाही घबराकर उनके पैरों पर गिरता है।]

सिपाही : छमा हो मुरलीमनोहर ! छमा हो !

[कृष्ण मुस्कराते हैं। दुर्योधन के पास जाते हैं।]

युवती : महाराज, कृष्ण पधारे हैं।

दुर्योधन : कहिए, क्या बात है ?

कृष्ण : अरे भाई, कुछ नमस्कार-प्रणाम तो करो !

दुर्योधन : इतना समय नहीं है।

कृष्ण : क्या ?

दुर्योधन : देखिए, समय नष्ट मत कीजिए। देखते क्या हैं ? अपनी बात लिखकर लाए हैं ? ओ हो ! ···संक्षेप में कहिए—क्या है ? बेहतर होगा, प्रार्थना-पत्र लिखकर मेरी सेक्रेटरी को दे दीजिए।

कृष्ण : मुझे कुछ आप ही से कहना है।

दुर्योधन : कहिए, जल्दी कीजिए। देखिए, मेरे पास इतना वक्त नहीं है। उधर मत देखिए—वह मेरी प्राइवेट सेक्रेटरी है। वह यहीं रहेगी।

कृष्ण : आपका स्वास्थ्य तो ठीक है ?

दुर्योधन : देखिए, सीधे अपनी बात पर आइए। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है।

कृष्ण : दरबार बड़ा सूना लग रहा है।

दुर्योधन : भूमिका बाँधने की कोई जरूरत नहीं।

कृष्ण : आपका चित्त बड़ा अशांत है।

दुर्योधन : देखिए, समय नष्ट मत कीजिए। मेरा चित्त शांत हो या अशांत, आपसे कोई मतलब नहीं।

कृष्ण : भाई, मैं आपका मित्र हूँ।

दुर्योधन : राजा का कोई मित्र नहीं होता। अपनी बात कहिए।

कृष्ण : युधिष्ठिर को क्या कह दिया ?

दुर्योधन : ओह ! तो आप उस काम के लिए आए हैं ! देखिए, मेरी नीति स्पष्ट है, हर आदमी को अपना काम करना चाहिए। मैं राजा हूँ, अपना काम कर रहा हूँ। बाकी जो प्रजा हैं, उन्हें प्रजा की तरह करना होगा।

कृष्ण : पांडव तुम्हारे भाई हैं।

दुर्योधन : राजा का कोई भाई-बहन नहीं होता।

कृष्ण : वे बनवास पूरा कर लौटे हैं। अब तुम्हें अपने वचन को पूरा करना चाहिए।

दुर्योधन : कल का दिया हुआ वचन मेरे लिए निरर्थक है।

कृष्ण : पांडव आधे राज्य के हकदार हैं।

दुर्योधन : यह किसने कहा ?

कृष्ण : तुमने कहा था।

दुर्योधन : तो आज कह रहा हूँ, पांडवों को राज्य करने का कोई अधिकार नहीं, क्योंकि उन्हें कोई अनुभव नहीं।

कृष्ण : यह अधर्म है।

दुर्योधन : धर्म-अधर्म से मेरा कोई लेना-देना नहीं। मैं राजा था, राजा हूँ, राजा रहूँगा। जो मैं चाहूँगा, वही होगा धर्म।

कृष्ण : अच्छा, आधा राज्य न सही, चौथाई ही दे दो।

दुर्योधन : बिलकुल नहीं।

कृष्ण : अच्छा चलो, पाँच गाँव ही दे दो।

दुर्योधन : कान खोलकर सुन लो कृष्ण ! मैं पांडवों को सुई की नोक बराबर भी जमीन नहीं दूँगा।

कृष्ण : इतना घमंड ?

दुर्योधन : इससे ज्यादा मेरे पास वक्त नहीं। आप जा सकते हैं।

कृष्ण : तुम चाहते हो कि युद्ध हो।

दुर्योधन : तैयार हूँ।

कृष्ण : सोच लो, युद्ध से सर्वनाश होगा।

दुर्योधन : युद्ध से मेरा लाभ होगा। चाहता हूँ, युद्ध हो।

कृष्ण : तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया !

दुर्योधन : मर्यादा में रहो कृष्ण ! जानते हो, किस के सामने खड़े हो ?

कृष्ण : ओह, इतना घमंड !

दुर्योधन : यह सचाई है।

कृष्ण : यह घमंड है।

दुर्योधन : तो यही सही।

कृष्ण : समझते नहीं, इसका फल क्या होगा ?

दुर्योधन : मा फलेषु कदाचन। हम बिना किसी फल की इच्छा के कर्म करते हैं। तुम अपनी ही बात भूल गए ? बोलो, क्या कहा था गीता में ?

कृष्ण : तुम्हें प्रसंग नहीं याद है।

दुर्योधन : समय नष्ट मत कीजिए।

कृष्ण : समय तुम नष्ट कर रहे हो।

दुर्योधन : मैं अपना काम कर रहा हूँ।

कृष्ण : तो युद्ध के अलावा और कोई उपाय नहीं ?

दुर्योधन : बिल्कुल, कतई नहीं।

कृष्ण : तो मैं जा रहा हूँ।

दुर्योधन : सुनो ! इस युद्ध में तुम्हारी सेना मेरी तरफ रहेगी।

कृष्ण : क्या ?

दुर्योधन : यह मेरी आज्ञा है, जाओ !

[युद्ध के बाजे बजने लगते हैं।]

पुरुष : इस तरह कौरव-पांडव युद्ध छिड़ गया। एक ओर दुर्योधन की सेना, दूसरी ओर पांडवों की। आप जानते ही हैं, महाभारत के युद्ध के शुरू में ही अर्जुन को मोह हो गया। कृष्ण भगवान ने अर्जुन को गीता सुनाकर उनका मोह भंग किया। इस पर महाभारत में जो गजब हुआ···

[भीम, नकुल, सहदेव उदास बैठे हैं।]

युधिष्ठिर : भीम, इस तरह खड़ा रहने का वक्त नहीं। चलो, युद्ध शुरू हो गया है। टूट पड़ो शत्रुओं पर। चलो ! बढ़ो !

भीम : आर्य ! मुझे उस स्थल पर ले चलो, जहाँ से मैं अपने शत्रुओं को देख सकूँ।

युधिष्ठिर : देखो, चारों ओर शत्रु सेना खड़ी है।

भीम : नहीं, मुझे उस स्थल पर ले चलो, जहाँ से मेरे भाई अर्जुन को कृष्ण ने दिखाया था कौरवों को।

युधिष्ठिर : समय नहीं है। युद्ध की घोषणा हो चुकी है।

भीम : हे आर्य, मैं अपने ही लोगों से युद्ध कैसे करूँ ? मुझे भी अर्जुन की तरह मोह हो गया है। मैं पसीने से तरबतर हो रहा हूँ। मेरा माथा घूम रहा हैं। मेरे हाथ काँप रहे हैं।

[हाथ से गदा गिर जाती है। भीम सिर पकड़कर बैठ जाते हैं और रोने लगते हैं।]

युधिष्ठिर : हे कृष्ण ! हमारी सहायता करो। जैसे अर्जुन का मोह भंग किया, वैसे अब भीम का भी मोह तोड़ो। दरअसल यह हमारा खानदानी रोग है महाराज !

कृष्ण : ओह ! अजुन ने यह बात नहीं बताई। क्यों भाई अर्जुन, यह तुम्हें बताना था।

अर्जुन : खानदान की बदनामी का डर था महाराज !

कृष्ण : क्यों आर्य भीम, क्या है तुम्हारा कष्ट ?

भीम : मुझसे यह युद्ध न होगा।

कृष्ण : आखिर क्यों ?

भीम : मैं यह युद्ध क्यों लड़ूँ ? इस युद्ध का फल क्या होगा ?

कृष्ण : कर्मण्येव वा अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

भीम : महाराज, मैं संस्कृत नहीं जानता।

कृष्ण : अर्जुन ! गीता की एक हिन्दी प्रति भीम को दो। यह लो। पढ़ो इसे। तुम्हारा मोह भंग हो जाएगा।

भीम : नहीं महाराज, यह गीता अर्जुन के लिए है। मेरा इससे काम नहीं चलेगा। मेरी समस्या दूसरी है। मुझे भीम गीता चाहिए।

[नाड़ी देखते हैं।]

कृष्ण : अरे, तुम्हें तो बहुत तेज बुखार है !

भीम : पेट में दर्द, सिर में दर्द, चारों ओर मुझे दर्द ही दर्द दिखाई दे रहा है। मैं यह महाभारत युद्ध नहीं लड़ सकता महाराज ! (**भागता है। सब पकड़कर लाते हैं**) मुझे तंग मत कीजिए। मैं यह युद्ध नहीं लड़ सकता। छोड़ दीजिए।

कृष्ण : क्यों ? बात क्या है ?

भीम : बस, लड़ नहीं सकता। एक बार कह दिया।

कृष्ण : पर क्यों ?

भीम : मेरा 'मूड ऑफ' हो गया।

कृष्ण : पर क्यों ? कोई कारण तो होगा ?

भीम : कारण क्यों नहीं है ? पांडवों में क्या सबसे श्रेष्ठ अर्जुन ही है ? मोह केवल उन्हें ही हो सकता है ? हम कोई ऐरे-गैरे नत्थूखैरे हैं क्या ? मुझे क्या समझते हैं ?

आखिर हम भी यहाँ लड़ने आए हैं।

कृष्ण : बिल्कुल ठीक।

भीम : फिर केवल अर्जुन को ही इतना महत्त्व क्यों दिया गया ? जाएँ अकेले लड़ें अर्जुन। मैं जा रहा हूँ अपने घर। आखिर मेरा भी तो आत्मसम्मान है।

कृष्ण : क्यों नहीं, क्यों नहीं !

भीम : अर्जुन के तो कई मोह थे, चूँकि वक्त कम है, इसलिए मैं आपसे एक ही प्रश्न पूछता हूँ—इस महाभारत से मेरा क्या फायदा होगा ?

कृष्ण : तुम विजयी होगे। अधर्मी शत्रुओं का नाश करोगे। अपने दुःख का बदला लोगे।

भीम : फर्ज कीजिए, मैं लड़ते-लड़ते मारा गया, तो मेरे बाल-बच्चों का क्या होगा ?

कृष्ण : चलो, मैं वचन देता हूँ—इस युद्ध में तुम नहीं मारे जाओगे।

भीम : देखिए तो अब बुखार कितना है ?

कृष्ण : अरे, अब तो बिल्कुल नॉर्मल है।

भीम : ठीक ! अब आइए असली सवाल पर। फर्ज कीजिए, हम युद्ध में विजयी हो गए, तो इस विजय से मुझे क्या मिलेगा ?

कृष्ण : राज मिलेगा। तुम राज्य करोगे।

भीम : मुझे बहकाने की कोशिश मत कीजिए। मैं आपकी बातों में आने वाला नहीं। राज्य मिलेगा तो राजा होंगे मेरे बड़े भाई युधिष्ठिर। मुझे क्या मिलेगा ?

कृष्ण : क्या चाहिए तुम्हें ?

भीम : यही तो पता नहीं, मुझे क्या चाहिए; पर मुझे कुछ चाहिए—यही तो है भीम-मोह।

[कृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर मंत्रणा करते हैं।]

भीम : (स्वगत) सुनो कृष्ण ! मैं तुम्हारी यह बात हरगिज नहीं मान सकता कि अपने सारे धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ। मैं क्यों छोड़ूँ अपना धर्म ? यह सही है कि मैं सबसे ज्यादा खाता हूँ, सबसे ज्यादा सोता हूँ; पर सबसे ज्यादा गुस्सा भी तो मुझी में है। जब कभी कहीं मुश्किल लड़ाई होती है तो मुझे ही सबसे आगे कर दिया जाता है—पर अब यह नहीं चलेगा। कर्म करो, फल की इच्छा न करो, मैं नहीं मानता यह बेसिर-पैर की बात। पहले बताओ, वचनबद्ध हो कि मुझे क्या मिलेगा, तभी मैं लड़ूँगा। 'आई वांट रिज़ल्ट हिअर एण्ड नाऊ।'

कृष्ण : (आते हैं) सुनो !

भीम : क्या है ?

कृष्ण : मगध के राज्यपाल बना दिए जाओगे।

भीम : नहीं, मुझे महाराज्यपाल बनने का वचन दो, तभी करूँगा मैं युद्ध, वरना जा रहा हूँ।

[जाने लगता है।]

कृष्ण : अरे भाई, रुको। चारों ओर शत्रुओं से घिरे हो, बचकर जाओगे कहाँ ?

[फिर वही मन्त्रणा]

भीम : जनाब, सीधी उँगली से घी नहीं निकलता। मोह होना बहुत ज़रूरी है। तभी मिलता है महत्त्व। और मोह भी ठीक वक्त पर होना चाहिए। हमारा यह जो खानदानी रोग है, इसके बहुत फायदे हैं। देखिए न इसका फल।

कृष्ण : (आकर) ठीक है, मगध के राज्यपाल बना दिए जाओगे।

[भीम प्रसन्न होकर अपनी गदा उठाकर घुमाता है।]

भीम : आ जा दुर्योधन मेरे सामने ! तेरी जाँघ न तोड़ दूँ तो मेरा नाम भीम नहीं। अब देख, मेरा मोह भंग हो गया। हा हा हा !

कृष्ण : (नकुल और सहदेव के पास) तुम्हें क्या हो गया ?

युधिष्ठिर : वही खानदानी रोग।

[दुर्योधन ताल ठोककर हँसता है।]

अर्जुन : ऐ ! तुम क्या हँसते हो ? यह हमारा पारिवारिक मामला है।

युधिष्ठिर : हमारी व्यक्तिगत बातों में टाँग अड़ाते शर्म नहीं आती !

भीम : तभी तो मैं तोड़ूंगा इसकी टाँग।

नकुल : इस युद्ध से मुझे क्या फायदा होगा ? हम क्यों लड़ें यह युद्ध ? हम जाकर दुर्योधन की सेना में क्यों न मिल जाएँ ? आखिर हमारे भाई, काका, मामा, ताऊ दुर्योधन के ही साथ हैं।

कृष्ण : सुनो, यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत···ठीक है, आप लोग संस्कृत नहीं समझते, मैं हिन्दी अनुवाद में कहता हूँ—अब यहाँ युद्ध नहीं हो सकता। आपस में लेन-देन अर्थात् उखाड़-पछाड़ ही हो सकता है। इसके अलावा अब यहाँ कुछ नहीं हो सकता।

पुरुष : अरे-रे, कृष्ण को भी मोह हो गया ! सुनिए महाराज, इतना उदास मत होइए।

[सब आपस में लेन-देन, उखाड़-पछाड़ का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। अर्जुन, युधिष्ठिर और कृष्ण चिन्तित खड़े हैं।]

पुरुष : मेरा खयाल है, अब आप लोग थक गए होंगे। थोड़ी देर विश्राम कर लीजिए और हमें भी थोड़ा आराम लेने दीजिए। मतलब, अब मध्यान्तर···'इंटरवल'।

पहला : जी नहीं, हमें और देखना है।

दूसरा : हम टिकट खरीदकर आए हैं।

पुरुष : अच्छा, थोड़ा चाय-शाय पी आइए। थोड़ा गपशप।

तीसरा : भाई, इससे अच्छा गपशप क्या होगा ?

चौथा : समय मत बर्बाद कीजिए।

पुरुष : तो आपको समय की चिन्ता है ! फिर तो बाहर निकलकर देख लीजिए, समय कैसा है। मतलब, अब दस मिनट का मध्यान्तर—'इण्टरवल'।

[संगीत]

[पर्दा]

माता

पात्र

बाबा
दीदी
बहू (जया)
ननद
रामहित
जोगीवीर

[मंच पर प्रकाश आने के साथ ही कुछ स्त्रियाँ गाती हुई मंच के एक किनारे बैठी दिखती हैं।]

संगीत

हथवा में लिए तिल चाउर डलैय्या बेला पतिया हो
मोरी ई बहुआ झपटि रे चली है फुलवरिया
तो देवता मनावैं रे
रहिया में खड़ी ननदिया तो बोले इक बोली रे
सुनो मोरी भौजी
मोरी ए भौजी कितना देवता मनाओ
बचउवा न होइ हैं रे
होरिलवा न होइ हैं रे।

[मंच पर यह दृश्य प्रस्तुत होता रहता है। बहू को रुलाकर ननद (दीदी) चली जाती है। रोती हुई बहू पूजा कर घर लौटती है। देहरी से बाबा आते दिखते हैं। जोगीवीर बाजा बजाते हुए कुछ बड़बड़ाते हैं। जया हाथ जोड़े खड़ी है।]

जोगी : वाच्चा तू बहुत दुखी है।
जया : हाँ, महाराज।
जोगी : बेटा, तू हर वक्त एक ही गम में डूबी रहती है।
जया : धन्य है। आप को सब पता है।
जोगी : चार साल हो गए। तेरा करम फूटा है, गोद खाली है। यह कैसी कुदरत की गाली है।
जया : आप त्रिकालदर्शी हैं।
जोगी : बम बम दकम दकम
बचवा कित्ता लगा सकती है रकम
जित्ता रकम उत्ता भोलेनाथ की रहम
बम बम दकम दकम
वाच्चा छोड़ दे आपना गम
बम बम दकम दकम।

[एक किनारे रामहित और बाबा दिखते हैं।]

जया : दोहाई जोगीवीर की। कोई जानै नहीं। कोई सुनै नहीं। मुझ संतान हो जाय। मैं भी माँ कहलाऊँ। माँ हो जाऊँ। जो भी पूजा-पाठ, दान-पुन्य कहो जोगीवीर, करूँगी, जरूर करूँगी।

जोगी : बम बम दकम दकम।

जया : अपना गहना गुरिया बेच कर दान-पुन्य करूँगी।

बाबा : क्या बात है बेटी? रो रही है।

[बहू बाबा के चरण भूमि-स्पर्श से करती है। और फफककर रो उठती है।]

बाबा : सौभाग्यवती रहो।···अरे, क्या बात है। क्या हुआ?

[बहू बिना कुछ बोले भीतर चली जाती है।]

बाबा : पता नहीं क्या बात है, (**कुर्त्ता उतारकर रखते हुए**) क्या बात हो सकती है। इतनी सीधी सादी है कि···।

[भीतर से लोटे में जल और तौलिया लिए जया आती है। बाबा हाथ-पैर धुलते हैं।]

बाबा : (**हाथ पोंछते हुए**) रामहित कहाँ है?

जया : अभी नहीं आए।

बाबा : अरे दो बजे उसकी ड्यूटी खत्म हो जाती है। अब तो चार बज रहे हैं।

जया : बाबा भोजन यहीं ले आऊँ या चौके में···।

बाबा : सिर्फ चाय पीऊँगा। जब तक मेरी जया बेटी बतावेगी नहीं कि उसे क्या तकलीफ है। वह क्यों रो रही थी—मैं तब तक भोजन नहीं करूँगा। लेकिन यह रामहित अब तक क्यों नहीं आया। देखता हूँ···।

[कुर्ता पहनने लगते हैं।]

जया : बाबा जी, चाय तो पी लीजिए।

बाबा : साथ ही चाय पीएँगे।

[बाबा जाते हैं। जया बाबा के झोले में से उनकी धोती तौलिया आदि सामान निकालकर रखती है। तभी पृष्ठभूमि से बाजा बजाता हुआ कोई आता दिखता है।]

जया : हाय जोगीवीर।

[जोगीवीर आते हैं।]

जोगीवीर : बम भोलेनाथ की। जै हो जोगीवीर। बाच्चा खिला जोगीवीर को खीर। वही हरेंगे तेरी पीर। आजा आ आ, जरा देखूँ तेरा हाथ। घबड़ा नहीं कोई देख नहीं रहा। कोई सुन नहीं रहा। कोई गुन नहीं रहा।

[बाबा के साथ सहसा रामहित तेजी से प्रकट होते हैं।]

बाबा : बस-बस, बन्द कर बकवास ।

जोगी : सावधान, कर दूंगा सत्यानास ।

बाबा : दफा हो जाओ । भोलीभाली औरतों को ठगने और लूटने वाले ।

रामहित : जाओ भाई जाओ ।

जोगी : किसी से नहीं डरता । ऐसा मंत्र मारूँ कि अन्दर से बंदर हो जाए । ऐसा जंत्र मारूँ कि कलंदर भी छछूंदर हो जाए ।

बाबा : अच्छा, तो हो जाए । चलाओ अपना जंत्र-मंत्र । देखें तू कहाँ का है जोगीवीर ।

जोगी : पछताओगे ।

बाबा : घबड़ाओ नहीं ।

[रामहित जोगी को समझाता है ।]

रामहित : चला जा । किसके मुँह लग रहा है । बड़े तपस्वी सत्यनिष्ठ पुरुष हैं ।

[जोगी नमस्कार करके भागता है । बाबा हँसते हैं ।]

बाबा : जा बेटी, अब चाय ला ।

[जया जाती है ।]

बाबा : तो यह मामला है । क्यों रामहित इस मामले में बहू से कभी तुम्हारी कोई बात हुई ।

रामहित : नहीं, कभी नहीं ।

बाबा : बहू तुमसे अपना दुःख-सुख नहीं कहती ।

रामहित : बड़ी लजाधुर है ।

बाबा : तुम भी तो कुछ कम नहीं हो । देखो, बहू किस कदर संतान के लिए दुखी और चिन्तित है । ऐसी हालत में उसे कोई ठग सकता है । विश्वासघात कर सकता है । अरे तू कैसा मरद है कि अपनी पत्नी का दुःख-सुख न जाने । कैसा पति है कि तू पत्नी का विश्वासपात्र नहीं है ।

रामहित : बात यह है कि मुझसे बहुत लजाती है ।

बाबा : और तुम उससे भी ज्यादा लजाते हो ।

रामहित : नहीं बाबा, बहू इतनी सीधी है कि कुछ कहती ही नहीं । बस, हर बात में यही कहती है—जैसी तुम्हारी खुशी···जैसा तुम चाहो ।

बाबा : इसका मतलब यह हुआ कि पत्नी निश्चेष्ट हो गयी । स्त्री निष्क्रिय पात्र रह गयी । वह अपने भीतर की बात अपने पति से भी नहीं कह पाती । (स्वगत) शरीर से निश्चेष्ट होने पर धीरे-धीरे पुरुष की स्वार्थपरता और बर्बरता को देख स्त्री अब अपनी आत्मा को धीरे-धीरे निश्चेष्ट और विलग करती जा रही है ।

रामहित : नहीं बाबा, ऐसा नहीं है । (जया चाय लेकर आती है) फिर बताऊँगा ।

बाबा : नहीं, तुम्हें अभी बताना पड़ेगा । बहू, तू भी बैठ । बैठ ना ।

जया : मैं आपके सामने भला कैसे बैठ सकती हूँ ।

बाबा : अच्छा खड़ी रह ।

जया : चूल्हे पर चावल चढ़ा आयी हूँ, जल जाएगा।

[भीतर भागती है।]

रामहित : देखो न, लाज के मारे कैसे भागी है।

[चाय पीते हैं।]

बाबा : हाँ कहो, क्या बता रहे थे।

रामहित : बात यह है कि···ऐसा है कि···बाबा आपसे कैसे बताऊँ।

बाबा : अगर मुझसे तुम लोगों का इतना ही संकोच है तो अब मैं यहाँ नहीं टिकूंगा। महीने-दो-महीने, कभी-कभी आठ दस महीनों बाद यहाँ आता हूँ। दो-एक दिन यहाँ रहता हूँ। तुम दोनों को अपना बेटा-बेटी मानता हूँ। पर अगर तुम दोनों के सुख-दुःख का भागीदार नहीं हो सकता, किसी काम नहीं आ सकता तो व्यर्थ है मेरा यहाँ आना और रहना।

रामहित : नहीं-नहीं बाबा जी, ऐसा न कहिए। कभी स्वप्न में भी ऐसा न सोचिए। यह हमारा कितना सौभाग्य है कि आप जैसे महात्मा हमारे घर पधारते हैं। बाबा जी, मैं आपको सब सही-सही बताता हूँ। बात यह है कि···

बाबा : फिर वही बात 'ई है की'। कोई गड़बड़ी तो नहीं है? कोई कमजोरी-वमजोरी।

रामहित : नहीं-नहीं बिल्कुल नहीं। आप ही ने तो हमारी शादी करायी।

बाबा : हाँ-हाँ, वह तो कराता ही रहता हूँ।

रामहित : आप ही ने तब मुझसे कहा था बाबा, हाँ आपने कहा था कि···कहा था।

बाबा : अरे कुछ कहेगा भी।

रामहित : बता दूं? बता दूं।···मुझे लाज लगती है।

बाबा : अच्छा, तो मैं चला।

[रामहित बाबा को रोक लेता है।]

रामहित : तो बता दूं। आप बुरा तो नहीं मानेंगे।

बाबा : इसमें ऐसी क्या बात है।

रामहित : बाबा बात ई है कि···आपने एक बार कहा था। कहा था कि शादी के बाद कम-से-कम तीन बरस तक बच्चा नहीं होना चाहिए।

[बाबा मुस्करा पड़ते हैं। रामहित लजाकर एक किनारे जाता है।]

बाबा : अरे रामहित, तू किधर गया? (**रामहित से**) रामहित, अब तो वह तीन साल बीत गया न।

रामहित : जी अब कोई चिन्ता की बात नहीं।

बाबा : अच्छा सुनो, मुझे आज ही रात की गाड़ी से कोटा जाना है।

रामहित : क्यों? मैंने तो आपको सब कुछ सच-सच बता दिया। अब भी नाराज हैं क्या बाबा।

बाबा : कोटा के पास एक गाँव में बच्चों की एक पाठशाला बनायी है। उसमें पढ़ाई

का काम शुरू कराना है।

रामहित : (पुकारता है) अरे सुनती हो। सुनो तो।

[जया आती है।]

बाबा : बेटी, मुझे अभी आठ चालीस की गाड़ी पकड़नी है। चार रोटी, जरा-सी सब्जी, और हाँ देखना, हरी चटनी न भूलना—डिब्बे में रख कर दे दो।···अरे, फिर रोने लगी। इधर आ। आ इधर। तू सौभाग्यवती है। पुत्रवती होगी।

[जया बाबा के चरणों में। बाबा उसे आशीष देते उठाते हैं। प्रकाश बुझकर फिर उन्हीं स्त्रियों पर संगीत उठता है।]

अरे फुलवरिया के देवता
अपन मुँह बोलेइरे
मोरी ऐ बहुआ
सुनो मोरी बिटिया
अब मति अइयो फुलवरिया
तू गरुए गरभवती रे।
होत बिहान सुरुज सुर उपजा
अरे अरी मोरी सखिया
गर्भ में आए नन्दलाल
बहू मैं निहाल मोरी सखिया
तिरिया के जन में कवन फल ओ-ओ मोरे साहेब
जब पुतवा जनम लेई रे।
पुतवा के जनमैं कवन फल ओ मोरी साहेब
पुतवा सपूत जब होई रे।

संगीत

बाजन लागी आनंद बधइया
गावहिं सखी सोहर रे।

[बहू और ननद का नृत्य। संगीत फिर बदलता है। उधर मंच पर अभिनय होता है।]

आँगन में ठाढ़ी ननदिया पो अड़यि तड़यि बोलै ना।
कोखिया में आइल होरिलवा
तो कंगना बँधैइया हम लेवै ना।
कितना लड़ै तू ननदिया कंगन ताही देवै रे।
समझो देहुलिया पर की बात
करजेवा मोर सालै रे।

[संगीत समापन के साथ मंच पर अकेली जया चौक पूर रही है। सुबह का समय है। बाहर से रामहित साग-सब्जी लेकर आता है।]

रामहित : अरे ! क्या बात है—मुझे भी बताओ।

[जया हँसती हुई भीतर भागती है। रामहित आश्चर्यचकित खड़ा है। जया तिल-अक्षत लाकर चारों दिशाओं में फेंकती है। जितना ही रामहित पूछता है, उतना ही वह लजाती है।]

रामहित : अरे बात क्या है। अरे हँसती रहेगी या···। ओ हो, मुझसे छिपाएगी। क्या है ?

[जया मुस्कराती हुई देखती है।]

रामहित : अच्छा-अच्छा, समझ गया। समझ गया।

जया : क्या ?

रामहित : वही न।

जया : भक।···(रुककर) बाबा ने आशीर्वाद दिया···

[भागती है। बाहर से बाबा आते हैं।]

बाबा : कहाँ हो भाई।

रामहित : अरे बाबा !

[पैर छूता है। भीतर से दौड़ी हुई जया आती है। पैर छूने आ रही थी। पर लाज के मारे शरमाकर एक किनारे खड़ी है।]

बाबा : अरे, क्या बात है।

जया : बाबा का आशीर्वाद।

[बाबा बढ़कर उसका माथा-सिर छूकर आशीर्वाद देते हैं।]

जया : बाबा, आप···भगवान हैं। जो कहते हैं सच हो जाता है।

बाबा : जा, बेटी चाय ला।

[जया जाती है।]

बाबा : अब बड़े ध्यान से सुनो रामहित।

रामहित : हाँ, बाबा।

बाबा : पूजा-मात्र धर्म नहीं है। न पुजारी, पुरोहित मात्र धर्म का व्यवस्थापक है, बल्कि पूरा जीवन धर्म है। और हर मनुष्य के लिए धर्म जीवन है।

रामहित : बिल्कुल ठीक बाबा।

बाबा : इसलिए जीवन जाने के लिए जीवन संस्कार निहायत जरूरी चीज है।

[जया चली जाती है।]

बाबा : बैठ बेटी। तुझे यह पता ही है कि अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदने का ज्ञान मिल गया था।

जया : हाँ, अर्जुन ने अपनी पत्नी को उस समय चक्रव्यूह भेदने की कथा कही थी।

रामहित : आगे माँ सो गयी तो चक्रव्यूह से बाहर आने की कथा रह गई।

बाबा : हाँ जो सोया है, उसे संस्कार और ज्ञान कहाँ से मिलेगा ?—सुन बेटी, तुम्हें अपने पुत्र जन्म पूर्व किए जाने वाले संस्कार करने हैं।

जया : जरूर करूँगी।

[बाबा के संवाद के बीच में ननद आ खड़ी होगी।]

बाबा : जीवन में कुल सोलह संस्कार हैं। उनमें चार संस्कार जन्म से पहले किए जाने वाले हैं। उनमें पहला संस्कार है गर्भाधान संस्कार।

ननद : गर्भाधान संस्कार। मेरी भाभी को उलटा-सीधा समझाने आ गए। आ भाभी अन्दर।

बाबा : अरे तू भी बैठ। बैठेगी नहीं।···हाँ तो गर्भाधान संस्कार, मतलब जन्म देने का कार्य तीनों लोकों में आत्मविस्तार का कार्य है। इस भाव से जन्म देने का कार्य सबसे पवित्र काम है।

ननद : सुनो इनकी। इस भाव से जनम देना पवित्र काम है। बड़ा पवित्र है वाह !

रामहित : तू चुप रह।

बाबा : गर्भाधान के बाद पुंसवन संस्कार—यह गर्भ के तीसरे माह में। यह संस्कार हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुरुष—इनमें से किसी एक नक्षत्र में, पति या उसके वंश का कोई पुरुष सम्पन्न करता है।

जया : कैसे ?

ननद : अब लो। चली है यह भी बजार।

बाबा : दूध वाले वृक्ष की टहनी स्त्री की दाहिनी नाक में डालकर जीवपुत्र मंत्र का उच्चारण करता है और प्रजापति को एक ग्रास समर्पित कर प्रार्थना करता है कि पुत्रों से उत्पन्न दुखों से मेरी रक्षा करो।

ननद : अब सँभालो—टहनी नाक में घुसेड़ो।

रामहित : चुप रह। जा अन्दर।

बाबा : फिर आता है सीमंतोन्नयन संस्कार। इसमें पुरुष स्त्री की माँग दूब के तीन तिनकों से या फलसहित गूलर की टहनी से बीच में से विभाजित करता है—मंत्र के साथ। संगीत-वादन होता है। और पुरुष अपने इलाके में बहने वाली नदी का नाम लेता है। फिर स्त्री के सिर में जौ के नये अंकुर बाँध दिये जाते हैं। और स्त्री आकाश में तारे दिखाई देने तक मौन रहती है। फिर पुरुष स्त्री के साथ पूर्व दिशा में जाकर एक बछड़े का स्पर्श करता है, तब स्त्री मौन तोड़ती है।

[ननद हँस पड़ती है। दोनों मना करते हैं।]

बाबा : छोड़ो-छोड़ो, जिसका जैसा संस्कार होगा वैसा ही उसका व्यवहार होगा।

ननन : चलो-चलो, हमने बहुत देखे हैं।

बाबा : फिर है विष्णुबलि संस्कार—गर्भ के आठवें महीने में किया जाता है। इसमें पदम या स्वस्तिक की बेदी बनाकर चौंसठ आहुतियाँ भात की, विष्णु को दी जाती हैं।

ननद : इसका मतलब क्या है ? इनसे फायदा ?

बाबा : हाँ फायदा। फायदा नहीं तो कायदा किस काम का ? इसका फायदा यह है कि जन्म देना माने विश्व चेतना का अंग बनना है।

[ठठाकर हँसती है।]

ननद : अरे कोई काम की बात बताओ तो जानूँ।

[बाबा आगे बताने का अभिनय दृश्यवत करते रहते हैं। मंच के किनारे बैठी हुई स्त्रियों का संगीत उठता है।]

आनंद भये मोर नगरी
आज अरे मन रंजना
नंदलाल भए आज मोरे अंगना।
कितना सुन्दर श्याम
अरे मन रंजना।...

[जोगीवीर दिखता है। ननद झाड़ू उठाकर उसे मारने दौड़ती है।]